Printed by
Swami Tribhuvandas Shastri,
Shree Ramananda Printing Press,
Kankaria Road,
Ahmedabad 22.
and published by
Dalsukh Malvania
Director
L. D. Institute of Indology
Ahmedabad 9.

FIRST EDITION
June, 1975

"Published with the Financial assistance from the Government of India, Ministry of Education and Social Welfare (Department of Culture).

PRICE RUPEES 16

प्राचीन गूर्जर काव्य सञ्चय

संपादक

डॉ. ह. चू. भायाणी

श्री अगरचन्द नाहटा



प्रकाशक

लालभाई दलपतभाई भारतीय संस्कृति विद्यामंदिर अमदावाद - ९

प्रधान संपादकीय

डॉ. हरिवल्लभ भायाणी और श्री अगरचंद नाहटा द्वारा संपादित 'प्राचीन गूर्जर काव्य संचय' काव्यरसिकों और भाषाशास्त्रिओं के अध्ययनार्थ प्रकाशित किया जाता है। गुजरात और राजस्थान के जैन भंडारों में जो साहित्य सुरक्षित हुआ है उसमें संस्कृत–प्राकृत–अपभ्रंश भाषा के ग्रन्थों को ही स्थान मिला है ऐसा नहीं है किन्तु उनमें आधुनिक गुजराती और राजस्थानी भाषा के पूर्वज साहित्य का भी समावेश है। यह हमारा सौभाग्य है कि आधुनिक भाषा के विकास को स्पष्ट करने के लिए १४ वीं शती से ले कर १९ वीं शती तक लिखे गये ग्रन्थों की उपलब्धि हमें होती है।

प्रस्तुत संग्रह में प्रायः १३ वीं शती के विविध प्रकारों की कृतिओं का संग्रह किया गया है। काव्य की दृष्टि से सभी महत्त्व के न भी हों तब भी भाषाशास्त्र के अध्येताओं के लिए तो यह संचय महत्वपूर्ण सिद्ध होगा–इसमें तो संदेह नहीं है। इस संचय में कृतिओं की प्राचीन प्रतों का उपयोग किया गया है। अतएव भाषारूपों के अध्येताओं के लिए एक प्रामाणिक संचय ग्रन्थ का काम यह ग्रन्थ देगा। दोनों सम्पादकों ने इसके संचय और सम्पादन में जो परिश्रम किया है उसके लिए हम उनके आभारी हैं।

ला. द. भा. सं. विद्यामंदिर
अहमदाबाद–९
१, जुलाई १९७५

दलसुख मालवणिया
अध्यक्ष

विषयानुक्रम

विषय	पृष्ठांक

प्रस्तावना

जैन धर्म जनता का धर्म है। तीर्थंकरों ने अपना उपदेश तत्कालीन लोकभाषा में दिया जिससे अधिकाधिक लोग समझ सके और जीवन में उतार कर लाभ उठा सकें। चरम तीर्थंकर भगवान महावीर का धर्मप्रचारकार्य मगध देश के आसपास अधिक रहा, इसलिए उनकी भाषा को अर्द्धमागधी भाषा की संज्ञा दी गई है। अर्थात् उस भाषा में मगध देश की बोली की प्रधानता तो थी ही पर आसपास की अन्य बोलियों का भी समावेश था इसीलिए उसे अर्द्धमागधी कहा गया है। वर्तमान प्राचीन जैनागमों की भाषा यही मानी जाती है। यद्यपि वे आगम लगभग एक हजार वर्ष तक कण्ठाग्र रहे, इसलिए परवर्त्ती प्रभाव भी उनमें दिखाई देता है। पाश्चात्य विद्वानों ने एकादश अंगसूत्रों में से आयरंग, सूयगडंग की भाषा को सर्वाधिक प्राचीन माना है। यद्यपि ये ग्यारह अंगसूत्र एक ही समय तैयार हुए थे पर अन्य आगमो में भाषा का परिवर्तन आयरंग की अपेक्षा अधिक होगा।

क्षेत्र और काल का प्रभाव बोलियों पर पड़ता ही रहता है, इसलिए प्राकृत भाषा के भी अनेक क्षेत्रीय रूप सामने आये और आगे चलकर महाराष्ट्री और शौरसेनी प्राकृत में जैन ग्रंथ अधिक लिखे गये। महाराष्ट्री प्राकृत में श्वेताम्बर ग्रंथ और शौरसेनी प्राकृत में दिगम्बर ग्रंथ अधिक पाये जाते हैं। पांचवीं, छट्ठी शताब्दी में बोलचाल की भाषा में अधिक परिवर्तन आया अतः तब से अपभ्रंश में भी साहित्य लिखा जाने लगा। दिगम्बर महाकाव्यादि आठवीं, नौवीं शती से सं १७०० तक अपभ्रंश में काफी लिखे गये। श्वेताम्बर समाज में अपभ्रंश साहित्य दिगम्बरों के बाद लिखा गया और अंतिम अवधि भी काफी पहले समाप्त हो गई। उपलब्ध स्वतंत्र श्वेताम्बर रचनाएं ग्यारहवीं शती तक की ही प्रायः मिलती हैं।

अपभ्रंश भाषा से भारत की प्रान्तीय बोलियों का विकास हुआ उनमें से राजस्थान और गुजरात में समान रूप से जो भाषा विकसित हुई उसे प्राचीन राजस्थानी या जूनी गूजराती कहा जाता है। कई विद्वानों ने उसे मरु-गूर्जर भाषा की संज्ञा दी है। ग्यारहवीं शती से अपभ्रंश के साथ साथ इस मरु-गूर्जर भाषा का भी साहित्य फुटकर दोहादि के रूप में मिलने लगता है। स्वतंत्र उल्लेखनीय रचना के रूप में तेरहवीं शती से ही साहित्य उपलब्ध हैं। उस समय की हिन्दी भाषा भी मरुगूर्जर के समकक्ष ही थी। आगे चलकर क्षेत्रीय बोलियों का अन्तर बढ़ने लगा पर हिन्दी का प्राचीन साहित्य सुरक्षित नहीं रहा जबकि राजस्थान और गूजरात में वहां की भाषा का साहित्य पर्याप्त सुरक्षित रह गया। पन्द्रहवीं शताब्दी से इन दोनों प्रान्तों की भाषाओं में भी कुछ मौलिक अंतर पाया जाता है। सोलहवीं में वह अन्तर अधिक स्पष्ट होने से मारवाड़ी और गुजराती का साहित्य भिन्न भिन्न पहिचाना जाता है। प्रस्तुत ग्रंथ में जब तक यह अन्तर स्पष्ट नहीं हुआ तब तक की विविध शैलियों की रचनाओं संग्रह किया गया है।

लगभग ४३ वर्ष पूर्व बीकानेर के खरतरगच्छीय ज्ञानभंडारों की हस्तलिखित प्रतियों की सूची का काम हमने प्रारंभ किया। तब हमें चौदहवीं–पन्द्रहवीं शताब्दी की कई हस्तलिखित प्रतियां देखने को मिली जिनमें प्राकृत–अपभ्रंशके साथ साथ प्राचीन राजस्थानी की भी रचनाएं लिखी हुई थीं। हमने उनमें से ऐतिहासिक रचनाओं का एक संग्रह तैयार करके 'ऐतिहासिक जैन काव्य संग्रह' नामक ग्रंथ का सम्पादन किया, जिसमें बारहवीं शताब्दी से उन्नीसवीं शताब्दी तक के छोटे-मोटे ऐतिहासिक काव्य, गीत आदि संगृहीत किये गये थे। अनैतिहासिक रचनाओं का संग्रह भी हम करते गये। नयी नयी महत्त्वपूर्ण कृतियां यत्र तत्र मिलने लगी। हमारे संग्रह में एक संवत् १४९३ की लिखी हुई स्वाध्यायपुस्तिका प्राप्त हो गई और बीकानेर के बडे ज्ञानभंडार में भी सं १४३० के आस-पास की तीन महत्त्वपूर्ण संग्रहप्रतियाँ मिली। फिर सं. १९९९ में जेसलमेर के ज्ञानभण्डारों का निरीक्षण करने गये तो वहां सं. १३८४ और १४३७ की संग्रह-प्रतियाँ मिली जिनमें से सं. १४३७ वाली प्रति को हम बीकानेर आते साथ ले आये और उनमें से महत्त्व की रचनाओं की नकल भी कर ली। बीकानेर की जिनप्रभसूरि परंपरा की सं. १४२५ के लगभग की प्रति में से आबू-रास को तो 'राजस्थानी' पत्रिका में प्रकाशित किया गया और अन्य रचनाओं की नकल कर के रख ली। इस के बाद जोधपुर–अहमदाबाद–आगरा–पाटण आदि की संग्रहप्रतियों का भी उपयोग करते रहे। इस प्रकार विविध शैलियों की सैकड़ों रचनाओं की प्रतिलिपियाँ हम अपने संग्रहालय के लिए करते रहे हैं। उन्हीं में से कुछ चुनी हुई रचनाओं का संग्रह प्रस्तुत ग्रंथ में किया गया है। हमने अपनी नकलें डा. हरिवल्लभ भायाणी को भेज दी थीं। उन्होंने और कुछ हस्तप्रतियां देख कर पाठनिर्धारण और चयन का कार्य किया और इनके अलावा कुछ और प्राचीन रचनाओं का भी प्रस्तुत संग्रह के लिये सम्पादन किया। संग्रहप्रतियों की परम्परा काफी प्राचीन है और इससे छोटी छोटी रचनाओं का संरक्षण सुगमता से और अच्छी तरह हो सका है। जैन ज्ञानभण्डारों में 'विशेषावश्यक भाष्य' की दशमी शताब्दी की प्रति को छोड़ कर अन्य ताडपत्रीय प्रतियाँ बारहवीं शताब्दी से ही अधिक मिलने लगती हैं। बड़े बड़े आगमादि ग्रंथों की जो स्वतंत्र प्रतियाँ लिखी जाती थी और छोटे छोटे प्रकरणादि ग्रन्थों की संग्रह प्रतियाँ ही लिखी जाती थी जिससे एक ही प्रति से अपने उपयोगी रचनाओं का पठन-पाठन सुगमता से हो सके। जैसलमेर, सूरत, कोटा, पाटण, खंभात आदि के ज्ञानभंडारों में ऐसी कई ताड़पत्रीय संग्रह-प्रतियाँ प्राप्त हैं, जिनमें प्राकृत, संस्कृत और अपभ्रंश की छोटी छोटी रचनाओं का काफी अच्छा संग्रह है।

कागज की संग्रहप्रतियां चौदहवीं शताब्दी से सोलहवीं शताब्दी तक की अनेकों मिलती हैं। सोलहवीं से गुटकाकार प्रतियाँ भी लिखी जाने लगी। इससे पूर्व की संग्रह-प्रतियाँ प्रायः पत्राकार हैं, उनमें खुले पत्र होने से जिसे जिस रचना की आवश्यकता हुई उसको बीच के पत्र निकाल कर अलग रख लिए। इसलिए प्रायः जितनी भी संग्रहप्रतियां मिली हैं उनमें से बहुत सी प्रतियों के बीच बीच काफी पत्र अब नहीं मिलते। उन संग्रहप्रतियों की सूची भी बनायी जाती रही है उनसे यह भी मालुम हो जाता है कि प्रति के किस पत्रमें

कौनसी रचना लिखो हुई थी जो अब नहीं मिलती। उन प्रतियों के वे निकाले हुए पत्र प्रायः इतस्ततः हो गये अतः कई महत्त्वपूर्ण रचनाएं आज हमे प्राप्त नहीं हैं। ऐसी संग्रहप्रतियों को स्वाध्यायपुस्तिका नाम दिया हुआ मिलता है। जिनराजसूरि, जिनभद्रसूरि, जिनवर्धनसूरि, आदि आचार्यों एवं शिवकुंजरादि कई विद्वानों की स्वाध्यायपुस्तिकाएं हमें मिली हैं। खरतरगच्छ के सिवा अन्य गच्छों की भी ऐसी संग्रहात्मक स्वाध्यायपुस्तिकाएं हमारे देखने में आई हैं। स्वाध्यायपुस्तिकाओं में प्राचीनतम सं. १२१५ की ताड़पत्रीय प्रति जेसलमेर के ज्ञानभण्डार में है। क्रमांक १५४। ले. सं. १२१५ माघ सुदि ४ बुधे पुस्तिका लिखितमिति। छ। श्रीमत् जिनदत्तसरि सिसिण्याः संतिमति गणिन्याः स्वाध्यायपुस्तिका। श्री।

प्रस्तुत ग्रंथ में जिन रचनाओं का संग्रह किया गया है, वे अधिकांश उपर्युक्त चार-पांच संग्रहप्रतियों में ही लिखी हुई हैं। अतः कौन कौनसी और कबकी लिखी हुई प्रति से कौन कौनसी रचना दी गई है, इसका संक्षिप्त विवरण यहां दिया जा रहा है।

१. बीकानेर बड़ा उपाश्रय में खरतरगच्छीय वृहत् ज्ञानभण्डार के अन्तर्गत छोटे बडे नौ संग्रह है जिनमें से अभयसिंह ज्ञानभण्डार की पोथी नं. १६. पोथी नं. २१८ में खरतरगच्छ की आचार्य जिनप्रभसूरि परम्परा को एक प्राचीन संग्रहप्रति हैं जिसमें प्रतिक्रमण—स्तोत्रादिका संग्रह है। प्राप्त प्रति के बीच बीच के कुछ पत्र नहीं है व अंतिम पत्र प्राप्त नहीं है। यों पत्रसंख्या २५५ पुरानी दी हुई थी उसके बाद पत्रों की संख्या २३० लिखी हुई है। इस प्रति में से 'जिनप्रभसूरि परम्परा गुर्वावली' और 'जिनप्रभसूरि गीत' तथा 'जिनदेवसूरि गीत' हमने ऐतिहासिक जैन काव्य संग्रह में सं. १९९४ में प्रकाशित किये थे। उसके बाद मुनि जिनविजयजी संपादित 'विधिप्रपा' में हमारे लिखित जिनप्रभसूरि-चरित्र प्रकाशित हुआ था। उसमें भी इस प्रति की कुछ रचनाएं छपी थी। इस प्रति का साइज १५×५ इंच है। अंतिम पत्र में 'वीतरागस्तोत्र' अपूर्ण रह जाता है। इस प्रति में जिनप्रभसूरि परम्परा के आचार्यों के नाम हैं, उनमें जिनप्रभसूरि के पट्टधर जिनदेवसूरि तक के ही नाम हैं। इसकी लिपि भी पुरानी है। अतः लेखन संवत् न होने पर भी यह प्रति सं. १४२०–२५ के आसपास की होनी चाहिए।

इस प्रति में से 'आबू रास' के अतिरिक्त 'तत्त्वविचार प्रकरण' नामक गद्य रचना हमने 'राजस्थान भारती' में प्रकाशित की थी तथा 'मदनरेहा रास', 'रस—विलास', 'सुभद्रा चतुष्पदिका', 'अम्बिकादेवी पूर्वभव चरित्र' हमने 'हिन्दी अनुशीलन' आदि पत्रिकाओं में प्रकाशित किए। मुनि जिनविजयजी को प्रति भेजी तो उन्होने "भारतीय विद्या" में 'जीवदया रास' प्रकाशित किया। इस प्रकार समय समय पर इस प्रति की महत्त्वपूर्ण रचनाएँ प्रकाशित की जाती रही हैं। प्रस्तुत ग्रंथ में निम्नोक्त रचनाएं इसी प्रति से ली गई हैं।

१. 'जीवदया-रास'
२. 'आबू-रास'
३. 'नवकार-रास'
४. 'नेमिनाथ-बारहमासा'
५. 'अंबिका-देवी-पूर्व-भव-तलहरा'
६. 'प्रकीर्ण दोहा'

२. दूसरी संग्रहप्रति, जिसकी रचनाएं इस ग्रंथ में दी गई हैं, वह जेसलमेर बड़ा उपाश्रय के पंचायती भण्डार की प्रति है। यह जिनराजसूरि स्वाध्यायपुस्तिका सं. १४३७

की लिखी हुई है। छोटे साइजके ४४० पत्रों में दशवैकालिक, पक्खीसूत्त आदि आगम और प्रकरण एवं स्तोत्रादि के साथ अनेकों प्राचीन राजस्थानी विविध प्रकार की रचनाएं हैं। इस प्रति के भी बीच बीच के कई पत्र प्राप्त नहीं हैं। प्रस्तुत ग्रंथ में निम्नोक्त रचनाएं इसी प्रति को दी गई हैं।

१. 'भरतेश्वर-बाहुबलि घोर'
२. 'चंदनबाला-रास'
३. 'जम्बूस्वामि सत्क वस्तु'
४. 'शालिभद्र-रास'
५. 'स्थूलिभद्र-रास'
६. 'धर्म-चच्चरी'
७. 'चच्चरी'
८. 'नेमिनाथ-बोली'
९. 'स्थूलिभद्र-मुनि वर्णना-बोली'
१०. 'शांतिनाथ-बोलिका'
११. 'वासुपूज्य बोलिका'
१२. 'सर्व-जिन-कलश'
१३. 'युगादि-देव-कलश'
१४. 'वीर-जिन-कलश'
१५. महावीर-जन्माभिषेक'
१६. 'कृपण-गृहणी-संवाद'
१७. 'महावीर-रास'

इस प्रति की लेखनप्रशस्ति इस प्रकार हैं:—

संवत् १४३७ वैशाख सुदि २ द्वितीया-दिने सुगुरुश्रीजिनराजसूरि-सदुपदेशेन व्य० देहा पुत्र्या देवगुर्वाज्ञा चिन्तामणि-विभूषित-मस्तकया मांकू-श्राविकया आत्म-पुण्यार्थं श्रीस्वाध्याय-पुस्तिका लेखिता ॥ वाच्यमाना आचंद्रार्क्कं नंदतु । छ।

इस प्रति में और भी बहुत सी ऐसी रचनाएं हैं जो हमारे नकल की हुई होने पर भी इस ग्रंथ में नहीं दी जा सकी। इस प्रति की कुछ रचनाएं सं. १४९३ वाली प्रति में भी है।

३. तीसरी संग्रहप्रति शिवकुंजर-स्वाध्यायपुस्तिका में से प्रस्तुत ग्रंथ में निम्नोक्त रचनाएँ दी गई हैं।

१ 'शील-सन्धि'
२. 'शांतिनाथ-देव-रास'
३. 'महावीर—रास'
४. दिघम-शबरी-भास'

इस प्रति की लेखनप्रशस्ति नीचे दी जा रही है। मध्यम साइज़ के ५२१ पत्रों की इस प्रति के भी बीच बीच के बहुत से पत्र अप्राप्य है। इस प्रति की बहुत सी ऐतिहासिक रचनाएँ हमने 'ऐतिहासिक जैन काव्य संग्रह' में प्रकाशित की थी जिनकी नामावली उक्त ग्रंथ के प्रतिपरिचय में दी गई है। इस प्रति में 'नगरकोट-तीर्थ-वीनति' आदि कुछ रचनाएँ हम पत्रपत्रिकाओं में प्रकाशित कर चुके हैं। लेखनप्रशस्तिः—॥६०॥ संवत् १४९३ वर्षे वैशाखमासे प्रथमपक्षे ८ दिने सोमे श्रीवृहत्खरतरगच्छे श्रीजिनभद्रसूरिगुरो विजयमाने श्रीकीर्त्ति-रत्नसूरिशिष्येन शिवकुंजरमुनिना निजपुण्यार्थं स्वाध्यायपुस्तिका लिखिता चिरं नंदतु ॥ श्री योगिनीपुरे ॥ श्री ॥

४. इस ग्रन्थ में प्रकाशित 'गौतमस्वामी-रास' सं. १४३० की लिखी हुई बीकानेर बड़े ज्ञानभंडारस्थ महिमाभक्ति-भण्डार की प्रति से लिया गया है। यह प्रति ६×२½

इंच की है। इसकी पत्रसंख्या ४३२ है। बीच में ताड़पत्रीय शैली का छेद किया हुआ है। इस में खरतरगच्छीय स्तोत्रों का संग्रह बहुत ही अच्छा है। इनमें से कई तो तत्कालीन विनयप्रभ उपाध्याय, तरुणप्रभसूरि आदि की रचनाएं हैं। इसमें से 'उखाणा गर्भित स्तोत्र' हमने पहले प्रकाशित किया था। इसमें लिखी हुई रचनाओं की सूची अलग ४ पत्रों में दी है। 'गौतम रास' सं. १४१२ में रचा गया है और इस प्रति में सं. १४३० में लिखा गया है। अतः यह इस रास की सबसे प्राचीन प्रति है। यों 'गौतम रास' बहुत प्रसिद्ध रचना है। और उसकी सैकड़ों प्रतियां हमारे संग्रह में और अन्य ज्ञानभण्डारों में प्राप्त हैं पर लोक-प्रसिद्ध रचना होने से इसकी भाषा में परिवर्तन आ गया है और रचयिता के सम्बन्ध में भी कई भ्रान्तियाँ प्रचलित हो गई है। हमने उपर्युक्त प्राचीन प्रति का पाठ 'परिषद पत्रिका' में कई वर्ष पूर्व प्रकाशित किया था। इस प्रति के ४०८ पत्र तो एक ही व्यक्ति के लिखे हुए हैं और पत्राङ्क १९६ से २०६ तक में 'गोतम रास' लिखा हुआ है। पत्राङ्क २८२ पे लेखनसंवत् तरुणप्रभसूरि के 'वीस-विहरमान-स्तव' के बाद इस प्रकार लिखा है —

सं. १४३० वर्षे कार्त्तिक सुदि प्रतिपदायां। देवस्तवनपुस्तकं।

इस प्रति के सभी पत्र सुरक्षित हैं और एक सुन्दर कपलिका में वेष्ठित है।

५–७. प्रस्तुत ग्रन्थ में प्रकाशित 'नमयासुन्दरी-सन्धि' और 'दंगडु' पाटण ज्ञानभण्डार की प्रतियां (सूची पृ. १८८ और पृ. २५) से नकल किए गए थे।' 'केसी-गोतम-सन्धि' की तो बहुत सी प्रतियाँ प्राप्त हैं। इसी प्रकार 'स्थूलिभद्रफागु' की भी कई प्रतियां मिलती है।

उस ग्रन्थ के सम्पादित पाठ में जिन प्रतियोंका उपयोग किया गया है उनका उल्लेख पृष्ठ ९३ में दे दिया है। विनयचन्द्रसूरि कृत 'नेमिनाथ-चतुष्पदिका' का पाठ डा० भायाणीजी ने फार्बस गुजराती सभा-बम्बई से प्रकाशित 'त्रण प्रचीन गुर्जर काव्यों' से लिया है।

८. इस ग्रन्थ के अन्त में प्रकाशित 'नवकार-फल-स्तवन' भी बहुत प्रसिद्ध रचना है। इसकी सं. १६६७ की लिखित प्रति हमारे संग्रह में है, जिसका यहाँ उपयोग किया गया है। यों 'गौतम-रास' की भाँति यह स्तवन हमारे 'अभयरत्नसार' आदि ग्रन्थों में पहले भी प्रकाशित हैं।

९. अन्य रचनाओं में देपाल कवि का 'कयवन्ना वीवाहलउ' और नेमिनाथ धवल, आर्द्रकुमार धवल' एक ही संग्रहप्रति में से ली गई है पर उस प्रतिका विवरण प्रति बाहर से मंगवायी गई थी अतः देना संम्भव नहीं रहा।

१०. जेसलमेर भण्डार की कुछ फुटकर प्रतियों से भी हमने नकलें की थीं। इनमें से एक प्रति में 'गजसुकमाल-रास' मिला था जिसमें बीच बीच का पाठ कुछ त्रुटित था। उसे हमने 'राजस्थान भारती' में प्रकाशित कर दिया था। जेसलमेर भंडार की एक प्रति में 'शांतिनाथ-रास' अपूर्ण मिला था वह भी इस ग्रन्थ में प्रकाशित किया गया है।

११. पन्द्रहवीं शताब्दी में लिखित एक संग्रहप्रति के कुछ पत्र हमारे संग्रह में हैं जिसमें 'नेमिनाथ-रास' लिखा हुआ है।

१२ जेसलमेर भण्डार में भी एक संग्रहप्रति के फुटकर पत्र मिले थे जिसमें 'जिनकुशलसूरि-रेलुआ' आदि रचनाओं के साथ 'जिनचन्द्रसूरि-फागु' नामक रचना मिली जिसके बीच के पत्र

नहीं मिलने से काफी भाग त्रुटक रह गया। फागुसंज्ञक रचनाओं में यह सबसे प्राचीन होने के कारण इसे डा० भोगीलाल सांडेसरा ने भी 'प्राचीन फागु संग्रह' में प्रकाशित कर दिया। पर अब न तो वे फुटकर पत्र ही जेसलमेर भण्डार में रहे हैं और इन न रचनाओं की कोई दूसरी प्रति ही मिली है।

सं. १९९९ में हम जैसलमेर के ज्ञानभण्डारों का निरीक्षण करने गये थे उस समय जिस फुटकर सामग्री का उपयोग किया, देखा वह सामग्री फिर कहाँ चली गई, कोई पता ही नहीं लगा। जेसलमेर भण्डार में हमने ताड़पत्रों के बहुत प्राचीन त्रुटित पत्र देखे थे वे दूसरी बार जाने पर नहीं मिले। पुरानी सूचियों की सैकड़ों प्रतियाँ समय समय पर गायब होती रही है। मुनि पुण्यविजय जी सम्पादित और अभी अभी प्रकाशित 'जेसलमेर भंडार सूची' के परिशिष्ट में वि. १८०९ की सूची छपी है, वह हमारे संग्रह की ही प्रति से छपी है। इसमें ऐसे अनेक ग्रन्थों के नाम है जो आज उपलब्ध नही हैं। 'गुर्वावली' नामक एक रचना ३२६ पत्रों की उस सूची में उल्लिखित है। इतनी बड़ी गुर्वावली आज तक कोई भी और कहीं भी जानने में नहीं आई है। जेसलमेर ज्ञानभण्डार की बहुत सी प्रतियां नष्ट हो गई और बहुत सी चली गई यह लिखते हुए बहुत ही हार्दिक कष्ट होता है।

प्रस्तुत ग्रन्थ में कुछ रचनाएं ऐतिहासिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण हैं। शान्तिनाथ के दोनो रासां में खेड़ के शान्ति जिनालय का महत्वपूर्ण विवरण है। इसी प्रकार 'महावीर-रास' में भी भीमपल्ली के महावीर जिनालय का महत्वपूर्ण विवरण है। आसिग कवि ने भी 'जीवदया-रास' में पर्याप्त महत्त्व की सूचनाएं दी हैं। 'आबू रास' तो पूर्णतया ऐतिहासिक है ही। अतः संग्रहीत रचनाएं केवल साहित्यिक दृष्टि से ही नहीं पर ऐतिहासिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण हैं।

खेड़, जालोर और भीमपल्ली के खरतरगच्छीय जिनालयों की प्रतिष्ठा आदि के ऐतिहासिक उल्लेख 'युगप्रधानाचार्य गुर्वावली' में भी पाये जाते हैं। इस गुर्वावली की एक मात्र प्रति बीकानेर के क्षमाकल्याणजी के भंडार में हमें प्राप्त हुई थी जिसे मुनि जिनविजयजी द्वारा सम्पादित करवाके उसे मूलरूप में और जिनदत्तसूरि सेवा संघ से हमने इसका हिन्दी अनुवाद प्रकाशित करवा दिया है। सं. १२५८ में खेड़नगर के शांतिनाथ की प्रतिष्ठा का उल्लेख उक्त मूल गुर्वावली के पृ. ४४ में और जालोर के सं. १३१७ के प्रतिष्ठा उल्लेख पृ. ५१ में द्रष्टव्य है।

प्रस्तुत ग्रन्थ में जो रचनाएं प्रकाशित हुई हैं, उनसे प्राचीन रचनाप्रकारों व शैलियों का बहुत अच्छा परिचय मिलता है। इनमें से कई रचनाप्रकारों की परम्परा तो शताब्दियों तक चलती रही है। इन रचनाप्रकारों में से कुछ की परम्परा के सम्बन्ध में हमारे शोधपूर्ण लेख भी प्रकाशित हो चुके हैं। कई रचनाप्रकारों की परम्परा आगे न चल पाई। घोर, तलहरा संज्ञक रचनाएं तो और कोई मिली भी नहीं। संधि, रास, चर्चरी, फाग, चौपाई, बारामासा, भास, विवाहला, धवल, बोली, कलश, जन्माभिषेक, संवाद संज्ञक रचनाएं तो काफी पायी जाती हैं।

छन्दों की दृष्टि से भी प्रस्तुत ग्रन्थ की रचनाएं महत्त्व की हैं, इनमें कई प्रकार के छंदों का प्रयोग हुआ है। दोहा और वस्तु छंद की स्वतंत्र रचनाएं इस ग्रन्थ में है ही, पर अन्य रचनाओं में भी कई तरह के छंद और देशियों का प्रयोग हुआ है। इनमें से अधिकांश रचनाएं गेय रही हैं। जैन मन्दिरों और उत्सवों आदि में वे रचनाएं अभिनय के साथ खेली जाती थी। इसका उल्लेख कई रचनाओं के अन्त में पाया जाता है। 'युगप्रधानाचार्य गुर्वावली' में भी रास, चर्चरी आदि के खेले जाने के कई उल्लेख मिलते हैं। इस सम्बन्ध में हम अपने लेखों में काफी प्रकाश डाल चुके हैं, यहां तो केवल सूचन मात्र ही किया गया है।

प्रस्तुत ग्रंथ में प्रकाशित चालीस रचनाओं में से लगभग आधी रचनाओं में तो रच-यिता कविओं का उल्लेख नहीं है। आसिग कवि की तीन और पाल्हण की दो रचनाएं और देपाल की तीन रचनाएं हैं बाकी एक एक कवि की एक एक रचनाएं ही हैं। नीचे संक्षेप में इस ग्रन्थ में जिन जिन कवियों के नामोल्लेख वाली रचनाएं हैं, उन कवियों का परिचय दिया जाता है--

१. जिनप्रभसूरि--इस नाम वाले खरतरगच्छाचार्य तो बहुत प्रसिद्ध हैं, पर प्रस्तुत ग्रंथ में 'नमयासुन्दरी संधि' छपी है, उसके रचयिता जिनप्रभसूरि इनसे भिन्न हैं। गायकवाड़ ऑरिएण्टल सिरिज से प्रकाशित 'पत्तनस्थ प्राच्य जैन भाण्डागारीय ग्रन्थसूची' के पृष्ट १०२, १८८ से १९१ और २६१ से २७१ पृष्ट में इन जिनप्रभसूरि की रचनाओं का विवरण छपा है। उसके अनुसार ये आगमिक परम्परा के थे। वे देवभद्रसूरि के पट्टधर और शत्रुञ्जय तीर्थ के परम भक्त थे। अपभ्रंश में इन्होंने काफी रचनाएं की हैं, वे पाटण भंडार की ताड़पत्रीय प्रतियों में प्राप्त हैं। उनकी संक्षिप्त सूची इस प्रकार है--

१ 'ज्ञानप्रकाशकुलक' गा. ११४
२ 'परमसुखद्वात्रिंशिका'
३ 'नर्मदासुन्दरीसन्धि'
४ 'जिनागमवचन'
५ 'जिनमहिमा
६ 'वयरसामिचरियं' गा.६०
७ 'विचारगाथा' गा. २४
८ 'श्रावकविधि' गा. ३२
९ 'धर्माधर्मविचारकुलक' गा. १८
१० 'आत्मसंबोधकुलक' गा. ३३
११ 'सुभाषितकुलक'
१२ 'विवेककुलक' गा. ३२
१३ 'भव्यचरित' गा. ४४
१४ 'भव्यकुटुंबचरित' गा. ३७
१५ 'गौतमचरित्रकुलक' गा. २८
१६ 'चाचरिस्तुति' गा. ३६
१७ 'अनाथीसन्धि' गा. ६५
१८ 'जीवानुशास्तिसन्धि' गा. १८
१९ 'युगादिजिनचरितकुलक' गा. २७
२० 'नेमिरास'
२१ 'भावनाकुलक' गा. ११
२२ 'अन्तरंगरास' गा. ११
२३ 'मल्लिनाथचरित' गा. ५१
२४ 'चैत्यपरिपाटी'
२५ 'मोहराजविजय'
२६ 'स्वधर्मीवात्सल्यकुलक' गा. २४
२७ 'अन्तरंगविवाहधवल'
२८ 'जिनजन्ममह'
२९ 'नेमिनाथजन्माभिषेक' गा. १०
३० 'पार्श्वनाथजन्माभिषेक' गा. ११

३१ 'मुनिसुव्रतजन्माभिषेक' गा. १३
३२ 'जिनजन्माभिषेक' गा. १५
३३ "जिनजन्मोत्सव५६ दिक्कुमारीस्तवन' गा.२५

और भी कुछ रचनाएं इन्हीं प्रतियों में हैं वे जिनप्रभसूरिजी की होंगी। पर उनमें नामोल्लेख नहीं है। तेरहवीं शती का अन्त और चौदहवीं का प्रारंभ इनका रचनाकाल है।

२ जयशेखरसूरि शिष्य—इनके रचित 'शील-सन्धि' में और कुछ विवरण कवि के सम्बन्ध में नहीं है और जयशेखरसूरि नामके कई आचार्य हो गए हैं इसलिए ये किस गच्छ के और कब हुए निश्चय नहीं कहा जा सकता। इनका समय चौदहवीं शताब्दी होना सम्भव है।

३ वज्रसेनसूरि—इनके रचित 'भरतेश्वर-बाहुबली-घोर' से केवल इतना ही मालूम होता है कि ये देवसूरि की परम्परा में या पट्टधर थे। इसीलिए इनका समय तेरहवीं शती माना गया है।

४ आसिग—इस कविकी तीन रचनाएं प्रस्तुत ग्रन्थ में छपी हैं जिनमें से 'कृपण-गृहिणी-संवाद' में तो केवल नाम ही लिखा है। 'चन्दनबाला-रास' के अन्त में जालोर नगर का उल्लेख है पर 'जीवदया-रास' के अन्त में कविने अपना अच्छा परिचय दिया है और उसीमें रचनाकाल सं. १२५८ आश्विन सुदि ७ दिया है। कवि शांतिसूरि का भक्त था। जालोर का निवासी और बाला मन्त्रीके वंशज वेहल के पुत्र आसाइतु का पुत्र होगा। कविने अपने मौसाल का भी उल्लेख किया है। 'जीवदयारास' उसने सहजिगपुरके पार्श्वजिनालय में बनाया है।

५ पाल्हण—इस कवि की 'आबूरास' और 'नेमि बारहमासा' संज्ञक दो रचनाएं इस ग्रंथ में छपी है पर कवि ने अपने नामोल्लेख के अतिरिक्त अपना कोई परिचय नहीं दिया। 'आबूरास' में रचना समय सं. १२८९ दिया है।

६ देल्हण—इसके रचित 'गजसुकुमालरास' में देवेन्द्रसूरि के वचनोंसे रचे जानेका उल्लेख किया है। देवेन्द्रसूरि संभवतः कर्मग्रंथादि के रचयिता हों, अतः कवि का समय चौदहवीं शतीका प्रारम्भ संभव है।

७ उपाध्याय विनयप्रभ—सं.१३८२ में श्रीजिनकुशलसूरिजी के पास आप दीक्षित हुए। सं.१४१२ कार्तिक सुदि १ खंभातमें आपने 'गौतम-रास' बनाया और कार्तिक पूर्णिमा को संस्कृत में 'नरवर्म-चरित्र' की रचना की। इनकी शिष्यपरम्परा के संबन्ध में हमारा "दादा जिनकुशलसूरि" द्रष्टव्य है।

८ लक्ष्मीतिलक—ये जीनेश्वरसूरिजीके शिष्य थे। इनकी दीक्षा सं. १२८८ में हुई। जिनरत्नसूरि इनके विद्यागुरु थे। सं.१३११ में 'प्रत्येकबुद्ध-चरित्र' १०१३० श्लोक परिमित प्रल्हादनपुर में सादल की समभ्यर्थना से बनाया। सं. १३१७ में 'श्रावक-धर्म-बृहद्-वृत्ति' की रचना जालोरमें की जिसका परिमाण १५१३१ श्लोकों का है। तीसरी रचना 'शांति-नाथ-रास' इस ग्रन्थ में प्रकाशित है।

९. राजतिलक—श्री. जिनप्रबोधसूरिजीने सं. १३२२ मिती ज्येष्ठ कृष्ण ९ को इन्हें वाचकपद दिया। इनके रचित 'शालिभद्र-रास' प्रस्तुत ग्रंथ में प्रकाशित है। यह रास 'जैन युग' में पहले प्रकाशित हुआ था फिर हमें दो प्रतियां और मिली उन्हींसे यह सम्पादन किया गया है।

१०. अभयतिलक—ये श्रीजिनेश्वरसूरि के शिष्य थे और लक्ष्मीतिलक की भाँति बडे विद्वान थे। हेमचन्द्र के संस्कृत द्व्याश्रय काव्य की वृत्ति सं. १३१२ दीवाली के दिन पालनपुर में बनायी। 'न्यायालंकारटिप्पण', 'वादस्थल' तथा कई स्तोत्र भी आपके प्राप्त हैं। प्रस्तुत ग्रंथ में 'महावीर–रास' छपा है जो पहले 'जैन युग' में भी छपा था। फिर हमें इस रासकी और भी प्रतियां मिली। दो प्रतियोंके आधार से इसका संपादन किया गया है। सं. १२९१ वै. शु. १० जाबालिपुर में इनकी दीक्षा और सं. १३१९ मिगसर सुदि ७ को आपको उपाध्याय पद मिला, उसी वर्ष में इन्होंने उज्जयिनी में तपामत के पं. विद्यानन्द को जीतकर जयपत्र प्राप्त किया।

११. जिनपद्मसूरि—इनके सम्बन्ध में हमारा 'दादा जिनकुशलसूरि' द्रष्टव्य है।

१२. विनयचंद्रसूरि-इनके रचित 'नेमिनाथ–चतुष्पदिका' प्रस्तुत ग्रन्थ में छपी है जिसमें बारहमासों का वर्णन है। ये रत्नसिंहसूरि के शिष्य थे और १४वीं शताब्दी के प्रारम्भ में हुए हैं।

१३. देपाल-इनकी तीन लघु रचनाएं इस ग्रन्थ में छपी हैं। देपाल बहुत प्रसिद्ध कवि हुए हैं और इनकी रचनाएं भी काफी मिलती है। इसके जीवनप्रसंगों और रचनाओं पर विचार करने से देपाल नामक दो कवि हुए संभव है। क्योंकि 'जंबू–चौपाई' सं. १५२२ और कुछ अन्य रचनाएं इसके बाद की भी मिलती है जब कि प्रबन्ध ग्रन्थों से ये पन्द्रहवीं शती में हुए लगते हैं।

१४. जिनेश्वरसूरि—इनके रचित 'महावीर जन्माभिषेक' प्रस्तुत ग्रन्थ में छपा है व 'शांतिनाथ बोली' में श्रीमालनगर में इनके स्थापित शांतिनाथ प्रतिमा का उल्लेख है। 'युगप्रधानाचार्य गुर्वावली' और 'ऐतिहासिक जैन काव्य संग्रह' में इनका जीवनचरित्र छपा है। इनके रचित 'श्रावकधर्मविधि' की रचना सं. १३१३ पालनपुर में हुई। 'चन्द्रप्रभ–चरित्र' और कई स्तोत्रकुलकादि आपके रचित १५ अन्य लघु रचनाएं भी प्राप्त हैं।

१५. जिनवल्लभसूरि–प्रस्तुत ग्रन्थ के अन्तमें 'नवकार–फाग-स्तवन' छपा है, इसके अंतिम पद्य में "गुरु जिणवल्लभसूरि भणइ" पाठ है इससे इसके रचयिता श्री जिनवल्लभसूरि या इनके शिष्य होने की संभावना है। बारहवीं शती के जिनवल्लभसूरि बहुत बडे विद्वान आचार्य हुए हैं। 'नवकार–स्तवन' की पन्द्रहवीं शती के पूर्व की कोई प्रति नहीं मिलती एवं भाषा में परवर्ती प्रभाव अधिक है।

जैसा कि पहले कहा गया है, इस ग्रन्थ में प्रकाशित बहुतसी रचनाओं की एक एक प्रति ही मिली। कई रचनाओं के पाठ भी आदि अंतमें त्रुटक मिले हैं। पाठ में काफी अशुद्धियां भी थी फिर डा० भायाणी जी ने काफी परिश्रम करके पाठों का संपादन किया है। जिन रचनाओंकी एक से अधिक प्रतियाँ मिली उनका पाठ तो पर्याप्त शुद्ध हो गया परन्तु जिनकी अन्य प्रतियाँ नहीं मिलीं या त्रुटक मिलीं उनकी पूरी व शुद्ध प्रतियाँ कहीं प्राप्त हो जायं तो ठीक हो। प्रस्तुत संग्रह में तेरहवीं शती तक की विविध प्रकारकी रचनाएं हैं इनमें संधि, घोर, रास, चर्चरी, भास, फाग, चतुष्पदिका, बारहमासा, वीवाहला, धवल, तलहरा, बोली, कलश, जन्माभिषेक, संवाद, दोहा, दंगडु, स्तवन संज्ञक रचनाओंका समावेश है।

कुछ अन्य रचनाप्रकारों की रचना भी इसमें देनी थी पर प्रकाशक द्वारा ग्रन्थ की पृष्ठ-संख्या सीमित होने से नहीं दे सके।

बीकानेर — अगरचंद नाहटा

संगृहीत रचनाओं की भाषा

संगृहीत कृतियों में देपाल की रचनाओं (क्रमांक २५, २६, २७) को, जो कि १५वीं शताब्दी की हैं, छोडकर शेष १३वीं शताब्दी के आसपास की रचनाएं हैं। क्रमांक १, २, ३ वाली रचनाएं संधि प्रकार की हैं। संधियों की भाषा अपभ्रंश-प्रधान होती है। क्रमांक ३३, ३५, ३६ वाली रचनाओं की भाषा का स्वरूप भी ऐसा है। इनके अतिरिक्त वस्तु छंद एवं मदनावतार-छंद में निबद्ध रचनाओं या खंडों में (जैसे कि क्रमांक ९, १२, १४, ३३, ३४, ३५, ३७ आदि में) भी अपभ्रंश के रूपों की बहुलता होती है। शेष रचनाओं में भी अल्पाधिक मात्रा में अपभ्रंश का मिश्रण है। इस तरह संग्रहगत रचनाओं की भाषा में प्राचीन, समकालीन और उत्तरकालीन प्रयोग कहीं एक प्रकार के, कहीं दूसरे प्रकार के तो कहीं मिश्र रूप से पाये जाते हैं।

यहां पर नये परिवर्तन को लक्षित कर कतिपय विशिष्ट रूपों एवं प्रयोगों का निर्देश किया जाता है:—

ध्वनि-परिवर्तन

शब्दों के अंत्य स्वर की अनुनासिकता दुर्बल या लुप्त हो गई है। इस बारे में लेखन में—हस्तप्रतियों में अत्यन्त अनिश्चितता होती है। उत्तरोत्तर समय के लेखन में अंत्यानुनासिक कम होते गये हैं।

प्रत्ययों में से हकार लुप्त करने की वृत्ति प्रकट रूप से दिखाई देती है—जैसे कि मध्यम पुरुष ब० व० का '०उ' < '०हु'; प्रथम पुरुष ब० व० का '०इं' < '०हिं'.

स्वरों के बिच 'म्' का 'वँ' ('वृ') होने की प्रादेशिक प्रक्रिया एकाध रचना (क्रमांक ४ वाली) में मिलती है।

'इंदियाल', 'दिणियर', 'पियाण' आदि थोडे शब्द 'अय्' > 'इय्' इस परिवर्तन के उदाहरण हैं।

रूपरचना

रूपरचना में हेमचन्द्र-निर्दिष्ट वैकल्पिक प्रत्ययों एवं क्वचित् प्राकृत रूपों का प्रयोग होते हुए भी अमुक अमुक प्रत्यय व्यापक या प्रधान रूप से प्रयुक्त हुए हैं। इनके अतिरिक्त कहीं कहीं नूतन प्रत्यय का प्रचार होने लगा है। नीचे दी गई विशिष्टताओं को इस दृष्टि से समझना चाहिये। निर्दिष्ट प्रत्ययों के विकल्प भी कहीं पाये जाते हैं, किन्तु ये छंद आदि विशिष्ट कारणों से किये गये अपवाद-रूप हैं।

आख्यातिक रूपरचना

कुछ उल्लेखनीय बातें ये हैं:—

वर्तमान प्रथम पु० ब० के प्रत्यय— ०हि (०हिं), ०इ (०इं) ('अछइ', २३.२४)
आज्ञार्थ मध्यम पु० ए० व० का ,,— ०इ.
" " " ब० व० के ,,—०हु, ०उ (०उं)

भविष्य उत्तम पु० ए० व० ,, ,,—०इसु, ०इसउं.
,, ,, ,, ब० व० के ,,—०इसहँ, ०एसहँ (जैसे कि 'करेसहँ', 'लहिसहँ' ७.१९.)
,, प्रथम ,, ब० व० के ,,—०इसइ, ०एसइ ('होइहि'—५.२४-में ०इहि)
कर्मणि अंग के प्रत्यय—०ईज्०, ०इज्०
कर्मणि वर्तमान कृदन्त का प्रत्यय–०ईतउ (जैसे 'वदीतउ' १.३८, २५.१२)

कर्मणि भूत कृदंत के लकार-विस्तारित रूप—'उद्धरियलि' (५.४४), 'उलखियला' (२७.२.१), 'बांधुला' (२७.४.२), 'सीधलउ' (४०.९), 'दिन्हु' (६.२१) भी उल्लेखनीय है। संबंधक भूत कृदन्त के प्रत्यय–०एवि, ०इवि, ०अवि, ०इ, ०इउ.

नामिक रूपाख्यान

कुछ उल्लेखनीय बातें ये हैं :—

विस्तारित अकारान्त नपुं. कर्ता वि० ए० व० का प्रत्यय–०उं (उ०).

विस्तारित अकारान्त पुं. नपुं. संज्ञा की कर्ता विभक्ति के एक वचन के आकारान्त रूप के उदाहरण अत्यंत विरल है—५.१ में 'हंसा' और २७.४.२ में 'बांधुला' है।

क्रमांक ५ वाली रचना में अकारान्त पुंल्लिंग की कर्ता विभक्ति बहुवचन के ०इं प्रत्यय वाले कुछ रूप मिलते हैं (जैसे कि 'दिवसडइं' ५.६, 'जीवइं' ५.२५, 'थियइं' ५.३०, 'दुक्खियइं' ५.३२, 'अपुन्नइ बप्पुडइं' ५.३३), जो हिन्दी आदि के ०एं प्रत्यय वाले रूपों के पुरोगामी जान पडते हैं।

करण–अधिकरण वि० ए० व० के प्रत्यय–०इ (०इं), ०इहिं (०इहि). करण–अधिकरण वि० ब० व० के ०ए प्रत्यय वाले रूप मिलने लगे हैं—जैसे कि 'पाए' (४.४०), 'रागे' (४.४१), 'दिवसे मासे' (५.१४), 'कुमासे' (६.३०), 'कउसीसे (१०.१९).

अधिकरण ए० व० के ०हं प्रत्यय वाला 'उवरहं' (५.९) तथा अकारान्त स्त्रीलिंग के ०ह प्रत्यय वाला रूप क्वचित् मिलता है।

अपादान और संबंध विभक्ति एक वचन के लिये अंग के अन्त्य स्वर के अनुसार ०ह, ०हि या ०हु प्रत्यय हैं। सार्वनामिक रूपो में करण विभक्ति ए० व० के 'तिणि' (२३.१५), 'जिणे' (५.४३) 'इणि' (२२.२४) और कर्ता विभक्ति ब० व० का 'ज़िके' (४०.२) उल्लेखनीय हैं।

नामिक विभक्ति सम्बन्ध व्यक्त करने के लिये प्रयुक्त हुए कुछ पर-सर्ग ये हैं :—

तणइ (७.१४), पासे (१.१७), कन्ह (११.१७), नइ (११.२०), सइतउ (७.२६, ३६), सउं (०उ) ४.३८, सिउं (२२.२०), सरिसउ (५.११.१४; १३.१०; ३४; ३७, ३०.३), करि (४.४७), कए (१.९ २.२.१०, ३.१६, १०.४७), रेसि (१.१ ६ ७.४५, २३.९, ३७.७७ ३९.६), भणिवि (५.२८), भणेविणु (५.२८), भणिउ (६.२०, २२), भणी (१.३७); कन्हइ (१०.३०); कान्हइ (७.२८) कन्हा (१०.४९), पासि (१.९, ७.४५; १२.२५, ४५, २२ ३.४, २३.२४, २५), पाहइं (११.१०.१६), पाह (२३, २२), तडि (२३.३४), तणउ (१.३०), केरउ (११.१४; ३७.८), नउ (११.१३), करउ (२१.४), कउ (२१.१०, ४९), माहि (७.४६, ११.२१, २२.३, २३.२२), मझारि (७.२१), हुंतउ (३१.२), पाखइं (४.३४,

१६.७), विणु (१.३२, विण १.४२), आगइ (१०.१५), ऊपरि (२३.१०), भिंतरि (५.१५).

कतिपय विशिष्ट प्रयोग :—

अस्तिवाचक क्रियापद—'आछइ' (७.१८); 'अछइ' (२३.२४),'छइ' (७.६,७).

सहायक क्रियापद वाले क्रियारूप—'त्रिलवंत अछइ' (२३.११), 'लग्गी अछिसु' (२३.१६), 'उम्माहियउ छइ' (१९.८); 'पडया छइ' (६.२८),

संयुक्त क्रियापदों के रूप—'रोअणह लग्गउ' (३७.७), 'मुणेवा चाहइ' (१.११२), 'उड्डिवि गयउ' (३७.८), 'नेइ लेसइ' (५.८), 'पूरि रहिउ' (१.१०९), 'वीसासि करि' (३८.३२), 'खंचि करि' (३७.४).

कर्तृवाचक '०अणहार' प्रत्यय-'मग्गणहार' (५.८), 'मारणहार' (३८.३२).

लघुतावाचक ०ड प्रत्यय के, जो कि कुत्सा, लालित्य, प्यार इत्यादि को भी व्यक्त करता है अथवा केवल अंग-विस्तारक होता है, उदाहरण ये हैं :—

दिवसडइं (५.६), विमलंड (७.९), वाछडउ (१४.२३), हियडउ (१४.३६), रासुलडउ (१५.२१), भाद्रवडइ (३६.३४), गोरड (२१ ४), दासडिय (२२.४), एकलडी (२३.५), वहुडिय (२८.१३).

क्रमांक ३८ की कृति में हत्थडइं (१२), सद्दडिहिं (२०), मृगडाहं (२९), गहिल्लडी (३९), रुक्खडउ (४५), तातडी (४६), दोसडउ (४८), भग्गडउ (५२), पहरडा (५७); और क्रमांक ३९ की कृति में दंगडए (१), मग्गडउ (५), वेसाहडु (७), हत्थडा (८), कुट्टडी (१३), वोहित्थडउ (१४), ऊमाहडा (१५), छारड (२१), दिहडइ (२३) मिलते है। ये दोनों रचनाएं दोहा-बद्ध हैं और जैसा कि हम सिद्धहेम-व्याकरण-गत अपभ्रंश उदाहरणों से जानते हैं, दोहाबद्ध रचनाओं के एक प्रवाह में स्वार्थिक ०ड० प्रत्यय का आधिक्य रहता था।

आंबुला (२१.७), रासुलडउ (१५.२१) इनमें ०उल० और थोडिलउ (३७.२) में ०इल० ये अंग-विस्तारक प्रत्यय हैं।

छंदोरचना

१. कडवक-देह का छन्द वदनक : ६+४+४+१ ऐसे गण-विभाग युक्त सोल मात्राओं का चरण (अन्त्य ४ मात्राओं का स्वरूप – ⏑⏑ अथवा – –)। घत्ता का छन्द : ८(=४+४)+१४(=६+४+४; अन्त्य चार मात्राओं का स्वरूप ⏑⏑ –) ऐसे माप के चरणों वाली षट्पदी। सभी कडवकों मे यही व्यवस्था।

२. आरम्भ में एक गाथा (पूर्वदल में (४+४+४+४+४+ ⏑–⏑ अथवा ⏑⏑⏑⏑ + ४+– ; उत्तरदल में छठा गण एकमात्रिक; शेष के लिए वही व्यवस्था), बाद में आदि-घत्ता में षट्पदी की एक तुक जिसमें १०+८+१३ (अन्त ⏑⏑) ऐसा चरण-विभाग। यही छन्द सभी कडवकों की अन्तिम घत्ता में।

कडवक १. कडवक-देह का छन्द पद्धडी (४+४+४+४ : चौथे गण में जगण आवश्यक, दूसरे गण में वैकल्पिक, अन्यत्र निषिद्ध)।

कडवक २. कडवक–देह का छन्द मदनावतार, अपर नाम कामिनीमोहन (–⏑⏑–⏑ ऐसे स्वरूप वाले चार गणों का प्रत्येक चरण)।

कडवक ३. कडवक-देह का छन्द वदनक।
कडवक ४. कडवक-देह का छन्द पद्धडी।
अन्त में दो गथाएं।

३. आरम्भ में आदि घत्ता में षट्पदी की एक तुक, जिसमें १०+८+१३ (अन्त ˘˘˘) ऐसा चरण-विभाग।

कडवक १. ३. कडवक-देह का छन्द पद्धडी।
,, २. ४. ,, ,, ,, मदनावतार।

४. खण्ड १. १५+१५+१३ ऐसी मात्रा-संख्या वाले चरण विभाग युक्त त्रिपदी छन्द. १५ मात्राओं वाले चरण का गणविभाग : ६+४+५ ।१३ मात्राओं वाले चरण का गणविभाग : ६+४+ ˘˘˘।

खण्ड २ छन्द अपदोहक या सोरठाः ११ मात्राएं (गणविभाग ६+४+१, अन्त्य ३ मात्राओं का स्वरूप–˘) विषम चरणों में और १३ मात्राएं (गणविभाग ६+४+३; अन्त्य ३ मात्राओं का स्वरूप ˘˘˘) सम चरणों में। विषम चरण प्रासबद्ध।

खण्ड ३. छन्द वस्तुवदनक (अथवा वस्तुक अथवा रोला)। २४ मात्रओं का चरण। ६+४+˘–˘ अथवा ˘, ˘˘˘+४+६ ऐसा गण-विभाग।

खण्ड ४. छन्द सोरठा। विषम चरणों में चार मात्राओं के बाद क्वचित् गेयता-निमित्त 'ए' अक्षर।

खण्ड ५. छन्द सोरट्ठा। विषम चरणों में अन्त के बाद 'ए' अक्षर गेयतार्थ अधिक।

५. आरम्भ में १३+१६ मात्राओं की आन्तरसमा चतुष्पदी की एक तुक। बाद में अन्त तक, वदनक के दो चरणों और उपर्युक्त चतुष्पदी के चार चरणों के मिश्रण से बनी हुई द्विभङ्गी।

६. आरम्भ में १३+१६ मात्राओं की आन्तरसमा चतुष्पदी की एक तुक। बाद में अन्त तक, वदनक के दो चरणों और उपर्युक्त चतुष्पदी के मिश्रण से बनी हुई द्विभङ्गी।

७. भासा १–४. छन्द वदनक। ठवणि १–२. छन्द दोहा (=सोरठा के समविषम चरणों का विपर्यय)। क्वचित् विषम चरणों के आरम्भ में गेयतार्थ 'त' अक्षर का प्रक्षेप। ठवणि ३ में एक ही तुक है, जिसका छन्द ११–१० मात्राओं की आन्तरसमा चतुष्पदी है। तुक ३२ से ३५ तक का खण्ड हस्तप्रति में भासा कहा गया है, मगर उसका छन्द दोहा है, जो कि अन्यत्र ठवणि में प्रयुक्त किया गया है। ठवणि ४ का छन्द वही है, जो ठवणि ३ का है-अर्थात् १२+१० मात्राओं की आन्तरसमा चतुष्पदी। छठवीं भासा का छन्द अनियमित स्वरूप का मदनावतार ज्ञात होता है। ठवणि ५ की ४२ से ४६ तुकों का छन्द वस्तुवदनक है। ४७ से लेकर अन्तिम तुक तक वदनक छन्द है।

८. आरम्भ में ११+१० मात्राओं की आन्तरसमा चतुष्पदी की एक तुक। बाद में १८ वीं तुक तक वदनक और १२+१० की चतुष्पदी की एक एक तुक के मिश्रण से बनी हुई द्विभङ्गी। अन्तिम १८ वी तुक का छन्द वदनक। सर्वत्र वदनक की पङ्क्तियां गुर्वन्त हैं।

९. छन्द वस्तु (=रड्डा। मात्राके घटक की पहले चरण की आद्य ७ मात्राओं के खण्ड का आवर्तन। दूसरे और चौथे चरण में मात्रासंख्या ११ अथवा १२।

१०. भास १. छन्द वस्तुवदनक; अन्त में एक वस्तु ।

भास २. छन्द वदनक; अन्त में एक वस्तु ।

भास ३. छन्द दोहा; अन्त में एक वस्तु ।

भास ४. छन्द सोरट्ठा (प्रास-रहित); अन्त में एक वस्तु

भास ५. छन्द सोरट्ठा; विषम चरणों में चार मात्राओं के बाद गेयतार्थ 'ए' का प्रक्षेप; क्वचित् सम चरणों के अन्त में भी 'ए' । अन्त में एक वस्तु ।

भास ६. छन्द १६+१६+१३ (या १४) मात्राओं की त्रिपदी ।

११. छन्द १६+१६+११ (या १२) मात्रओं की त्रिपदी ।

१२. पहले खण्ड का छन्द वस्तुवदनक । अन्तिम ५ तुकों में सोरट्ठा (विषम चरणों में चार मात्राओं के बाद 'ए'कार) ।

दूसरे खण्ड का छन्द वस्तुवदनक । अन्तिम दो तुकों में वस्तु या रड्डा

तीसरे खण्ड का छन्द वस्तुवदनक; अन्तिम दो तुकों में वस्तु ।

चौथे खण्ड में चार तुक सोरट्ठे की; बाद में दो वस्तु ।

पाचवें खण्डका छन्द वस्तुवदनक; अन्तिम दो तुक वस्तु की ।

छठे खण्ड का छन्द मदनावतार; अन्तिम एक तुक का छन्द वस्तु ।

सातवें खण्ड का छन्द दोहा; अन्तिम छह तुक सोरट्ठे की ।

१३. आरम्भ में १२+१० की चतुष्पदी और वदनक से बने हुए मिश्र छन्द की एक तुक । बाद में १२+१० को चतुष्पदी की एक तुक का ध्रुवक । बाद में अन्त तक वदनक ।

१४. खण्ड १ और २में मुख्य छन्द वस्तुवदनक, और घात में वस्तु खण्ड ३ में मुख्य छन्द वदनक, और अन्त में (१३वीं तुक) १२+१० की चमुष्पदी की एक तुक । खण्ड ४ (१४वीं तुक से शुरू) में मुख्य छन्द वदनक, और घात में वस्तु । खण्ड ५में छन्द सोरट्ठा (विषम चरणों की चार मात्राओं के बाद 'ए' कार) । खण्ड ६ में मुख्य छन्द १६+१६+१३ की त्रिपदी, और अन्त में एक तुक १२+१० की चतुष्पदी की ।

१५. खण्ड १ में छन्द दोहा (विषम चरणों के बाद 'अनु' का प्रक्षेप; सम चरणों का अन्तिम अक्षर दीर्घ) । खण्ड २ में छन्द मदनावतार । खण्ड ३ में छन्द दोहा (सम चरणों के अन्त में 'त' कार का प्रक्षेप) । खण्ड ४ में छन्द सोरट्ठा ।

१६. खण्ड १ में छन्द १२+१० की चतुष्पदी और वदनक के मिश्रण से बनी हुई द्विभङ्गी । खण्ड २ का छन्द मदनावतार (३५ वीं तुक में १०+८+१३ की षट्पदी है) । खण्ड ३ में छन्द मदनावतार । खण्ड ४ में छन्द वदनक ।

१७. खण्ड १ में छन्द वस्तुवदनक । ठवणि में वस्तु । खण्ड २ में छन्द १३+१५ (या १६) की चतुष्पदी; ठवणि में वस्तु । खण्ड ३ में छन्द दोहा (तीसरे चरण के आरम्भ में 'त' का प्रक्षेप) । ठवणि में वस्तु । खण्ड ४ में छन्द वदनक ।

१८. १९. छन्द दोहा ।

२०. छन्द ९ (=५+४)+९(=५+४)+१७ (=५+५+५+२) की षट्पदी ।

२१. छन्द दोहा (विषम चरणों के आरम्भ में 'अरे' का प्रक्षेप) ।

२२. आरम्भ में एक दोहा। बाद में सभी भासों में मुख्य छन्द वस्तुवदनक। अन्त में एक दोहा।

२३. छन्द पारणक (अथवा लघु चतुष्पदी) : प्रत्येक चरण में ६+४+५=१५ मात्राएं (अन्तिम तीन मात्राओं का स्वरूप –˘)।

२४. छन्द वदनक और १३+१६ की चतुष्पदी के मिश्रण से बनी हुई द्विभङ्गी। चरणों का अन्त्याक्षर प्रायः दीर्घ। अन्तिम छह चरणों में वदनक।

२५. छन्द १५ (अन्त में –˘) +१३ (अन्त में 'ए' का प्रक्षेप) की चतुष्पदी। विषम चरण प्रास-बद्ध।

२६. छन्द १३ + 'वर' अथवा 'ए'+१३ 'ए'—ऐसे मात्रा-बन्ध वाली चतुष्पदी।

२७. खण्ड १ : प्रथम १५+१३ की चतुष्पदी की दो तुक। बाद में १२ मात्राओं की समचतुष्पदी की एक तुक। बाद में गीता या हरिगीता (प्रत्येक चरण में २+३+४+३+४+३+४+५ (अन्त में-)=२८ मात्राएं) की एक तुक। बाद में १५+१३ की चतुष्पदी की दो तुक। बाद में १२ मात्राओं की समचतुष्पदी की एक तुक। बाद में हरिगीत की एक तुक। बाद में१५+१३ की चतुष्पदी की पाँच कडी। गीत होने से मात्रा-बन्ध शिथिल है।

खण्ड २ के धउल का छन्द वदनक है। खण्ड तीन का छन्द वस्तु है। खण्ड ४ दोहा-बन्ध के आधार पर ध्रुवपद-युक्त गेय रचना।

२८. छन्द १५+१३ की चतुष्पदी। विषम चरण प्रास-बद्ध।

२९. आरंभ में एक मालिनी छन्द (प्रत्येक चरण में ˘˘˘˘˘˘---˘--˘-- ऐसे १५ अक्षर, ८ अक्षरो के बाद मध्य यति; और चरणान्त यति के स्थान प्रासबद्ध) और बाद में हाकलि छन्द (प्रत्येक चरण में ४+४+४+–= १४ मात्राएं, चतुष्कलों में जगण निषिद्ध, गेयतार्थ प्रत्येक चरण के आरम्भ में 'तु' या 'त' का प्रक्षेप) की दो तुक, बाद में अन्त तक ८ (=४+४)+८(=४+४)+७ (=४+-˘) की षट्पदी, जिसमें प्रत्येक अर्ध के आरम्भ में 'त' रखा गया है।

३०. छन्द हरिगीता।

३१. छन्द-प्रकार षट्पदी। प्रत्येक अर्ध में ८ (=४+४)+८ =४+४ +११(=६+४+१, अन्तिम तीन मात्राओं का स्वरूप –˘) प्रत्येक अर्ध के आरम्भ में गेयतार्थ 'त' का प्रक्षेप।

३२. छन्द-प्रकार आन्तरसमा चतुष्पदी। प्रत्येक अर्ध में मात्रासंख्या१६ (=८+८)+११ (=६+४+१; अन्तिम तीन मात्राओं का स्वरूप –˘)।

३३, ३५, ३६. छन्द वस्तु अपर नाम रड्डा।

३४. छन्द मदनावतार।

३६. मुख्य छन्द पद्धडी। अन्तिम तुक में मदनावतार।

३८. छन्द दोहा १–३,५–१०, १२–१४, १६–१७, १९, २१, २५, २९, ३१, ३५, ३७–३९, ४३, ५०, ५२ इन क्रमाङ्क वाली तुकों में। अन्यत्र सोरठा। ५३वीं तुक के छन्द का स्वरूप पाठ की भ्रष्टता के कारण अस्पष्ट है।

३९. मुख्य छन्द दोहा। तुक ३ में वदनक। तुक १२ और १३ में उपदोहक (प्रत्येक अर्ध में १३+१२ मात्राएं)। तुक ४ का छन्द पाठभ्रष्टता के कारण अस्पष्ट।

४०. छन्द षट्पद (अपर नाम छप्पय, दिवड्ढ या सार्ध छन्द, अर्थात् वस्तुवदनक (अपर नाम रोला) और दोहा की द्विभङ्गी।



कुछ दस साल पहले जब मैं मुनि श्री जिनविजयजी ने बहुत सी अद्यावधि अप्रकाशित प्राचीन गुर्जर रचनाओं के सम्पादन के लिये जो विपुल सामग्री इकट्ठी कर रखी थी उसमें से चुन कर एक कृति-संचय सम्पादित करने का कार्य में लगा था तब श्री अगरचन्द नाहटा के साथ इसी बारे में विचारविमर्श हुआ। वे भी इस दिशा में कुछ करने का सोच रहे थे। हम दोनों की सम्पदनार्थ निर्धारित रचनाओं में कुछ तो समान थी और उनके लिए एक ही समान प्रति का आधार था। नाहटाजी ने कितनी एक रचनाएं अन्यान्य पत्रिकाओं में प्रकाशित करने का प्रारम्भ भी कर दिया था। ऐसी प्रकाशित रचनाओं में मुद्रण की अशुद्धियाँ तथा शब्दविभाग, छन्दस्वरूप इत्यादि की दृष्टि से कुछ क्षतियां दिखाई देती थीं। इस सन्दर्भ में हमने सहयोग से प्राचीन गुर्जर कृतियों का एक संचय तैयार करने का तय किया। प्राचीनता और स्वरूपकी विविधता के आधार पर सम्पादनार्थ विविध कृतियों के लिए नाहटाजी ने हस्तप्रतियां सुलभ कर दीं। फलस्वरूप प्रस्तुत संग्रह तैयार हुआ। इसकी बहुत-सी रचनाओं के लिए एक ही हस्तप्रति ज्ञात या उपलब्ध होने से कुछ स्थानों में पाठ अशुद्ध रहा है। और फलस्वरूप छन्द, अर्थ आदि की भी अस्पष्टता ज्ञात होती है। फिर भी ऐसे स्थान अधिक नहीं हैं।

आशा है तेरहवीं–चौदहवीं शताब्दियों के प्राचीन गुर्जर (अर्थात् मारु-गुर्जर) साहित्य के रचना-प्रकार, छन्दोबन्ध, भाषा आदि के अध्ययन के लिए प्रस्तुत संचय उपयुक्त होगा। प्राचीन गुर्जर साहित्यकी प्रारम्भिक रचनाएं प्रकाश में लाने का प्रशस्य प्रयास श्री ची. डा. दलाल ने 'प्राचीन गुर्जरकाव्य संग्रह' के द्वारा किया था। उसके बाद श्री मो. द. देशाई के आकर ग्रन्थ 'जैन गूर्जर कवियो' द्वारा इस दिशा में कार्य करने के लिए एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण सहायक साधन उपलब्ध हुआ। मुनि जिनविजयजी ने अनेकानेक प्राचीन प्रतियों की प्रतिलिपि करवा कर एक बडी प्रकाशन योजना तैयार कर रखी थी। मगर स्वास्थ्य और दृष्टि की क्षीणता के कारण वे उसको कार्यान्वित कर न सके। स्वयं नाहटाजी भी कई वर्षों से एक एक करके कुछ रचनाएं पत्रिकाओं में दे रहे हैं। प्रस्तुत संग्रह इसी दिशा में किया गया एक छोटा सा प्रयास है।

इस कार्य में मुनि जिनविजयजी की संचित सामग्री से हमें जो लाभ उठाया है इसलिए हम उनके ऋणी है। इस संचय के प्रकाशन का जो भार श्री लालभाई दलपतभाई भारतीय संस्कृति विद्या मन्दिर ने उठा लिया और उसके निदेशक एवं हमारे मित्र दलसुखभाई मालवणिया से इस कार्य में विविध प्रकार की जो सहायता हमने पाई (जिसका पाना अब तो मेरा अधिकार सा हो गया है) उसके लिए हम उनके बहुत आभारी हैं। रामानन्द प्रेस के संचालक एवं कार्यकर-गण के सहकार के लिए भी हमारा धन्यवाद।

१ जून, १९७५

हरिवल्लभ भायाणी

प्राचीन गुर्जर काव्य संचय

१. केसीगोयम-संधि

१

अत्थि पसिद्ध सुद्ध-सिद्धंते　　कहिउ उत्तरज्झयण-महंते ॥१
केसी-गोयम-धम्म-विचारू　　संधि-बंधि सु कहिज्जइ सारू ॥२
आसि पास-जिण भवण-पसिद्धउ　　तासु सीसु चिहुँ नाण-समिद्धउ ॥३
केसि-कुमारु समण-मुणि-जुत्तउ　　सावत्थिहिँ तिंदुग-वणि पत्तउ ॥४
अणु सिरि-वीरहँ सीस-पहाणूँ　　सुय-केवलि गोयम जगि भाणूँ ॥५
बहु-परिवारि वसुहि विहरंतउ　　तिहिँ पुरि कुट्ठग-वणि संपत्तउ ॥६
नयरि बिहूँ पखि मुणि विहरंता　　पिक्खि परुप्पर मणि संभंता ॥७
जाणिवि गुरु वय-वेस-विसेसू　　अक्खहिँ निय-निय-गुरुहँ असेसू ॥८

तो नाण-पमाणी कारण-जाणी सीसहँ संसय-हरण-कए ।
वय-जिट्ठ गुणेवी लाभ मुणेवी केसि-पासि गोयम वयए ॥९

२

गोयम सीस-संघ-संजुत्तउ　　केसी पेक्खेविणु आवंतउ ॥१०
कुस-तिण-आसण आदरि देई　　विनय करी गोयम बइसेई ॥११
दो-वि मुणिंद उपसम-रस-भरिया　　निय-निय-मुणि-मंडलि परिवरिया ॥१२
ससि-रवि-सरिस-तेय ते सोहइँ　　निम्मल-नाण-गुणइँ जग मोहइँ ॥१३
बिहुँ पखि मिलिय पिखेविणु लोया　　कोऊहलि आवइ स-पमोया ॥१४
'बिहुँ पखि होस्यइ वाद' इसउँ भणि　　गण-गंधव्व मिल्या गयणंगणि ॥१५
तो मुणि-संसय-भंजण-रेसी　　कर जोडेविणु पभणइ केसी ॥१६
'महाभाग गोयम गुण-रासे　　हउँ काइँ पूछउँ तुम्ह-पासे' ॥१७

तो गोयम वुच्चइ 'जं तुम्ह रुच्चइ तं पुच्छेह भदंत लहू' ।
तं निसुणि महेसी पभणइ केसी विणय-धम्म पयडंत बहू ॥१८

आरम्भ : ए ६० श्रीकेशीगौतमाय नमः ।

३

'च्यारि महव्वय पासि पयासिय तेह जि पंच वीर-जिण-भासिय ॥१९
काज तु एक मुक्ख साहेवउँ किणि कारणि बिहुँ मग्गि वहेवउँ' ॥२०
'रिसह-कालि जिय ऋजु-जड हुंता मज्झिम पुणि रिजु-पन्न महंता ॥२१
संपइ ते वंकुड-जड गणियइ तिणि कारणि बिहुँ परि वय भणियइ ॥
ऋजु-जड धम्म दुहेलउ लक्खहिँ वंकुड-जड दुख-लक्खहिँ रक्खहिँ ॥२३
मज्झिम-कालि जीव ऋजु-पन्ना सुखि लक्खहिँ सुखि रक्खहिँ धन्ना' ॥
'साहु साहु गोयम तुह पन्ना एह भंति मह चित्तह छिन्ना ॥२५
अन्न-वि एग अत्थि संदेहू तं पुण गोयम मज्झ कहेहू' ॥२६
तो गोयम वुच्चइ 'जं तुम्ह रुच्चइ तं पुच्छेह भदंत लहू' ।
तं निसुणि महेसी पभणइ केसी विणय-धम्म पयडंत बहू ॥२७

४

'एक ज इच्छा-वेस वहिज्जइ अवर पमाणोपेतु कहिज्जइ ॥२८
चरण चरंतह नत्थि विसेसू किणि कारणि किउ बिहुँ परि वेसू' ॥२९
'जेह तणउँ मन निश्चल होई तिह मनि वेस विसेस न कोई ॥३०
जे चल-चित्त कया-वि चलंते ते बिहुँ वेसि विसेस वि लंते ॥३१
निश्चल-मनि भरहेसर-राओ विणु मुणि-वेसहँ केवलि जाओ ॥३२
पसन्नचंद ज़ो झाणहु चलियउ वेस-विसेस देखि सो वलियउ' ॥३३
'साहु साहु गोयम०' ॥३४–३५
'तो गोयम वुच्चइ०' ॥३६

५

'गोयम सत्तु-सेणि धावंती दीसइ तुब्भ-भणी आवंती ॥३७
स्वर्गि मर्ति पायालि वदीती सा तइँ एकलडइ किम जीती' ॥३८
'एकइँ पंच पंचि दस पाडिय दस जिणि सेस-सत्तु निद्धाडिय' ॥३९
केसि कहइ 'रिउ किसा कहीजइँ' तो गोयम-गुरु ते पयडीजइँ ॥४०
'जे कसाय इंदिय-रिउ भणियइँ इक मनि जीतइ ते सवि जिणियइँ ॥४१
जं मण-विण विहुँ वंध न लागइँ जिम बिहुँ भाई सुणियइ आगइँ ॥४२
'साहु साहु गोयम०' ॥४३–४४
'तो गोयम वुच्चइ०' ॥४५

६

'पासि वंधि बाँधिउ इह-लोगो दीसइ दीण निहीण स-सोगो ॥४६
सो तइँ पास-वंध किम छिंदिउ जं तुह दीसइ मनि आणंदिउ' ॥४७
'पास-वंध मइ मूलह तोडिउ आपणपउ आपइ जि विछोडिउ' ॥४८
'पास किसिउ' केसी इम भासइ तउ गोयम-गुरु ते जि पयासइ ॥४९
मोह-पास पसरंत-सणेहू वर-वेरग्ग-खग्गि छिंदेहू ॥५०
मोह-बद्ध जाणंतउ मूझइ बंभदत्त जिम किम-इ न बूझइ' ॥५१
'साहु साहु गोयम०' ॥५२–५३
'तो गोयम वुच्चइ० ॥५४

७

देहुब्भव विस-वेली महंती तिहुयण-तरु-छाया विहरंती ॥५५
विसमय-फल-दल-कंदल-मूली सा तइ गोयम किम ऊमूली ॥५६
'मइँ विस-वेलि-मूल खणि सोहिउ तउ हउँ तसु विस-त्राइ न मोहिउ' ॥५७
'वेली किसी' इम पूछइ केसी तउ गोयम-गुरु कहइ महेसी ॥५८
'भव-तिण्हा विस-वेलि भणीजइ विसय-मूल संवेगि खणीजइ ॥५९
जं जगि विसय-पिपासा-नडिया दो-वि खुवन्नकार भवि पडिया' ॥६०
'साहु साहु गोयम०' ॥६१--६२
तो गोयम वुच्चइ० ॥६३

८

'झाल-कराल जलइ जा अग्गी संतावइ देहंतरि लग्गी ॥६४
सा तइ गोयम किम उल्हाविय जं तुह तणु दीसइ अण-ताविय' ॥६५
'सा मइँ मेह-नीरि उल्हाविय तउ तिणि मह तणु नहु संताविय' ॥
भणइ केसि 'के पावग-पाणी' गोयम कहइ अमियमइ वाणी ॥६७
'कोव जलण जिण जलहर वाणी जाणेवउ सुय सीयल पाणी ॥६८
कोवि जलंतु खवग अहि थाई नागदत्त उवसमि सिवि जाई ॥६९
'साहु साहु गोयम० ॥७०–७१
तो गोयम वुच्चइ० ॥७२

९

'दुद्दम दुट्ठ तुरंगम अच्छइ मागु मेल्हि उमागिइँ गच्छइ ॥७३

गोयम तीणि तुरंगमि चडियउ तुहु कहि किम उम्मग्गि न पडियउ' ॥७४
'मइँ सु तुरंगम दमि वसि कीधउ तो हउँ तीणि उमागि न लीधउ' ॥७५
'आसु किसउ' केसी पूछेई तउ तसु गोयम ऊतर देई ॥७६
'चंचल चित्त तुरंगम जाणउ सो-इ जि एकु दमी वसि आणउ ॥७७
राम दमी मनु तिम वसि कीधउ जिम सीतेंद्रि उमागि न लीधउ' ॥७८
'साहु साहु गोयम०' ॥७९–८०
'तो गोयम वुच्चइ०' ॥८१

१०

'दीसइँ माग अणेग अतुल्ला जीहिँ जीव भव भमडहिँ भुल्ला ॥८२
निय निय मागु भलउ सवि बोलइँ गोयम किम तुम्ह तेहि न डोलइँ' ॥
'माग कुमाग सवे हूँ ज़ाणउँ मेल्हि कु-माग सु-माग वखाणउँ' ॥८४
'मागु किसिउ' केसी इम जंपइ तं सुणि गोयम एम पयंपइ ॥८५
'मागु जिसउ जिणवरि जि कहिज्जइ अवर कु-माग न तेहिँ गमिज्जइ ॥८६
सुलसा इह मनु मागि जि लागउँ अंबड-वयणिहि किमइ न भागउँ ॥८७
'साहु साहु गोयम०' ॥८८-८९
तो गोयम वुच्चइ० ॥९०

११

'जे नर-नारी नीरि निमज्जहिँ लोल-वेल-कल्लोल हणिज्जहिँ ॥९१
तीह जु होइ सरणागय-ताणूँ गोयम को अच्छइ सो ठाणूँ' ॥९२
'अंतर-दीव पवर छइ एगो जत्थ न पहवइ सो जल-वेगो' ॥९३
केसि कहइ 'जल-दीवु ति कइसा' गोयम पभणइ पयडउ जइसा ॥९४
'भव सायर जल पातक कम्मू अंतर-दीव-सरीखउ धम्मू ॥९५
दृढप्रहारि किउ पाप पयंडू धम्म-पहाविइँ किय सय-खंडू' ॥९६
'साहु साहु गोयम०' ॥९७–९८
तो गोयम वुच्चइ० ॥९९

१२

'वेडुलडी बहुविह पूरिज्जइ एक तरहिँ एक जलहि निमज्जइ ॥१००
सा वेडी कहि किम जाणीजइ जिणि सायरु निश्चइँ लंघीजइ' ॥१०१
'जा निच्छिद्दि नीरि न भरीजइ तिणि वेडी जल-रासि तरीजइ' ॥१०२

पूछइ केसी तरीय-विसेसू बोलइ गोयम 'कहउँ असेसू ॥१०३
अकय-दुकय जल-संगह-देहू भव-जल-तरण-तरी-सम एहू ॥१०४
आसवि भव-संवरि सिव थाए कंडरीक-पुंडरीकहँ न्याए' ॥१०५
'साहु साहु गोयम०' ॥१०६-१०७
तो गोयम वुच्चइ० ॥१०८

१३

अंधयार घण घोर भयंकर गोयम पूरि रहिउ भवणंतर ॥१०९
अच्छइ कोइ जु तिमर हरेसिइ महि-मंडलि उज्जोय करेसिइ' ॥११०
'ऊगिउ अच्छइ एक जु भाणूँ सो करिसिइ उज्जोय पहाणूँ' ॥१११
केसी भाणु मुणेवा चाहइ तक्खणि गोयम-गुरु तं साहइ ॥११२
'वद्धमाण-जिणि निम्मल-नाणूँ उदयवंत जाणेवउ भाणूँ ॥११३
महु मणि मिच्छा-तिमिर हरंतउ वीर-तरणि अवयरिउ तुरंतउ' ॥११४
'साहु साहु गोयम०' ॥११५-११६
तो गोयम वुच्चइ० ॥११७

१४

'जम्मण-मरण-रोगि जग पीडिउ दीसइ दुक्ख-निरंतरि भीडिउ ॥११८
गोयम अच्छइ कोइ पएसो जत्थ नही जर-मरण-पवेसो' ॥११९
'ठाण एग छइ उत्तिम लोए जहिँ जर-मरण-पवेस न होए ॥१२०
केसी जंपइ 'किसउ सु ठाणूँ' गोयम तासु करइ वक्खाणूँ ॥१२१
'सिद्धि-सिलोवरि अत्थि पहाणूँ मुक्ख एक अजरामर ठाणूँ ॥१२२
साचइ जम्मण-मरण जु वीहइ सिवकुमार जिम सो सिवु ईहइ' ॥१२३
'साहु साहु गोयम तुह पन्ना सयल भ्रंति मह चित्तह छिन्ना ॥१२४
इम भणि कीयउ कम्म-निवेसू केसि लियइ गोयम-वय-वेसू ॥१२५
इम करवि विचारू संजम-भारू पालेविणु जे मुक्खि गय ।
ते गोयम-केसी चित्ति निवेसी झायहु भवियाणंदमय ॥१२६

*

अंत : इति केसीगोयमसंधिः समाप्ता ॥ पं० श्रीश्रीश्रीहेमसिहेन मुनिवराणं शिष्येणि लिषिते ॥ ८५२२९३१०४८१०३२२१०५४३२२२८१२२८१६२७५९२७२ सुभं भवतुं । कल्याणमस्तुं ।

२. नमयासुंदरि-संधि

कर्ताः जिनप्रभसूरि　　　　　　　　　　　　　　　रचना-समयः ई. सं. १२७२

अज्ज वि जस्स पहावो वियलिय-पावो य अखलि[1]य-पयावो ।
तं वद्धमाण-तित्थं नंदउ भव-जलहि-वोहित्थं ॥१

*

पणमिवि पणइंदह　वीर-जिणिंदह　　चरण-कमलु सिव-लच्छि-कुलु ।
सिरि-नमया-सुंदरि　गुण-जल-सुरसरि　किंपि थुणिवि लिउँ जम्म-फलु ॥

[१]

सिरि-वद्धमाणु-पुरु अत्थि नयरु　तहिँ संपइ नरवइ धम्म-पवरु ।१
तहिँ वसइ सु-सावगु उसहसेणु　अणुदिणु जसु मणि जिणनाह-वयणु ।२
तव्भज्ज-वीरमइ-कुक्खि-जाय　दो पवर पुत्त तह इक्क धूअ ।३
सहदेव-वीरदासाभिहाण　रिसिदत्त पुत्ति गुण-गण-पहाण ।४
नहु देइ सिट्ठि मिच्छत्तिआणं[2]　रिसिदत्त इब्भ-पुत्ताइयाण ।५
अह कूववंद-नयरागएण　परिणीअ कवड-वर-सावएण ।६
वणिउत्त-रुद्ददत्ताभिहेण　तहिँ पत्त चत्त-धम्मा कमेण ।७
अम्मा-पिईहिँ परिवज्जिआइ　हुउ पुत्तु महेसरदत्तु ताइ ।८
पुरि वद्धमाणि सहदेव-घरिणिं[3]　सुंदरि नमया-नइ-न्हाण-करणि ।९
उपन्नु[4] मणो[र]हु पिअयमेण　गन्तूण तत्थ पूरिउँ[5] कमेण ।१०
गब्भाणुभावि तहिँ रहिउँ[6] चित्तु　सहदेविहिँ नमयापुरु स-वित्तु ।११
तहिँ कारिउ जिण-चेइउँ[7] पवित्तु　मिच्छत्त-राय-जयपत्तु पत्तु ।१२
अह नमयासुंदरि सुंदरीइ　धूआ पसूअ गुण-सुंदरीइ ।१३
लावन्न-रूव-निरुपम-कलाहिँ　तहिँ वद्धइ नमया निम्मलाहिँ ।१४
पिअ-माइ-पमुहु सयलु वि कुडुंबु　आणाविउ तहिँ पुरि निव्विलम्बु ।१५
उच्छाहिउ रिसिदत्ताइ पुत्तु　ववसाइ महेसरदत्तु पत्तु ।१६
आवज्जिउँ[8] गुणिहिँ सु-सावयत्तु　पडिवज्जिउँ[9] रंजिउ ताहँ चित्तु[10] ।१७
नमया परिणीअ महेसरेण　तउ कूववंदि पहुतउ महेण ।१८
रिसिदत्त तीइ कय एग-चित्तं　जिणनाह-धम्मि सासुरय-जुत्त ।१९

अशुद्ध मूल-पाठः १-अखलिय. २. मिच्छत्तीआण. ३. °घरणि. ४. उपन्नु. ५. पूरीउ. ६. रहीउ. ७. चेईउ. ८. आवज्जीउ. ९. वज्जीउ. १०. °चित्तु.

आणंदिउ सयलु वि नयर-लोगु नम्मय-गुणेहिँ तह सयल-वग्गु ।२०
ओलोअंणि अह निअ-मुहु पमत्त दप्पणि पिक्खिवि वक्खित्त-चित्त ।२१
तंबोल-पिक्क तिणि मुक्क जाव अह जंतह मुणि-सिरि पडिअ[1] ताव ।२२
मुणि जंपइ 'कुणइँ जि मुणिवराण आसायण होइ विओगु ताण' ।२३
इअ[2] सुणिवि झत्ति उवरिम-खणाउ उत्तरिवि साहु खामइ पमाउ ।२४
सा नमिवि भणइ 'तुम्हि खम-निहाण पणमंत-थुणंतह दय-पहाण ।२५
सावस्स अणुग्गहु मह करेह अवराहु एक्कु मुणिवर ! खमेह' ।२६
मुणि भणइ 'भावि पियमय-विओगु[3] निअ[4]-निबद्ध-पुव्व-कम्मिण अभंगु ।२७
मइँ जाणिउ नाणिण कहिउ तुज्झ नहु सावु एहु मा वच्छि ! मुज्झ' ।२८

घत्ता

इअ[5] मुणिपहु-वयणिहिँ अमिअ[6]-समाणिहिँ अप्पदुक्ख[7]-संवेग-जुयं[8] ।
पिअयमि आसासिअ[9] सीलि पसंसिअ[10] करइ धम्मु निम्मल-चरिय ।२९

[२]

अन्नया रुद्ददत्तगओ चल्लए जवण-दीवम्मि बहु-दव्व-अज्जण-कए ।१
पोअ-वणिजेण वच्चंतु मुकलावए सयण-वग्गं तहिं नम्मयं ठावए ।२
कह वि न-हु ठाइ सह चलइ नमया-सई जा चलइ पवहणं कोइ ता गायई ।३
सुणिवि सर-लक्खणं कहइ पइ-अग्गए नम्मया 'गाइ जो पुरिसु सो नज्जए ।४
पिंग-केसो अ वत्तीस-वरिसो इमो पिहुल-वच्छत्थलो सामलो सक्कमो' ।५
इय सुणिवि पिअयमो[11] चिंतए 'दुद्दमा जा इमं मुणइ सा नूणमसई इमा ।६
इत्तियं कालमेसा मए जाणिआ साविआ सील-विमल त्ति सम्माणिआ ।७
कुल-कलंकस्स हेउ त्ति मारेमि वा तिक्ख-सत्थेण जलहिम्मि घल्लेमि वा' ।८
अलिअ-कुविअप्प-पूरिअ-मणो जा गओ रक्खस-दीवु सहस त्ति ता आगओ ।९
उत्तरिउ तत्थ पाणीअ-इंधण-कए नम्मया-सहिउ सो दीवु अवलोअए ।१०
तहिँ परिस्संत सरवरह पालिं गया निद्द-हेउं परं पुच्छए नम्मया ।११
सो वि छड्डण-मणो भणइ 'विस्सम पिए[12]' तरु-तले सुअइ[13] जा ता सणियमुट्ठए ।१२
सुत्तयं नम्मयं मुत्तु निट्ठुरु मणे झत्ति संपत्त माया-निही पवहणे ।१३
पुट्ठु परिवारि सो कहइ रोअंतओ 'भक्खिआ[14] रक्खसेणं पिआ हा हओ ।१४

१. पडीअ. २. ईअ. ३. पीययमवीओगु. ४ नीअ. ५. ईअ. ६. अमीअ°. ७ दुःख. ८. °जूय. ९. आसासीअ. १०. पसंसीअ. ११. पीयअमो. १२. पीए १३. सूअइ. १४. भक्खीआ.

एअ-ठाणाउ चालेह लहु पवहणं जा कुणइ रक्खसो तुम्ह बहु भक्खणं' ।१५
इअ सुणिवि तेहिँ भीएहिँ संचारिअंपवह णं जवण-दीवम्मि तं पत्तयं ।१६
तत्थ विक्किणिवि पणिअं[1] सलाभो गओ निअ-पुरं कहइ अम्मा-पिऊणं तओ ।१७
रक्खसोवद्दवं नम्मयाए दुहं पुण वि परिणाविओ भुंजए सो सुहं ।१८
जग्गए नम्मया जाव इत्थंतरे पिच्छए नेव तहिँ पिअयमं परिसरे ।१९
विलवए 'नाह हा कंत तं कहिँ गओ अ-सरणं मं विमुत्तूण अइ-निद्दओ ।२०
वीससिअ[2]-धाय-महदाव-पज्जालणं सुगुरु-आसायणा देव-धण-भक्खणं ।२१
पुव्व-जम्मे मए किं कयं दुक्कयं अकय-अवराह जं जाइ पिउ मिल्हिउं ।२२
पंच उववास काऊण अह चिंतए सरिवि मुणि-वयणु इय अप्पयं बोहए ।
'चलइ जइ मेरु उग्गमइ पच्छिम रवी टलइ नहु पुव्व-कय-कम्मु पुण कहमवी' ।२४
धीरविअ[3] चित्तमह कुणइ सा पारणं छट्ठ-दिणि फलिहिँ कय-देवगुरु-सुमरणं ।
लिप्पमउ बिंबु ठावेवि गुह-अंतरे थुणइ पूएइ मणु ठवइ झाणंतरे ।२६
'रक्खसुदीवु मिल्हेवि जइ गम्मए भरह-खित्तम्मि जिण-दिक्ख गिन्हिज्जए'।
इय विचिंतेवि चिंधं जलहि-तीरए भग्ग-पोअत्त-संसूअगं उब्भए ।२८
वब्बरे[4] कूलि पोएण वच्चंतओ चिंधु पिक्खेवि पिउ-बंधु तहिँ आगओ ।२९
नम्मयं पिच्छिउं पुच्छए वईअरं[5] कहइ रोअंत सा वित्तु जं दुत्तरं ।३०

घत्ता

संबोहिवि जुत्तिहिँ पेम-पउत्तिहिँ वीरदासु तद्-दुह-दुहिउ ।
पवहणि आरोविउ सीलि पमोईउ[6] वँब्बरि[7] गउ नम्मय-सहिउ ॥३१

[३]

वीरदासु तहिँ कूलि नरेसरि पूईउ[8] नमया ठावइ मंदिरि[9] ।१
हरिणी-वेसा तहिँ निवसेई वीर-पासि दासी पेसेई ।२
प्रवहण-प्रति दीणार-सहस्सू निव-पसाइँ सा लहइ अवस्सू ।३
दासि भणइ 'तुम्हि सामिणि वंछइ' वीरु सील[10]-निहि तहिँ नहि गच्छइ ।४
तेत्तिउं[11] धणु पेसइ तसु हत्थिहि हरिणि भणइ 'अम्ह काजु न अत्थिहिँ ।५
वीरदासु एती कल (?) आंणि' भणिति-भंगि तिणि आणिउ प्राणि ।६
खोभिउ हाव-भाव-विन्नाणिहिँ न चलिउ जिम सुर-गिरि बहु-पवणिहिँ ।७

---

१ पणीअं. २ वीससीअ. ३ धीरवीअ. ४ वव्वरे. ५ वईअरं. ६ पमोईउ. ७ वब्बरि. ८ पूईउ. ९ मंदरि. १० सील. ११ तत्तिउ.

वीरु स-दार-तुट्ठु तिणि जाणिउ कवडिहिँ हरिणी सो वक्खाणिउ ।८
वेसं[1] दासि भणइ एगंते 'नारि ज दिट्ठा सिद्धि-गिहंते ।९
भयणि सुआ वा निरुवम-रूवा सा जइ वेस तु हुइँ वसि देवा' ।१०
इअ मंतिवि तिणि मुद्दा-रयणू मग्गिउ अप्पिउ सिद्धि-पहाणू ।११
पडिछंदा[2]-दंसण-मिसि पेसिअ मुद्दा नमया(यं) दंसिअ दासिअ ।१२
'तेडइ तुम्हि एवड-अहिनाणिहिँ वीरदासु[3] आवउ अम्ह भुवणिहिँ' ।१३
नाम-मुद्द पिक्खिवि चिंतिवि बहु सह दासिहिँ नमया आविअ लहु ।१४
हरिणी-गिह-पच्छलि भूमी-हरि पुव्व-सिक्ख तिणि घल्लिअ निट्ठुरि ।१५
मुद्दा दासिहिँ अप्पिअ वीरह नमया दोसु देइ दुक्कम्मह ।१६
उट्ठिउ सिद्धि जाइ निय-मंदिरि ता नहु पिच्छइ नमया-सुंदरि ।१७
घरि वाहिरि पुरि न [ल]हइ सुद्धि भरुयछि गउ कय-वुद्धि स-रिद्धि ।१८
कड्ढिय भूमि-गिहाउ महासइ जाणिउ वीरु गयउ अह दंसइ ।१९
सयल-रिद्धि 'एअह तइँ सामिणि करउँ होसि जइ वेसा भामिणि ।२०
सग्गु एहु ता [मि]ल्हि असग्गहु' हरिणि-वयणु निसुणिवि नमया लहु ।२१
वज्ज-हय व्व भणेइ महासइ 'मह जीवंतिअँ[4] सीलु न नस्सइ ।२२
सीलु सयल-दुक्ख-क्खयँ[5]-कारणु सीलु सिद्धि-सुर-लच्छिहि कम्मणु ।२३
नरय-नयर-गोपुरु वेसत्तणु उत्तम-निंदिअँ[6] तसु किं वन्नणु' ।२४
तं निसुणिवि तज्जइ निब्भच्छइ हरिणी कणइर-कंविहि कुट्टइ ।२५
जइ जल-निहि मज्जाया मिल्हइ तह वि न नम्मय सीलह चल्लइ ।२६
जाइ धरणि-तलु जइ पायालह तुट्टिउ पडइ गयणु जइ मूलह ।२७
तिमिरु तरणि जइ ससि विसु वरिसइ तह वि न नम्मयँ[7]-सीलु विणस्सइ ।२८
ईयँ[8] अ-चलंती वहुहा ताडइ लट्ठि मुट्ठि पुण सत्त न पाडइ ।२९
कुणइ सई परमिट्ठिहि सरणं तसु पभावि हुइ हरिणी-मरणं ।३०
जाणिउ सुद्धि नरिंदु निवेसइ तसु पदि नमया कारणि मन्नइ ।३१
चिंतइ 'मज्झ सीलु नहु भंजइ इंदु वि' अह निवु तहिँ हक्कारइ ।३२
वेसा-गिह-निग्गमु सुंदरु मणि जाणिवि निव-पेसिअ-सुक्खासणि ।३३
आरोहिवि पह-तडि उग्घडियह जंती पडइ मज्झि सा खालह ।३४

१ वसं. २ पडच्छंदा°. ३ वीरुदासु. ४ °जीवंतीअ. ५. °दुक्खयकारणु. ६. °निंदीअ. ७. नमय°. ८. ईय.

कद्दमि तणु लिंपण-मिसि निअ-हिअ गहिअ सील-रक्खणि सन्नाहिअ ।३५
सहमयणिहिं[1](?) पत्तइं किर फाडइ वत्थमिसिणें सा पमुइअें[2] हिअडइ ।३६
लंखइ धूलि भुअंग-त्तासणि नच्चइ गायइ सती-सिरोमणि ।३७
सार मुणिवि निवु गुणिआ पेसइ पाहण-लंखणि ते वित्तासइ ।३८

॥ घत्ता ॥

इय गहिली जाणिय वुद्धि[3]-पहाणिअ मील-सकल डिंभिहिं कलिय ।
निव-पमुहिहिं लोइहिं मुक्क अमोहिहि[4] भणइ थुणइ जिणु अक्खलिय ॥३९

[४]

मित्तह जिणदेवह कहइ वीरु नम्मय-वइअरु[5] तसु खिवइ भारु ।१
भरुअच्छह गच्छइ निय-पुरम्मि जिणदेव पत्तु अह कूलि तम्मि ।२
दिट्ठा नच्चंती[6] विगल-रूव जिणदेवि पुट्ठु 'तउँ किं सरूव' ।३
सा भणइ 'कहिसु वण-चेइअम्मि' अन्नोन्न कहिउ वइअरु[7] वणम्मि ।४
सो वुद्धि देइ सा धरइ चित्ति अह घय-घड फोडइ गहिलिअ त्ति ।५
घय-वणिअ कुणइ निव-पासि राव जिणदेवह कहइ नरिंदु ताव ।६
'ए करइ उवद्दवु घणउ देसि पवहणि आरोहिवि लइ विदेसि' ।७
नरनाह-वयणु मन्नेवि नियलि वंधिवि चडावि पवहणि विसालि ।८
भरुयच्छि वंदाविवि देव नीअ जिणदेवि नमय पिअ-हरि विणीअ ।९
रोअंत कहइ वुत्तंतु सयल पियरिहिं पुरि उच्छवु विहिउ अतुल्ल ।१०
नमया-पुरिअ दस-पुव्व-धारि सिरि-अज्ज-सुहत्थि संपत्तु सूरि ॥११
वंदइ सहदेवु कुडुंव-कलिउ निसुणेवि धम्मु नमयाइ सहिउ ।१२
अह वीरदासु पुच्छइ मुणिंदु 'किं नम्मयाइ किउ कम्म-विंदु[8] ।१३
पुव्विल्ल-जम्मि जं दुक्ख-जुत्त पइ-चत्त जिमंती कह वि पत्त' ।१४
अह कहइ मुणीसरु 'नम्मयाइ[9] एयाइ विंझगिरि-निग्गयाइ ।१५
अहिठायग देवय आसि एह पुव्विल्ल-जम्मि मिच्छत्त-गेह ।१६
पडिमा-पडिवन्नह मुणिवरस्स एगस्स नई-तडि निसि ठिअस्स ।१७
"एए नइ-न्हाणह निंदग"त्ति पढमं पडिकूलुवसग्ग-गत्ति[10] ।१८
पच्छाणुकूल थी-रूव-पमुह कय खोभ-हेउ देवीइ दुसह ।१९

१ °मिसिणि. २ पमुई. ३. वुद्धि°. ४ अमोहिहिं. ५ °वईअरु. ६ नचंति. ७ वईअरु. ८ °विंदु. ९ नम्मयाई. १० गति.

अक्खुहिउ खमावइ सा वि साहु मुणि कहिअ धम्मि तसु बोहि-लाहु ।२०
सा देवि चविवि सहदेव-धूअ हुय नमया-सुंदरि गुणिहिँ गरुय ।२१
पडिकूलिहि तसु हुउ पइ-विओगु अणुकूलि सील-खोहण-पओगु' ।२२
इय निअ-भवु निसुणि[वि भव]-विरत्त चारित्तु लेइ नम्मय पवित्त ।२३
इक्कारसंग-धर-गणहरेण सा ठविय महत्तर-पदि कमेण ।२४
फुड-अवहि-नाण-जुये सह मुणिंदि विहरंत पत्त पुरि कूववंदि[2] ।२५
कउ तीइ महेसरु निव्वियप्पु सर-लक्खणेण निंदेइ अप्पु ।२६
'जाणिज्जइ सत्थ-पमाणि सव्वु तउ नमया जाणिउ पुरिस-रूवु ।२७
मइँ दुट्ठि निकिट्ठि सु-सील चत्त कंता तसु पावह दिक्ख जुत्त' ।२८
नम्मयमुवलक्खिवि चरणु लेइ रिसिदत्त-सहिउ सो तवु तवेइ ।२९
आराहिवि अणसणुँ[3] सग्गि जंति तिन्नि वि अणुवमु सुहु अणुहवंति ।३०

॥ घत्ता ॥

कल्लाणह कुलहर होअउ जय-कर नमयासुंदरि-संधि वर ।
अब्भत्थणि संघह रइअ[4] अणग्घह पढंत-सुणंतह उदय-कर ॥३१

*

सरिआँ वि सील-जुन्हा जीसे सुकयामएण तिय-लोअं ।
सिंचइ बीइंदु-कल व्व नम्मया जयइ अ-कलंका ॥

१३ २८
तेरस-सय-अठवीसे वरिसे सिरि-जिणपहु-प्पसाएण[6] ।
एसा संधी विहिया जिणिंद-वयणाणुसारेणं ॥

१ जूय. २ कूविचंदि. ३ अणुसणु. ४ रईअ. ५ सिरियातीउ. ६ पसाएण.

अन्तः ॥ श्रीनर्मदासुंदरीमहासतीसंधि समाप्ता ॥

सील-संधि

[कर्ताः जयशेखरसूरि-शिष्य रचना-समयः १५वीं शताब्दी लेखन-समयः ई.स.१४३७]

सिरि-नेमि-जिणिंदह पणय-सुरिंदह पय-पंकय समरेवि मणि ।
वम्मह-उरि-कीलह कय-सुह-मीलह सीलह संघथ (?) करिस हउँ ॥१

[१]

जे सील धरइ नर निरईयार तव-संजम-नियमह मज्झि सारु ।२
इह जम्मवि सिरि-कित्तिहि सणाहु विप्फुरइ समीहिय सिद्धि ताह ।३
दीहाउ महा-यस इद्धिमंत अहमिंद महा-बल तेयवंत ।४
अक्खंड सील धरि भविय सत्त सुर-सुक्ख लहइ पर-लोइ पत्त ।५
तित्थयर-चक्कि-बल-वासुदेव सुर-खयर-नरिंदिहि विहिय-सेव ।६
अन्ने वि जे तिहुयण-सिरि-निहाण ते सील कप्प-तरु-कुसुम जाणि ।७
भुंजेविणु सुर-नर-खयर-भोग आजम्म-काल-गय-रोग-सोग ।८
अक्खंड-सील-सोहिय-सरीर निव्वा[ण]-सुक्ख लहु लहइ धीर ।९
सो दाण सव्व-किरिया-पहाण तव स ज्जि सयल-सुक्खह निहाण ।१०
सा भावण सिव-साहण-समत्थ अक्खंड धरिज्जइ सील जेत्थ ।११
महिलउ जाउ परिरक्खियाउ भज्जाउ बंभ-वय-धारियाउ ।१२
ताउ व्व जंति सुर-लोय चंगि जिण भासइ पन्नवणा-उवंगि ।१३
जं [५१९A] कलि-उप्पायण जण-संतावण नारय-पमुह वि सिद्धि गय ।
निम्मूलिय-हीलह निम्मल-सीलह तं पयाव पसरइ पयड्ड ॥१४

२

निविड-सीलंग-सन्नाह सन्नद्धया रमणि-जण-नयण-वाणेहिँ जि न विद्धया ।१५
चत्त-गिह-वास सिव-सुक्ख-संपइ-कए तेसि पणमामि भत्तीइ पय-पंकए ॥१६
तिव्व-तवचरण-तित्थ-वय-रस-पोसिणा वहु वि दीसंति लोयम्मि सु-महेसिणा ।१७
गरुय-सीलंग-भर-वहण-कय-निच्छया विरल किवि अत्थि पुण सुक्ख-तल्लिच्छया ॥१८
जे वियाणंति धम्मस्स तत्तं जणा सग्ग-अपवग्ग-संपत्ति-कय-निय-मणा ।१९
रमणि-जण-रूव-लावन्न-वक्खित्तया ते वि भव-भीय बंभम्मि चल-चित्तया ॥२०
कोडि-सिल मि हु बाहाहिँ जे धारही वलिण दप्पिट्ठ नर खयर वसिकारिही ।२१

---

१. ६. २ °निरिंदिहि. ७. २ कप्पु. १०. २ °सुखह. १४. ४ निम्मूलीय°. १५. १ निवड. १६. २ भत्तीय पइ°. १७. १ निच्छ°.

विसमसर-पसर-झड-भग्ग-सव्वायरा ते वि सीलंग-भर-वहण-अइकायरा ॥२२
सीसु नामंति जे कस-वि नहु अत्तणो सुहड-भडवाय-पडिभग्ग-पडिसत्तुणो ।२३
राग-निविडेण मयणेण पुण दामिया ते वि अबलाण पाएसु नर नामिया ॥२४
बंभ चउ-वयण किउ रुद्द नच्चाविओ इंद सहसक्ख तवणो वि तच्छाविओ ।२५
सयल सुर विसय-जंतेण इय घल्लिया मयण-मल्लेण इक्खु व्व संपिल्लिया ॥२६
नाणवंतं वि तव-तविय-निय-देहया तिव्व-भावेण परिचत्त-धण-गेहया ।२७
राग-गहगहिय पुण विस्समित्ताइणो लोय-पयडा वि अव्बंभ-पडिसेविणो ॥२८
सेणिय-निव-पुत्त वि अइसय-जुत्त वि नंदिसेण जिण-सीस जह ।
हूउ विसयासत्तउ इंदिय-जित्तउ ता धरित्थ इंदिय-बलह ॥२९

३

गुरु-वयण-अमिय-रस-सित्त-अंग वेरग्ग-खग्ग-हय-सयल-संग ।३०
वम्मह-मय-भंजण-दढ-पइन्न अक्खंड-सील पालइँ ति धन्न ।३१
मयरद्धय-सवल-समीरणेण सुरगिरि-गुरुयाण वि चालणेण ।३२
सील-द्दुम कंपिय नेव जाह गुरु-भत्तिहि पणमउँ पाय ताह ।३३
उब्भड-नवजुव्वण-आण-सज्ज नव-रंग चत्त जिणि अट्ठ भज्ज ।३४
मोहारि-अगंजिय सिद्धि-गामि सो जयउ जयउ जगि जंबु-सामि ।३५
वेसा-घरि छहि रसि रिसि अहारु वीससवि (?) तिहुयण-मल्ल-मारु ।३६
झाणग्गि दहवि जिणि तसु विणासु किय थूलभद्द पइ नमउँ तासु ॥३७
रहनेमि प[५२०A]राजिय विसय-अग्गि पडिवोहवि ठाविय जीइ मग्गि ।३८
सा सीलवंत उगसेण-धूय सीलिण तिहु भुवणहि पयड हूय ॥३९
अभयादेवि संकडि पाडिएण मणसा वि न लंघिय सील जेण ।४०
महमहइ महारिसि-मज्झि जस्स जस-परिमल सिद्धि-सुदंसणस्स ॥४१
निय सील-भंगि भय-भीरुयाहिँ अवि रज्ज-लच्छि परिचत्त जाहिँ ।४२
ते नम्मय-सुंदरि मयणरेह धुरि लहइ महासइ-मज्झि रेह ॥४३
निय कंतु मुत्त सुमणे वि जाउ पर-पुरिस न कंखइ इत्थियाउ ।४४
उवसग्ग-संगि निव्वडिय सत्त जाउ वि महासइ जिणिहि वुत्त ॥४५
सुभद्दा रय-सुंदरि अंजण-सुंदरि दोवइ-दवदंती-पमुह ।
गुण-रयण-समिद्धिय भुवण-पसिद्धिय जयइ महासइ सील-धर ॥४६

२०. १ वखित्तिया; २ चत्तिया. २२. २ अय. २३. २ पडिसत्तणो. २४.१ निवडेणे. २५. १ निच्चाविओ. २९. २ अयसय. ३१.१ पयन्न. ४२. १ नीय. ४३.२ लहय महासय. ४५.२ महासय.

४

अहह पेच्छह सीलस्स माहप्पयं राम-भज्जाय अइ अच्छरिय कप्पयं ।४७
पाय फरिसेवि फिट्टेवि जं पावओ नीरु लहु लहइ रोगग्गि-उल्हावओ ।४८
रोग-जल-जलण-विस-भूय-गह-मग्गया सीह-करि-सप्प-चोरारि-उवसग्गया। ४९
मारि-डमरारि-भय-करण जे देसई सीलवंताण नामेण ते नासई ।५०
आउ अइ-दीह रोगेहि परिचत्त[५२०B]या रूव-लावन्न-सोहग्ग-बल-जुत्तया ।५१
जं च अन्नं पि अभिराम जगि गज्जई सीलवंताण तं सयल संपज्जई ॥५२
पणय-नीसेस-खयरिंद-नर-सामिओ निययनू(?)वलिण इंदो वि जिणि नामिओ ।
अन्न-रमणीय कय-चित्त लंकावई करवि कुल-नासु सो पत्तु अहर-ग्गइ ।५४
नरय-भवि अगणि-पुत्तलिय-परिरंभणं तिरिय-जोणीसु संढत्त-वह-बंधणं ।५५
मणुय-जम्मम्मि दोहग्ग-छवि-छेयणं .... ॥५६
मणुय-जम्मम्मि सरइब्भ-चंचलतरे गिरि-नई-वेग-सरिसम्मि जुव्वण-भरे ।५७
असुय-तुच्छेसु विलएसु नर लुद्धया मुक्ख-सुक्खाइ हारंति ही मुद्धया ॥५८
सुहम-नव-लक्ख-जीवाण-संहारणं देह-धण-कित्ति-धम्माण खय-कारणं ।५९
सयल-दुह-मूल-महुबिंदु-सम-सुक्खयं विसय-सुह चयहु अहिलसउ जइ मुक्खयं।६०
विसय-विस-सील-अमियाण फल बुज्झिओ सील-भद्दाण संसग्गिम वि उज्झिओ ।६१
सुद्ध सीलम्मि ठावेह अप्पाणयं जेम अचिरेण पावेह निव्वाणयं ॥६२
इय सीलह संधी अइय सुबंधी जयसेहर-सूरि-सीस-कय ।
भवियह निसुणेविणु हियइ धरेविणु सील-धम्मि उज्जम करहो* ॥६३

---

५३. १. खयरंद, सामीउ. ५५. १. °पुत्तलीय° ६०. २. जय. ६३. २. °अई.
* अन्तः सीलसंधि समाप्तः.

भरहेसर-बाहुबलि-घोर

कर्ता : वज्रसेन **रचना-समय :** ११६६ के लगभग

पहिलउँ रिसह-जिणिंदु नमेवि ।
भवियहु ! निसुणहु रोलु धरेवि ।
बाहूबलि-केरउ विजउ ॥१

सयलह पुत्तह राणिव देवि ।
भरहेसरु निय-पाटि ठवेवि ।
रिसहेसरु संजमि थियउ ॥२

वरिसु जाउ दिणि दिणि उपवासु ।
मूनिहि थाकउ वरिस-सहासु ।
ईव रिसहेसरि तपु कियउ ॥३

तो जुगाइदेवह सु-पहाणु ।
उप्पन्नं वर-केवल-नाणु ।
चक्क-रयणु भरहेसरह ॥४

भरहेसरु जिण वंदण जाइ ।
रिद्धि नियंती अंगि न माइ ।
मरुदेवी केवलु लहए ॥५

तो चक्की दिगविजउ करेवि ।
भरहेसरु राणा मेलेवि ।
अवझा-नयरिहि आइयउ ॥६

तो सेणावइ कहियं 'देव ।
अज्जिउ आउह-सालह एव ।
चक्क-रयणु नवि पइसरइ' ॥७

भरहु भणइ 'कु न मन्नइ आण ?'
'देव ! बंधु सवि खंध-सवाण ।
बाहूबलि पुण आगलउ' ॥८

'बंधु बाहु ! तुम्हि आजु-इँ आजु ।
करउ आण, कय छंडउ राजु' ।
भरहिं दूय पठावियउ ॥९

मूल प्रति के अशुद्ध पाठः १. ३. बहुवलि. १ दिणि २. २. ४. २ चक्कु. १. २. अंगी. ६. १. थक्की दिग्गुविजउ करेइ.

तो वंधव गय तायह पासि ।
सव्वे केवलि हुय गुण-रासि ।
बाहूवलि मंडिउ थियउ ॥१०

[२]

पहु भरहेसरि एव बाहूवलिहि कहावियउँ ।
'जइ वहु मन्नहि सेव तो प्रवणउ संग्रामि थिउ' ॥११
गरुयाह एक-इ नाँव दूबोलिहिँ गंजण चडीँय ।
सो बाहूवलि ताँव दूवउ गलइ लियावियउ ।१२
सो बाहूवलि-वाणि संभलेवि अवझह गयउ ।
भरह-तणइ अत्थाणि पणमेविणु दूअउ भणए ॥१३
'मइँ लाधं तहि ठावि मउडि महेसरु जं करइ ।
अवरु इँ साँभलि सामि बाहूवलिहिँ कहावियउँ : ॥१४
रवतह गाँगह तीरि दडउ जेव उच्छालियउ ।
घाउ म होउ सरीरि पडतउ दय करि झालियउ ॥१५
तं वीसरियं आजु भरहेसरु मय-भिंभलउ ।
जइ करि लाधउँ राजु त कि अम्हि सेव मनाविसइ ॥१६
गंग सिंधु दुइ राँड अनु जइ नाहल साहिया ।
ए तीणइ छ-इ खाँड जीतउँ मानइ भामटउ' ॥१७
एरिस वयणु सुणेवि 'विलि विलि हुंति न गोहडीँय ।
अंगूठइ टेरेवि बाहूबलि बाहा-बलिहिँ' ॥१८
एत्थंतरि नह-मागि आवेविणु नारउ भणए ।
'तलि महियलि अरु सागि नउ थी बाहूबलि-सवउ' ॥१९

[३]

कोवानलि पज्जलिउ ताव भरहेसरु जंपइ ।
'रे ! रे ! दियहु पियाण ढाक जिम महियलु कंपइ ॥२०
गुलगुलंत चालिया हाथि नं गिरिवर जंगम ।
हिंसा-रवि बहिरिय-दियंत हल्लिय तुरंगम ॥२१

---

७. ३. चक्कु. ८. २ मनइ. ११. २. मंनहि. १२ १ वडीय. १२. २. दूवो०
१३. ३. अथाणि. १५. २. दडउ । जव उछा.

धर डोलइ खलभलइ सेनु दिणियरु छाईजइ ।
भरहेसरु चालियउ कटकि कसु ऊपमु दीजइ ॥२२
तं निसुणेविणु बाहूवलिण सीवह गय गुडिया ।
रिण-रहसिहिँ चउरंग-दलिहि विउ पासा जुडिया ॥२३
अति चाविउँ पाँडरं होइ अति ताणिउ त्रूटइ ।
अति मथियँ होइ कालकूटु अति भरियं फूटइ ॥२४
मंडलियहु वाहुवलि भणइ 'मन मरइ अखूटइ ।
जो भुयदंडह पडइ पासि सो किम्वइ न छूटइ' ॥२५
देवसूरि पणमेवि सयल-तियलोय वदीतउ ।
वयरसेणसूरि भणइ एहु रण-रंगु जु वीतं (?) ॥२६

[४]

ता पहिलइ रिण-रंगि ए अनलवेगु तहि झूझियउ ।
पडियउ भंगोभंगि आगिवाणि भरहह तणए ॥२७
काहं लया कूच काहं माथा मूडिया ।
के-वि किया खर-छूच विज्जाहरि विज्जा-वलिहिँ ॥२८
इण परि जउ भडवाउ मउडबधा ऊतारियउ ।
तउ भरथेसरु राउ आपणि ऊटवणिय करए ॥२९
तावह विज्जु-पयंडु अनलवेगु नहयलि गयउ ।
मोडिवि ए तिणि धय-दंडु भरहेसरु विलखउ कियउ ॥३०
चक्किहि ए छिंदइ सीसु भरहेसरु विज्जाहरह ।
इण रण-रंगि जु वीतु देवाह इँ नइ वीसरइँ ॥३१
तो वहु ए जीव-संहारु देखेविणु वाहूवलिण ।
भणियं पर-वल-सारु 'मुज्झु वि तुज्झु वि लागठउ ॥३२
जइ बूझिसि तो बूझि (?) काइँ माँडलिए मारिए ।
पहरण-पाखइ झूझु अंगोअंगिहि कीजिसइ' ॥३३
तउ धुरि ए जोवंताह आखिहि पाणिउँ आइयउँ ।
वादिहि ए वोलंता[ह] भरथह पडिऊतरु नहि ॥३४

२१- २. जहिरिय, हल्लिया. २३. १. तिसुणे; २. रहसिंहि. २६. १. सयलु. अंतः २५ छ. २८. २ वलिहिं ५.. ३२ ४. मुझु, तुझु. ३४. ३. वोलंतां.

झूझवि ए भुअ-दंडेहिँ   मल्ल-झूझु तहिँ निम्मियं ।
मूठिहिँ अरु दंडेहिँ (?)   भरहु जीतु बाहूबलिहिँ ॥३५
तो चिंतइ स-विसाउ   जो दाइयहँ दूवलउ ।
त कि हउ [पुहवी]राउ   चक्क-रयणु तह सुमरियं ॥३६
करयलि चक्कु धरेवि   जाल-फुलिंगा मेल्हतउँ ।
मूकउँ बलि आवेवि   प्रहवइ नाहइँ गोत्रियह ॥३७
तावहँ भणइ हसेवि   बाहूबलि भरहेसरह ।
'एक हछूमट (?) देवि   चक्क-रयणि सउ निद्दलउँ ॥३८
पुण त भट्ठ-पयन्नु   तउ मइँ मूकउ जीवतउ ।
मइ पुण किउ सामन्नु'   पंचह मूठिहि लोचु किउ ॥३९
तो पाए लागेवि   भरहेसरि मन्नावियउ ।
'बंधव ! मुज्झु खमेहिँ   तइँ जीतउँ, मइँ हारियउँ ॥४०
ऊतरु ताव न देइ   बाहूबलि भरहेसरह ।
राणे सरिसउ ताव   भरहेसरु घरि आइयउ ॥४१

[५]

पहु भरहेसरि राइँ ए   रिसह-जिणेसरु पूछियउँ ।
'हं बाहूबलि-भाइ ए   सामिय ! काइ हरावियउ' ॥४२
तउ महुरक्खर-वाणि ए   रिस[ह]नाहु एहु वज्जरए ।
'कारणु अवरु म जाणि ए   पुव्व-कियं परि परणमए ॥४३
पंच पूत अम्हि आसि ए   वयरसेण-तित्थंकरह ।
राजु करिवि तहिँ पासि ए   तपु किउ अम्हि निम्मलउ ॥४४
मइँ तहिँ तित्थयरत्तु   तइँ पुणु बाधउ भोग-फलो ।
मुणिहिं मलेविणु गातु ए   × × × × बाहूबलिहिँ' ॥ ४५
बंभी सुंदरि बे-वि ए   माया-करि हूई जुवए ।
भवियहु ! इहु जाणेवि ए   माया दूरिं परिहरउ ॥४६
बाहूबलिहू नाणु ए   माणि पणट्ठइं तउ हुयउँ ।
अवरु म करिसउ माणु ए   वयरसेण-सुरि वज्जरए ॥४७
भावण तिव भावेउ ए   जिव भावी भरहेसरिहिँ ।
तउ केवलु पावेहु ए   राजु करंता तेण जिव ॥४८॥

*

---

३५. १. झूझु वि. ३५. २ निंमियं. ३६. २. दाइहहं. ३७. ४. प्रवहइ. ३९ ३. सामनु. ४०. २. मंना. ४१. २ हारावियउ. ४३. २. वज्झरए. ४४. २. वायरसेण. ४५. १. वाधउ. पुष्पिकाः भरहेसरबाहूबलिघोर समाप्तः ।

जीवदया-रास

[कर्ता : आसिग   रचना-समय : १२०१]

उरि सरसति आसिगु भणइ   नवउ रासु जीवदया-सारु ।
कन्नु धरिवि निसुणेहु जण!   दुत्तरु जेम तरहु संसारु ॥१

जय जय जय पणमउ सरसत्ती   जय जय जय दिवि पुत्थाहत्थी ।
कसमीरह मुख-मंडणिय   तइँ तुट्ठिइ हउ रयउ कहाणउँ ।
जालउरउ कवि वज्जरइ   देहा-सरवरि हंसु वखाणउँ ॥२

पहिलउ अक्खउँ जिणवर-धम्मु   जिम सफलउ हुई माणुस-जम्मु ।
जीव-दया परिपालिजएँ   माय बप्पु गुरु आराहिज्जइ ।
सव्वह तित्थह तरुवरहँ (?)   घरिवइ (?) छाही-फलु पावीजइ ॥३

देव-भत्ति गुरु-भत्ति अराहहु   हियडइ अंखि धरेविणु चाहहु ।
धणु वेचहु जिणवर-भवणि   खाहु पियहु नर! बंधहु आसा ।
काया-गढ तारुण्ण-भरि   जं न पडहिँ जम-देवहँ पासा ॥४

सारय-सजल-सरिसु पर धंधउ   नालिउ लोउ न पेखइ अंधउ ।
डुंगरि लग्गइ दव हरणि   तिम माणुसु बहु दुक्खहँ आलउ ।
डज्झइ अवगुण-दोसडइ   जिम हिम-वणि वण-गहणु विसालउ ॥५

नालिउ अप्पउ अप्पइँ दक्खइ   पायहँ हिट्ठि बलंतु न पिक्खइ ।
गणिया लब्भहिँ दिवसडइँ   जं जि मरेवउ तं वीसरियउ ।
दाणु न दिन्नउ तपु न किउ   जाणंतो वि जीउ छेतरियउ ॥६

अरि जिय ! यउ चिंतिवि करि धम्मु   वलि वलि दुल्लहु माणुस-जम्मु ।
नत्थि कोइ कासु वि तणउँ   माय ताय सुय सज्जण भाई ।
पुत्त कलत्त कुमित्त जिम   खाइ पियइ सवु पच्छइ थाई ॥७

धणि मिलियइ बहु मग्गणहारे   किं तसु जणणिहि किं महतारे ।
किं केतउ मागइ घरणि   पुत्तु होइ प्राणी णेइ लेसइ ।
विहचण-वारहँ पत्तगहँ   बोलाविउ को सादु न देसइ ॥८

अशुद्ध पाठ : १. २. जीवादय°. १. ३. कंनु. २. ४ तुट्ठी. ३, २. जंमु. ३. ४ °हिजइ. ४. ३, घणु. ६. १. अप्पओ. ६. २. वलंतु. ६. ५. दिंनउ. ७. १. धंमु. ७. २. दुलहु, °जंमु. ७. ४. भाय. ८. १. वहु.

जणणि भणइ मइँ उयरहँ धरियउ बप्पु भणइ महु घरि अवतरियउ ।
अणखाइय महिलिय भणइ पातग-तणइ न मारगि जाउं ।
अरथु धरमु विहँचिवि लियउँ विदि नत्थी पतु घडसइ न्हाउँ (?) ॥९

यउ चिंतिवि निय-मणिहि धरिज्जइ झुट्टी साखि न कासु वि दिज्जइ ।
आलिं दिन्नइ आल-सउ जउ अजु हुवउ काल्ह न होसइ ।
अनु चिंतंतह अन्नु हुइ धंधइ पडियउ जीउ मरेसइ ॥१०

पुडइ निपन्न जेम जल-बिंदु तिम संसारु असारु समुंदु ।
इंदियालु नड-पिक्खणउ जिम अंबरि जलु वरिसइ मेहु ।
पंच दिवस मणि छोहलउ तिम यहु प्रियतम-सरिसउ नेहु ॥११

अरि जिय ! परतहँ पालि बंधीजइ जीविय-जोवण-लाहउ लीजइ ।
अलियउ कह वि न बोलिजइ सुद्धइ भाविहि दीजइ दाणु ।
धम्म-सरोवर विमल-जलु झडइ पाउ निय-मणि यउ जाणु ॥१२

पंच दिवस होसइ तारुन्नु झडइ देह जिम मंदिर सुन्नु ।
जाणंतो वि य जाणइ य दिक्खंताह इ तोइ पयाणउ ।
वड्डहँ संवलु नहु लयउ आगइ जीव किसउ परिमाणु (?) ॥१३

दिवसे मासे पूजइ कालु जीउ न छूटइ विरधु न बालु ।
छडउ पयाणउ जीव तुहु साजणु मित्तु बोलावि वलेसइ ।
धम्मु परत्तह संबलउ जंता-सरिसउ तं जि चलेसइ ॥१४

अरि जिय ! जइ वूझहि ता वूझु वलि वलि सीख कु दीसइ तूझु ।
वारि मसाणिहि चिय वलइ कुडि दाझंती गंधि न आवइ ।
पाव-कूव-भिंतरि पडिउ तिणि जिण-धम्मु कियउ नवि भावइ ॥१५

जिम कुंभारिं घडियउ भंडु तिम माणुसु कारिमउ करंडु ।
करतारह निप्पाइयउ अट्टुत्तर सउ वाहि-सयाइं ।
जिम पसुपालह खीरहरु पुट्ठिहि लग्गउ हिंडइँ ताइँ ॥१६

देहा-सरवर-मज्झिहि कमलो तहि वइठउ हंसा धुरि धवलो ।
काल-भमरु ऊपरि भमइ आउ-खए रस-गंधु वि लेसइ ।
अणखूटइ नहु जिउ मरइ खूटा-ऊपर घरी न देसइ ॥१७

---

१०. ३. दिंनइ. १०. ५. अनु. ११. १. निपंन, विंदु ४.अंवरि, १२. १ वंधी°. १२. ३. वोलि°. १२. ५. संवलु १४. २. वालु. १४. ५. संवलओ, १५.१ वूझहि. १५. ३. वलइ. १६. २. करंडु. १६. ५ पमुयालह. १७. १. कमलु. १७. ३. कालु. १७. ६. दीसइ.

नयर-पुव्व आया वणिजारा   जण-णिसमाणु अरिहि परिवारा (?)।
धम्म-कयाणउँ ववहरहु   पाव-तणी भँडसाल निवारहु ।
जीवह-लोहु समग्गलउ   कुम्मारगि जणु जंतउ वारहु ॥१८

एगिंदिय रे जीव ! सुणिज्जइ   वेइंदिय नवि आसा किज्जइ ।
तेइंदिय नवि संभलइ   चउरिंदिय महि-मंडलि वासु ।
पंचिंदिय तुहुँ करहि दय जिण-धम्मिहि कीजइ अहिलासु ॥१९

धम्मिहिँ गय-घड तुरियहँ थट्ट   मय-भिमल कंचण कसवट्ट ।
धम्मिहिँ सज्जण गुण-पवर धम्मिहिँ रज्ज रयण-भंडार ।
धम्म-फलिण सु-कलत्त घरि वे-पक्ख-सुद्ध सील-सिँगार ॥२०

धम्मिहिँ मुक्ख-सुक्ख पाविज्जइ धम्मिहि भव-संसारु तरिज्जइ ।
धम्मिहिँ धणु कणु संपडइ धम्मिहिँ कंचण- आभरणाइं ।
नालिय जीउ न जाणइ य ए सहि धम्महँ तणा फलाइं ॥२१

धम्मिहि संपज्जइ सिणगारो   करि कंकण एकावलि हारो ।
धम्मि पटोला पहिरिजहिँ   धम्मिहि सालि दालि घिउ घोलु ।
धम्म-फलिण चितसालियइँ   धम्मिहिँ पान-बीड तंबोलु ॥२२

अरि जिय ! धम्मु इक्कु परिपालहु नरय-वार-किवाडइँ तालहु ।
मणु चंचलु अविचलु करहु कोहु लोहु मउ मोहु निवारहु ।
पंच बाण कामहँ जिणहु   जिम सुह-सिद्धि-मग्गु तुम्हि पावहु ॥२३

सिद्धि-नामि सिद्धि-वर-सारु   एकाएकिं कहउ विचारु ।
चउरासी लक्ख जीव-जोणि जीवह जो घल्लेसइ घाउ ।
अंत-कालि दू-संमरइ   अंगि कोइ तसु होइहि दाहु ॥२४

अरु जीवइँ अस्संखइ मारइँ   मारोमारि करइ मारावइ ।
मुच्छाविय धरणिहिँ पडइ जीउ विणासिवि जीतउ मानइ ।
मच्छ गिलिग्गिलि पुणु वि पुणु दुख सहइ ऊथलियइ पन्नइ (?) ॥२५

पन्नउँ जउ जगु छन्नउँ मन्नउ   कूवह संसारिहि उप्पन्नउँ ।
पुन्न म सारिहि कलि-जुगिहिँ ढीलइ जं लीजइ ववहारु ।
एकहँ जीवहँ कारणिण   सहस लक्ख जीवहँ संहारु ॥२६

---

१८. ६ कुंमारगि. १९. ४ °मडलि. १९. ५. करहिं. २१. २. तरीजइ. २१. ३. संपडइं. २२. २. हारु. २२. ५. धम्मि. २३. २ °वारि. २३. ४. मय. २३. ५. कामहिं. २४. ६. होइहु. २६. १ मंनउ २६ २ उप्पनउं.

वरिसा सउ आऊखउ लोए   असी वरिस नहु जीवइ कोई ।
झूठी कलि आसिगु भणइ   दया-राजि नय नय अवतारु ।
धम्मु चलिउ पाडलिय-पुरे   एका (?) कालु कलिहि संचारु ॥२७

माय भणेविणु विणउ न कीजइ   बहिणि भणिवि पावडणु न कीजइ ।
लहुड बडाई हाइ तिय   मुक्की लाज समुद मरजाद ।
घर घरिणिहिँ वीयापियइँ   पिय-हत्थि धोवावइ पाय ॥२८

सासुव वहुव न चलणे लागइ   हत्थाह इ पाडउणइ मागइ (?) ।
ससुरा-जिट्ठह नवि टलइ   राजि करंती लाज न भावइ ।
मेलावइ साजण-तणइँ   सिरि उग्घाडइ बाहिरि धावइ ॥२९

मित्तिहि मुक्का मित्ताचारा   एकहि घरणिहिँ दुइ रखवाला ।
जे साजण ते खल थियइँ   गोती चूका गोताचारा ।
हाणि-विधि-वड्ढावणइँ   विहुरहिँ वार करहिँ नहु सारा ॥३०

कवि आसिग कलि-अंतरु जोइ   एक-समाण न दीसइ कोइ
के नर पाला परिभमहि   के गय-पुट्ठि चडंति सुखासणि ।
केई नर कट्ठा वहहि   के नर बइसहिँ राय-सिंहासणि ॥३१

के नर. सालि दालि भुंजंता   घिय घलहलु मज्झे वि लहंता ।
के नर भूखा-दूक्खिय इँ   दीसहिँ पर-घरि कम्मु करंता ।
जीवंता वि मुया गणिय   अच्छहिँ वाहिर-भूमि रुलंता ॥३२

के नर तंबोलु वि सम्माणहिँ   विविह भोय रमणिहिँ सउँ माणहिँ ।
के वि अपुन्नइँ बप्पुडइँ   अणहुंतइ दोहला करंता ।
दाणु न दिन्नउ अन्न-भवि   ते नर पर-घर-कम्मु करंता ॥३३

आसेवंता जीव न जाणहिँ   अप्पहिँ अप्पउ नहु परियाणहि ।
चंचल जीविउ धुय मरणु   विहि विद्धाता वसइ उसीसइ ।
मूढ! धम्मु परजालियइ   अजरु अमरु कलि कोइ न दीसइ ॥३४

नव निधान जसु हुंता वारि   सो बलि-राय गयउ संसारि ।
बाहूबलि बलवंतु गउ   धण-कण-जोवण करहु म गारउ ।
डुंबह घर पाणिउ भरिउ   पुहविहि गयउ सु हरिचंदु राउ ॥३५

---

२७. १ आऊपउ. २७. ५. धंमु. २९. १ वहूव, लग्गइ. ३१. २. दीसई. ३१. ३. नरि. ३२. १ नालि. ३२. ३. भूपादूषिय. ३२. ४ कंमु. ३२. ५ जीवता. ३२. ५ लंता. ३३. ३. अपुंनइ. ४. अणुहुंतइ ५. दिन्नउ अंन्न. ६. कंमु. ३४. २ अप्पाउं. ३५. ४ जोयण.

गउ दसरथु गउ लक्खणु रामु हियडइ धरउ म कोइ विसाओ।
वार वरिस वण सेवियउ लंका राहवि किय संहारु।
गइय स सीय महा-सइय पिक्खहु इंदियालु संसारु ॥३६

जसु घरि जमु पाणिउ आणेई फुल्ल-पयरु जसु वणसइ देई।
पवणु बुहारइ जसु उवहि करइ तलारउ चामुड माया।
खूटइ सो रावणु गयउ जिणि गह बद्धा खाटहँ पाए ॥३७

गउ भरथेसरु चक्क-धुरंधरु जिणि अट्ठावइ ठविय जिणेसरु।
मंधाता नलु सगरु गओॅ गउ कउरव-पंडव-परिवारो।
सेत्तुञ्जा-सिहरिहिँ चडिवि जिणि जिण-भवण कियउ उद्धारो ॥३८

जिणि रणि जरासिंधु विद्दारिउ अहि-दाणवु वलवंतउ मारिउ
कंस केसि चाणूरु वहि ऊजिलि ठवियउ नेमिकुमारु
बारवई-नयरिय धणिउ कहहि सु हरि गोविहि भत्तारु ॥३९

जिणु चउवीसमु वंदिउ वीरु कहहि सु सेणिउ साहस-धीरु।
जिण-सासणह समुद्धरणु विहलिय-जण-बंदिय-सद्धारु।
रायग्गिह वर-नयरियहँ बुद्धिमंतु गउ अभयकुमारु ॥४०

पाउ पणासइ मुणिवर-नामिं वयरसामि तह गोयमसामि।
सालिभद्द संसारि गउ मंगलकलस सुदरिसण सारो।
थूलभद्दु सतवंतु गओॅ धिगु धिगु यहु संसारु असारु ॥४१

गउ हलहरु संजम-सणगारु गयसुकुमालु वि मेहकुमारु।
जंवुसामि गणहरु गयउ गउ धन्नउ ढंढणह कुमारु।
जउ चिंतिवि रे जीव! तुहुँ करि जिण-धम्मु इक्कु परिवारो ॥४२

जिणि संवच्छरु महि अंबाविउ अंवरि चंदिहिँ नामु लिहाविउ।
ऊरिणि की पिरिथिमि सयल अनु पालिउ जिणधम्मु पवित्तु।
उज्जेणी-नयरी-धणिउ कह अजरामर विक्कमादीतु ॥४३

गउ अणहिलपुरि जेसलु राउ जिणि उद्धरियलि पुहवि सयाउ।
कलिजुग कुमर-नरिंदु गउ जिणि सव-जीवहँ अभउ दियाविउ।
उत्रएसिहिँ हेमसूरि-गुरु अहिणव कुमरविहारु कराविउ ॥४४

---

३८. ५ सेत्तुजा. ३९. ३. कहि. . ५ धणिउ. ४०. १ दंदिउ. ४१. २. °सामि. ४२. १. णगारु. ६. जिणु ४४. ५. कुमरु विहारु.

इत्थंतरि जण ! निसुणहु भाविं करहु धम्मु जिम मुच्चहु पार्वि ।
इहि संसार-समुद्द-जलि तरण-तरंड सयल तित्थाइं ।
वंदहु पूयहु भविय-जण ! जे तियलोए जिण-भवणाइं ॥४५
अट्ठावइ रिसहेसरु वंदहु कोडि दिवालिय जिम चिरु नंदहु ।
सित्तुज्जहँ सिहरिहि" चडिवि अच्चउँ सामिउ आदि-जिणिंदु ।
आबुइ पणमउ पढम-जिणु उम्मूलइ भव-तरुवर-कंदु ॥४६
ऊजिलि वंदहु नेमिकुमारु नव भव तिहुयणि तरहि सँसारु ।
अंबाइय पणमेहु जण अवलोयणा-सिहरि पिक्खेहु ।
विसम तुंग अंबर-रयणाॅ वंदहु सम्बु पजुन्न इँ वेउ ॥४७
थुणउ वीरु सच्चउरहँ मंडणु पाव-तिमिर-दुह-कम्म-विहंडणु ।
वंदउ मोढेरा-नयरि चडावल्लि-पुरि वंदउ देउँ ।
जे दिट्ठउ ते वंदियउ विमल-भावि दुइ कर जोडेऊ ॥४८
वाणारसि-महुरह जिणचंदु थंभणि जाइवि नमहु जिणिंदु ।
संखेसरि चारोप-पुरि नागदहि फलवद्धि-दुवारि ।
वंदहु सामिउ पास-जिणु जालउरा-गिरि कुमरविहारि ॥४९
कासु वि देह डहइ दालिद्दु कासु वि तोडइ पावह कंदु ।
कासु वि दे निम्मल नयण खासु सासु खंपणु फेडेई ।
जसु तूसइ पहु पास-जिणु तासु रि ! नव निधान दरिसेई ॥५०
वाला-मंत्रि-तणइ पाछोपइ वेहल महि नंदन महि रोपइ (?) ।
तसु सक्खहँ कुलचंद फलु तसु कुलि आसाइतु अच्छंतु ।
तसुवलहिय पल्ली पवर कवि आसिगु बहु-गुण-संजुत्तु ॥५१
सातउ परिया कवि जालउरउ माउसालि सुम्मइ सीयलरउ ।
आसी दवदोही वयण (?) कवि आसिगु जालउरह आयउ ।
सहजिगपुरि पासहँ भवणि नवउ रासु इहु तिणि निप्पाइउ ॥५२
संवतु बारह सय सँत्तावन्नइ विक्कम-कालि गयइ पडिपुन्नइ ।
आसोयहँ सिय-सत्तमिहि" हत्थोहत्थि जिण निप्पायउ ।
संतिसूरि-पय-भत्तयरि रयउ रासु भवियहं मणमोहणु ॥५३

*

---

४५. ३. इंहिं संसारि. ४६. ४. सामिउं. ४७. ४. संवुपज्जुंन. ४८. २. वंदउं. ४९. ६. °विहारं. ५०. १. हडइ. २. फ़ोडेई. ५२. २. सुंमइ. ५३. २. पडिपुंनइ. पुष्पिका : इति जीवदयारास : समाप्तः ॥

चंदनबाला-रास

[कर्ताः आसिग रचना-समय : १३ वीं शताब्दी लेखनसमय : १३८१]

जिण अभिनवि सरसइ भणए पुहविहि भरह-खेत्ति जं वीतं ।
वीर-जिणिंदह पारणए निसुणउ चंदनवाल-चरित्तं ॥१

प्रथम लील कसमीर करंती ललिय लोल कल्लोल वहंती ।
अठ-दल-कमल-मज्झि उप्पत्ती सकल सवल अम्हि तालह दिंती ।
तूठी सत्त भवंतरिहि सिव-गति-मति आसिव(?)सरसती ॥२

जिण चउवीस वि चलण नमेवी माइ वापु गुरु हियइ धरेवी ।
अच्चुत अंबिक-देवि तहिं ब्रह्म-संति अनु देवा देवी ।
कवियर हंसा गढ़ (?) वयणि पगि-पगि राख करउ तुम्ह देवी ॥३

अत्थि भरहि पुण चंपा नयरी किरि अभिनव अमराउरि सारी ।
चउरासी तहिँ चउहटह मढ देउल धवलहरे सोहइ ।
कूयाराम तलाव तहिँ महि ऊगमतउ दिणयरु मोहइ ॥४

राज करइ दधिवाहणु राऊ चोर चरड भंजइ भडवाऊ ।
सज्जण समल समुद्धरणु नं तिहि दंडु न वेठिहि वारउ ।
पोलिहिँ तालं नवि पडए दस जोयण गढ पाखे सारउ ॥५

दहिवाहण-गेहिणि सु-पहाणी रूयवंत सा धारिणि राणी ।
तुंग-पयोहर खीर-सर (?) कुडिल-केस भुय-नयण-सुचंगी ।
हंस-गमणि सा मृग-नयणि नव-जोवण-नव-नेह-सुरंगी ॥६

गब्भु वहइ सा धारिणि राणी धम्म-कजि सीलि सा खरिय सियाणिय ।
नव मासे पूरे दिवसे जननि पसूई जाई बाला ।
विसमई नाउँ प्रतीच्छियउ वाधइ सुंदरि गुणहि विसाला ॥७

एथंतरि कहिसु निरुत्तं कोसंबी-नयरी जं वीतं ।
सेयाणिउ राजु करए तासु घरणि सुम्मइ मृगवंती ।
वीर-जिणिंदह पारणए पिय-आगइ पभणइ विहसंती ॥८

नितु-नितु नयरी आवइ सामिउ चारि मास ऊआस-किलामिउ ।
पूरि मणोरह मझ तणउ सामिय सफलु जम्मु मह कीजइ ।
प्रिय वयणे मणि संभरिवि वीर-अवधि नीछइ पूरीजइ ॥९

तं निसुणिवि पहुतउ अत्थाणे तहि वहु वइठा राणो-राणे ।
चरि आविउ रायह कहिउ हय-गय गुडिय तुरिय पाखरिया ।
राउ सु कोपानलि चडिउ गिरि टलटलिय धरणि थरहरिया ॥१०

अभउ देउ डंगुरउ वजाविउ .... ।
जो जंपावइ तं तहइ घोडा-खुर-रजि झंपिउ भाणू ।
पवण-वेगि ताखणि चलिउ चंपा-नयरी गया विहाणं ॥११

नेत्र-रयणि सिरि बाधउ पाट्ट ताखिणि तिणि मोकलियउ भाट्ट ।
काँइ राय ! निच्चिंतु तुहुँ भाटु भणइ सीमह गय गुडिया ।
तखणि चलियउ सम दलिण गुलुगुलंत वे पक्खा मिलिया ॥१२

वज्जिय ढक्क बूक नीसाण केण वि खंचिय तुरिय केकाण ।
वलिया मंडलिक मउड-धर सेल कुंत धणु वरिसइ मेहू ।
झूझु करइ संग्राम-भरि अंगो-अंगि भिडिया वेऊ ॥१३

हत्थि-कुंभ-थलि खिवियउ पाऊ भय पडियउ दहिवाहणु राऊ ।
घोडइ चडि नासिउ गयउ सीहह चित्रउ पूणइ काइं ।
तुरय-थट्ट गय-घड लइय तउ जीतउं सेयाणइ राइं ॥१४

केण-वि लद्धा रयण-भंडार केण-वि कंचण तणा कुट्ठार ।
केण-वि पाविउ धन्नु धणु ढसड चोर चरड दंदडिया ।
पाइकु एकु फिरंतु तहिँ धीय सहिय धारिणि पिडि पडिया ॥१५

तक्खणि तिणि वाहणि जोत्रावी लेउ उच्छंगिहि वेउ चडावी ।
क[ट]किहिँ सउ घरि चालियउ मागि वहंतउ सो मन्नावइ ।
होइसि तुहु महु घर धरणि जइ तुहु सुंदरि निय मण भावइ ॥१६

धिगु-धिगु चिंतइ यउ संसारू महु दहिवाहणु आसि भतारू ।
लाइय विहि कइसं कइउँ रोवइ करुण पलाव करंती ।
अंसुय भरिय तलाउलिय अच्छइ धारिणि मणि चिंतंती ॥१७

.... ।
हियइ सरिसु आलोचियउँ पडिय स मुच्छिय केणइ कारणि ।
जं दहिवाहणु आसि पिउ हियडं फूटिउ मुइय स धारिणि ॥१८

ताव तित्थु पाइकु चिंतेइ चंदण कट्ठ लेउ सो आविउ ।
संकारिय रोवंत मणि गयइ सलिलि किं वज्झइ पालि ।

आगइ छइ मणि अवरतउ पीठ लेवि वीकणिसउं वाली ॥१९
छुइपुइ कोसंवी संपत्तउ पीठ-वारि आइयउ तुरंतउ ।
खड-पूलउ सिरि ऊभियउ ताव तेत्थु धणवइ संपत्तउ ।
दीठी वाल स रूवडिय धीय भणिउ धनु देविणु लेई ॥२०

भुंभर-भोली सा सुकमाला नाउं दीन्हु तसु चंदणवाला ।
लेउ उच्छंगि घरि आवियउ माइ भणिउ गेहिणि हक्कारी ।
धाइय सेठिणि सासुहिय धीय भणिउ तासु वि आपेई ॥२१

पाए घाघरिया झमकारो गलइ रुलंतउ सोहइ हारो ।
कन्ने वीडस सरलिया (?) तसु सिरि लंबउ केस-कलाउ ।
धणवइ-धीय स चंदणह दीठिय देह पणासइ पाउ ॥२२

अन्न-दिवसि धणवइ चिंताविउ पवहण-केरउ मंत्रु मंत्राविउ ।
हट्ट उठिउ घरि आवियउ चंदण मणि आणंदु करेई ।
एक त× पाणिउ लियइ तायह तणा चलण धोएई ॥२३

धोवइ चलण चंदण सम-भावि तसु सिरि छुट्टउ केस-कलाओ ।
सेट्ठि सु अणुरायह गयउ जइ परि करिसइ इह घर-नारि ।
मइ परिहरिसइ इणि मिसिण जोइजि ज करउँ इह मो सारी (?) ॥२४॥

अन्न-दिवसि पवहणि संपत्तउ तक्खणि तेडिउ वइदु तुरंतउ ।
ओ घल्लिय पच्छिम-हरए सिरि मुंडिय निवले पूरावी ।
घरु तालिउ जण वारियउ छुइ(?)खुंदरि दुल्हल(?)रोवंती ॥२५

माइ ताय मति वुद्धि न लाधी पर-घर-मंडण दुखे दाधी ।
आधा खंडा तप किआ किव लाभइ बहु-सुक्ख-निहाणू ।
फूटि रि हियडा ! वज्जमए अन्नह जम्मि न दिन्नं दाणू ॥२६

अन्न-दिवसि पवहणे वहंते दाहिण दिसि जंबू भासंते ।
तसा निवलु ऊ पंगुरउ(?) किणि कारणि विइउ चक्खु फुरेई ।
वलिउ जाव घरि आवियउ कह चंदण धणवइ पभणेई ॥२७
डोकरि एक वरिस-सय-भूती दाँत पडया छइ खाटह सूती ।
तेण वात धणवइ कहिय वूढा काइ करेसइ कोए ।
धिय चंदण पच्छिम-हरए माथा-ऊपरि दंडु न होए ॥२८

ताव तेत्थु धणवइ संपत्तउ कंठि लग्गि सो भणइ रुयंतउ ।
चंदण प्राण कुमास धरे जं तेडिउ आवउं लोहारो ।
धाइउ सेठि ऊतावलउ सा चंदण न करइ आहारु ॥२९
अच्छइ मणह माहि चिंतंती दाणि अ-दिन्नइँ किम्व पारंती ।
ताखणि आवइ वीरु जिणु सूपि कुमासे जिणु पारावइ ।
देवे जय-जय-कारु किय पवण-वेगि सोहम्मउ आवइ ॥३०
इंदु स चंदण-चलण नमेई तक्खणि पुण नव केस करेई ।
भग्ग निवल किय आभरण तूर-सवदि अंवरु गाजेई ।
अध तेरह कोडि दवय सो नाडिय नयर-राउ तसु लोभह जाइ ॥३१
इंदु भणइ धणु चंदण लेई वलवंड प्राणि न पावइ कोई ।
वाल भणइ यउ ताय-हरे सरवरि कमल जेव विहसेई ।
सेट्ठि सु मणि आणंदियउ धणवइ वद्धावणउं करेई ॥३२
जावह इंद इंदा-पुरि जंती तक्खणि तउ तेडिय मृगवत्ती ।
चंदणवाल तु वूझवए जिणि दिट्ठी हुइ नयणाणंदू ।
धन्न धन्न सु-कयत्थ तुहुँ [जि]ण पाराविउ वीर-जिणिंदू ॥३३
संखेपिणि जिण दिन्नं दाणू वीर-जिणिंदह केवल-नाणू
चंदण पढम पवत्तिणिय परमेसरह निव्वाणह जंती ।
वत्तीसा सय खित्त तहिँ अखलिउ सुहु सिद्धिहि माणंती ॥३४
एहु रासु पुण वृद्धिहि जंती भाविहि भगतिहिँ जिण-हरि दिंती ।
पढइँ पढावइ जे सुणइ तह सवि दुक्खइँ खइयह जंती ।
जालउर-नयरि असिगु भणइ जम्मि जम्मि तूसउ सरसत्ती ॥३५॥

अंत : इति श्रीचंदनवाला-रासः ॥

आबू-रास

[कर्ता : पाल्हण   रचना-समय : १२३३

पणमेविणु सामिणि वाएसरि   अभिनवु कवितु रयं परमेसरि ।
नंदीवर धनु जासु निवासो   पभणउ नेमि-जिणंदह रासो ॥१
गूजर-देसह मज्झि पहाणं चंद्रावती-नयरि वक्खाणं ।
वावि सरोवर सुरहि सुणीजइ   वहुयारामिहि ऊपम दीजइ ॥२
त्रिग चाचरि चउहट्ट-विथारा   मढ मंदिर धवलहर पगारा ।
छत्तिस राजकुली निवसेई   धनु धनु धम्मिउ लोकु वसेइ ॥३
राजु करइ तह सोम-नरिंदो   निम्मल सोल कला जिम चंदो ।
हिव वन्नउ गिरि पुहवि-प्रसिद्धं   वहुयहँ लोयहँ तणउ जु तीथो ॥४
घण-वणयराहँ स-जलु सु-ठाउं   तहि ँ गिरिवर पुणु आवू नाउं ।
तसु सिर वारह गाम निवासो(?)   राठी गूगुलिया तहि ँ तपसी(?) ॥५
तसु सिरि पहिलउ देउ सुणीजइ   अचलेसरु तसु ऊपमु दीजइ ।
तहि छइ देवत बाल-कुमारी   सिरिमा सामिणी कहउ विचारी ॥६
विमलिहि ँ ठवियउ पाव-निकंदो   तहि छइ सामिउ रिसह-जिणिंदो ।
सानिधु संघह करइ सँखेवी   तहि छइ सामिणि अंवाएवी ॥७
पुरुव पछिम धम्मिय तहि ँ आवहि ँ उत्तर दाखिण संघु जिणवरु न्हावहि
पेखहि मंदिरु रिसह रवन्ना   नाचहि धम्मिय वहु-गुण-वन्ना ॥८
धनु धनु विमलउ जेणि करावित   ससि-मंडलि जिणि नाउ लिहाविउ ।
विहुँ सइ वरिसह अँतरु मुणीजइ   वीजउ नेमिहि भुवणु सुणीजइ ॥९

ठवणि

नमिवि चिराणउ थुणि नमिवि   वीजा मँदिर-निवेसु ।
त पुहविहि माहि जो ँ सलहिजऍ ऊतिम गूजरु देसु ॥१०
त सोलंकिय-कुल-संभमिउँ   सूरउ जगि जसवाउ ।
त गूजरात-धुर-समुधरणु   राणउँ लूणपसाउ ॥११
परिवलु दलु जो ओडवऍ,   जिणि पेलिउ सुरिताणु ।
राजु करइ अन्नय तणओ ँ   जासु अगंजिउ माणु ॥१२

मूल के अशुद्ध पाठ : ४.३. वंनउ. ८. १. पुरुव्व पच्छिम; २ उतर दाक्खिण.
९. १. विमलढि.

लुणसा-पुत्तु जु विरधवलो॑ राणउ अरडक-मल्लु ।
त चोर-चराडिहि आगलओ॑ रिपु-रायह उरि सल्लु ॥१३

भासा

वस्तपालु तसु तणइ महंतउ सहुयरु तेजपाल उदयंतउ ।
अभिणवु मंदिर जेण कराविय ठावि-ठावि जिण-विंब भराविय ॥१४
महि-मंडलि किय जे॑णि उद्धारा नीर-निवाणिहि सत्तूकारा ।
सेतुज-सिहरि तलावु खणाविउ अणपम-सरु तसु नामु दियाविउ ॥१५
नितु नितु सुर-संघ पूजा कीजइ छहि दरिसण-धरि दाणु वि दीजइ ।
संघ-पुरिस पुहविहि सलहीजइ राजु वघेला वहु मनि मानिजइ ॥१६
अन्न-दिवसि निय-मणि चिंतीजइ महतइ तेजपालि पभणीजइ ।
'आवू भणिजइ तीथहँ ठाउँ जइ जिण-मंदिरु तह नीपावउँ' ॥१७
ठाकुरु ऊदल ताव हकारिउ कहिय वात कान्हइ वइसारिउ ।
आवू रिखभह मंदिरु आछइ महतउ तेजपालु इम पूछइँ ॥१८
वीजउ नेमिहि॑ भुवणु करेसहँ जइ जिण-मंदिर-थाहर लहिसहँ ।
पहिलउ सोम-नरिंदु पूछीजइ कटक-माहि जाइवि विनवीजइ ॥१९

ठवणि

महतिहि॑ जायवि भेटियओ॑ थावल-देवि-मल्लारु ।
त कर जोडेविणु वीनतओ॑ सोम-नरिंद प्रमारु ॥२०
त विंनति अम्हहँ तणीय सामिय तुहु अवधारि ।
त मागउ थाहर मंदिरह आवूय-गिरिहि मझारि ॥२१
त तूठउ थाँवलदिवि-तणउ आगइ कहियउ एहु ।
त विमलह मंदिर-आसनउँ विजउ करावहु देव ॥२२
अम्हि धुरि गोठिय आवुयह आगे अछह निवाणु ।
त करिज मंदिर तिजपाल तुहुँ हियइ म धरिजहु काणि ॥२३

भासा

दियइ आयसु तह सोम-नरिंदो वस्तपालु ते॑जपालु आँणंदो
जिण-सामिय-मंदिर वेगि निप्पज्जऍ अइसु निरोपु हिव ऊदलु दीजऍ ॥२४

---

१३. ४. सालु. १७. १ अंन. २०. ३ कउ. २२. ३. आससउं.

अइसि ऊदल्लु चंद्रावती आवएँ सयलु महाजनु घरि तेडावएँ ।
चालहु हिव आवुइ जाएसहँ (जिण)-मंदिर-थाहर-भूमि जोएँसहँ ॥२५
चालिउ ऊदल्लु महाजनि सइतउँ आवुय देवल-वाडइ पहुतओ॑ ।
ठमि-ठमि मंदिर भूमि जोयंतओ॑ मिलिउ मेलॉवओ॑ आवुय-लोयहँ ॥२६
मंदिर-थाहर नवि आपेसहँ प्राणिहि॑ सुवणु करण नवि देसहँ ।
आगएँ विमल-मँदिर निप्पन्नओ॑ सिरमा भूमिहि॑ दीनउ दानु ॥२७

ठविण

ऊदल्लु तित्थु पसीय वहु परि मन्नावइ ।
राठीवर गूगुलिया वास्तइँ पहिरावइ ॥२८

भासा

अम्हि धुरि गोट्ठिय दिव निमिनाथ विमल-मँदिरु ऊतरदिसि जाम (?) ।
जिण-भूमि आपहु तेइ सुवाहा (?) लइय भूमि तिजपालु वधाविउ ॥२९
महतइ तेजपाल पभणीजइ सोभनदिउ सुतहारु तेडीजइ ।
जाइज आवुइ तुहुँ कमठाए वेगिहि जिण-मंदिर निप्पाए ॥३०
चालिउ पइठ करिउ सुतहारो भूमि सुवण इक वारे अहारो ।
सोभनदिओ॑ विगि आवुइ आवइ कमठा-मोहुँतु आँरंभु करावइ ॥३१

भासा

मूलग्ग पायार धर पूजिउ कुरु म प्रवेसु ।
भरिउ गडारउ तहि ज पुरे खर-सिल हुयउ निवेसु ॥३२
आसन्नी तहि॑ ऊघडिय पाथर-केरिय खाणि ।
निपनु गडारउ मूलिगओ॑ देउलु चडिउ प्रमाणि ॥३३
रूपा-सरिसउ समतुलूएँ दसहि दिसावर जाइ ।
पाहणु तहिं आरासणउँ आणिउ तहि॑ कमठाइ ॥३४
सरवरु घाट्टु जो॑ नीपजएँ मंदिर वहु विस्तारि ।
त अतिसइ दीसइ रूवउउँ नेमि-जिणिंद-पयारु ॥३५

ठवणि

सोभनदेउ सुतहारो॑ कमठाउ करावइ ।
सइतउ मंत्रि तिजपालो॑ जिणु-विंबु भरावइ ॥३६

---

२८. २ मंनावइ. ३३. १ आसंनी

भासा

खंभायति वर-नयरि विंवु निप्पज्जए ।
रयणमउ नेमि-जिणु ऊपम दीजए ॥३७
दिसंति कंति रयण-कंति सामल धीरा वहु पंकति बहु सकति जाइ सरीरा ।
निवसए विंवु जो सालह संठिओ विजयसिण-सूरि गुरि पढम पतीठिओ ॥३८
निपनु परिपूरनु सामल-देउ धणु तिजपालु जिणि आवुय नेओ ।
धवल-सुत सुरहि-पुत ठविय तहि रहवरे खडइ सुहडा सुमुहु आवुय-गिरवरे ॥३९
नयर वर-गामह माहिहि आवए सइत भवियहो जिण पहेरावए ।
आवुय-तलवटे रत्थु पहूतओ तनियओ वर णीय पाज चडंतओ ॥४०
थड-ऊथडइ रहु पाज विसमी खरी वेगि संपत्त अंविक्क वर अच्छरी ।
सानिधि अँवाइय रत्थु चडंतओ देवलवाडए दिणि छठइ पहुतओ ॥४१

ठवणि

आवुय-सिहरि सँपत्तु देउ पहु नेमि-जिणेसरु
वणसइ सवि विहसणहँ लग्ग आइउ तित्थेसरु ।
उच्छंगिहि जुगादि-जिणु (देउ) जिणु पहिलउ ठविजइ
तुहुँ गरुयउ निमिनाथ-विंवु तिजपालिहिँ कीजइ ॥४२
हक्कारहु वर जोइसिय पइठह दिणु जोयहु
तेडावहु चउवियहँ(?) संघु पुर-पाटण-गामहँ ।
वार सँवच्छरि छियासियए परमेसरु संठिउ
चेत्रह तीजह किसिण-पक्खि निमि भुवणिहि संठिउ ॥४३
चहुँ-आयरिहिँ पयट्ठ किय वहु भाउ धरंतह
रागु न वड्ढइ भविय-जणहँ निमि तित्थु नमंतह ।
श्रावेह डावडा(?) तणे जिणु पहिलउ न्हवियउ
पाछइ न्हवियउ सयल संघि तुम्हि पणमह भवियहु ॥४४
रिषभ-चित्त-अट्ठमि जिनमु तासु कल्याणिकु कीजइ
दसमि तित्थु नेमि-जात-रेसि सँघ-पासि मँगीजइ ।
संघ-रहिउ जिणि जात करिवि नेमि-भुवण विसाला
पूरि मणोरह वस्तुपाल मंति तेजपाला (?) ॥४५

४३. १ धरंना.

मूरति वपु(प)-असराज-तणी कुमरादिवि-माया
काराविय नेमि-भुवण-माहि विहु निम्मल-काया।
काराविउ निमि-भुवणु(?) फलु लयउ संसारे
निसुणहु चरितु नदंते तिणि धँधूय-प्रमारे(?) ॥४६
रिषभ-मंदिरु सासणि जाणुं धंधुय दिन्नउ डकड(?)वाणिउँ गाउं।
तिणि सुमसीहि उज्ञालिउ नाउं नेमिहि दिन्नु डवाणिउ गाउं ॥४७
अनेक संघपति आवुइ आवहिँ कनक-कपड निमि-जिणु पहिरावहिँ।
पूजहि माणिक-मोतिय-हूले कि-वि पूजहिँ सोगंधिहि फूले ॥४८
के-वि हु हियडय भावण भावहिँ के-वि हु मंनीणइ(?) आराहहिँ।
के-वि चडावलि नेमि नमीजइ रासु वयणु पाल्हण पुज कीजइ ॥४९
वारसँ-वच्छरि नवमासीए वसँत-मासु रम्माउलु दीहे।
एहु राहु (?) विस्तारिहिँ जाए राखइ सयल संध अंबाई ॥५०
राखइ जाखु जु आछइ खेडइ।
राखइ ब्रह्म-संनि मूढेरइ ॥५१*

*

* अंत : आबूरासः समाप्तः।

८. गयसुकुमाल-रास

(कर्ता : देल्हण रचना-समय : ई. सं. १२५० लेखन-समय : १३८१)

पणमेविणु सुय-देवी सुय-रयण-विभूसिय ।
पुत्थय-कमल-करी ए कमलासणि संठिय ॥१

*

पभणउँ गयसुकुमार-चरित्तू पुव्विं भरह-खित्ति जं वित्तू ।
.................................×× जु उज्जिल पुन्न-पएसू॥
तह सायर-उवकंठे वारवइ पसिद्धिय ।
वर-कंचण-धण-धन्नि वर-रयण-समिद्धिय ॥२
वारह जोयण जसु वित्थारू निवसइ सुंदरु गुणिहि विसालु ।
वाहत्तरि-कुल-कोडि-विसिट्ठो अन्नवि सुहड रणंगणि दिट्ठो ॥
नयरिहि रज्जु करेई तहिँ कह्नु नरिंदू ।
नरवइ मंति-सणाहो जिव सुर-गणि इंदू ॥३
संख-चक्क-गय-पहरण-धारा कंस-नराहिव-कय-संहारा ।
जिणि चाणउरि-मल्लु वियारिउ जरासिंधु वलवंतउ धाडिउ ॥
तासु जणउ वसुदेवो वर-रूव-निहाणू ।
महियलि पयड-पयावो रिउ-भड-तम-भाणू ॥४
जणणि हि देवइ गुण-संपुन्निय नावइ सुरलोयह उत्तिन्निय ।
सा निय-मंदिरि अच्छइ जाम्व तिन्नि जुयल-मुणि आइयं ताम्व ॥
सिरिवच्छंकिय-वच्छे रूविं विक्खाया ।
चिंतइ धन्निय नारी जसु एरिस जाया ॥५
मुणिवर सुंदर-लक्खण-सहिया मह सुय कंसि कयच्छि गहिया ।
वारवई मुणि विंभउ इत्थू कहि वलि वलि मुणि आयउ इत्थू ॥
पूछइ देवइ ता.... .... ।
पभणहि मुनिवर ताम्व समरूव सहोयर ॥६
सुलस सराविय कुक्खिं धरिया जुव्वण-विसय-पिसाइं नडिया ।
सुमरिउ जिणवरु नेमि-कुमारू तसु पय-मूलि लयउ वय-भारू ॥
पुत्त-सिणेहि ताम्व देवइ डुल्लइ मणु ।
जसु करि कंकण होई तसु कयसं दप्पणु ॥७

जाइवि पुच्छइ नेमि-कुमारू संसउ तोडइ तिहुयण-सारू ।
पुव्विं छच्च रयण तइँ हरिया, तिणि कारणि तुह सुय अवहरिया ॥
कंसु वि होइ निमित्तू वर करह करेई ।
सुलस सराविय ताम्व सुरु अल्लइ नेई ॥८

देवइ मुणिवरु वंदइ जाम्व हरिस विसाउ धरइ मणि ताम्व ।
सुलस स धन्निय जसु घरि लद्धिय हउं पुण वाल-विउइहि दद्धिय ॥
रहु वालाविउ ता.......................
...............रिसिय नारी पिच्छइ काई (?) ॥९

खिल्लावइ मल्हावइ जाम्व देवइ मण दुम्मण हुई ताम्व ।
तं पिक्खिय अहियर [वि]सूरइ वासुदेउ मण-वंछिउ पूरइ ॥
सुमरइ अमर-नरिंदो महु देहि सहोयरु ।
संयल-गुणेहिं जुत्तो निय-जणणि-मणोहरु ॥१०

वुल्लइ सुरु सुरलोयह चविसी देवइ कुक्खि सो संभविसी ।
जायउ सुंदरु गुणिहँ विसालु नामु ठविउ तस गयसुकुमालु ॥
साहिय सहिय कलाउ संतुट्ठउ लोयह ।
जुव्वण-समय पहुत्तो नवि इच्छइ धूयह ॥११

सोम सरूव धूव परिणाविय जायवि तहि जन्नत्तह आविय ।
नच्चइ हरिसिय वज्जहिँ तूरा देवइ ताम्व मणोरह पूरा ॥
तावह गयसुकुमालो संसार-विरत्तउ ।
निहणिवि मोह-गइंदो जिण-पासि पहुत्तउ ॥१२

पणमिवि तिन्नि पयाहिण देई धम्मु सुणइ सो करु जोडेई ।
पुण पडिवोहिउ नेमि-जिणिंदं(दिं) जायव-कुल-नहयलजय-नंदं(दिं) ॥
काम-गइंद-मइंदो सिव-देविहि नंदणु ।
देसण करइ जिणिंदो सिवपुर-पह-संदणु ॥१३

मोह-महागिरि-चूरण-वज्जू भव-तरुवर-उम्मूलण-गज्जू ।
सुमरिवि जिणवरु नेमि-कुमारू गयसुकुमारु लेइ वय-भारू ॥
ठिउ काउसग्गिं ताम्व जाएवि मसाणे ।
वारवई-नयरीए वाहिर उज्जाणे ॥१४

तम्मि सु दियवरु कुवियउ पेक्खइ तहिरिय जल(?) पज्जालिउ दिक्खइ ।
अम्ह धुय विनडिय परिणिय जेण अभिनउ तसु फलु करउँ खणेण ॥

तावह गयसुकुमाला- सिरि पालि करेई ।
दारुण खयर-अँगारा सिरि पूरण लेई ॥१५
डज्झइ मुणिवरु गयसुकुमालु अहिणउ दिक्खिउ गुणिहि विसालु ।
जिव खर पवण न सुरगिरि हल्लइ तिव खणु इक्कु न झाणह चल्लइ ॥
अवराहेसु गुणेसू किर होइ निमित्तू ।
सह जिय पुव्व-कयाइ हुयइवि थिर-चित्तू ॥१६
अहियासइ मुणि गयसुकुमालु निट्ठुरु डज्झइ कम्मह जालु ।
अंतगडिवि उप्पाडिउ नाणू पाविउ सासय सिव-सुह-ठाणू ॥
सिरि-देविंदसूरिंदहँ वयणे खमि उवसमि सहियउ ।
गयसुकुमाल-चरित्तू सिरि-देल्हणि रइयउ ॥१७
एहु रासु सुहडेयह (?) जाई रक्खउ सयलु संघु अंबाई ।
एहु रासु जो देसी गुणिसी सो सासय-सिव-सुक्खइँ लहिसी ॥१८*

*

* अंत : गयसुकुमाल-रास समाप्त.

९. जम्बस्वामि-सत्क वस्तु

(लेखन-समय : ई. सं. १३८१)

जंबु-दीवह जंबु-दीवह भरह-खित्तम्मि ।
रायग्गिहु वर-नयरु, उसभदत्तु तहि सिट्ठि निवसइ ।
तसु गेहिणि धारिणिय, तासु पुत्तु जंबू भणिज्जइ ।'
उवरोहिण सयणह तणइँ, कुमरु मनाविउ जाव ।
अट्ठ कन्न वर-रूव-धर, बप्पु वरावइ ताँव ॥१

कणय-कुंडल कणय-कुंडल मउड वर-हार
चीणंसुय वत्थ तहिँ, विविहि भंगि सिंगारु भावहिँ ।
परिणेइ वर कन्न तहिँ, अट्ठ पवर मंगलुवयारिहिँ ॥
नवनव कोडि सुवन्न तहिँ, परिणिउ आविउ बारि ।
ठाविँ ठाविँ ल्हणुत्तरइ, पइसइ घरह मझारि ॥२

आसि पुहविहिँ आसि पुहविहिँ निवह सो पुत्तु
पभवो वि गुण-गण-कलिउ, विहि-वसेण सो चोरु जायउ ।
तहिँ लच्छि मुसणह मिसिण, उसभदत्त-मंदिरि सु आयउ ॥
पंचस[य]हिँ चोराहँ तहिँ, रयणिहिं पहिलइ जामि ।
धम्मू भणंतउ दिट्ठु तणि(?) कुमर सु जंबू-सामि ॥३

विविह जोणिहि विविह जोणिहि भमिउ संसारि
भुंजेविणु दुक्ख-सय, जम्म मरणु बंध व विमोयणु ।
कह कह-वि कम्मह विवरि, मणुय-जम्मु लद्धउ सु-सोहणु ॥
सिधु मई मइ एह महु(?), महि इत्तिउ किर सारु ।
जे नवि धरणिहिँ सउँ रवइ, छलहिँ ति कलि संसारु ॥४

मणुय-जम्मिहि मणुय जम्मिहि, जाउ जो बालु
हिंडेइ जो आउलउ, जाउ मुन्नु एरिसु भणंतउ ।
नहु मुणहि इहु वयण-छलु, अथिरु एहु मोहणी घत्थउ ॥
जू मुसल दुइ उब्भिया, जम्मणि मंगल-कम्मु ।
जुइ जाया मूसलि मरहिँ सुंदरि किज्जइ धम्मु ॥५

सद्द-रूवह सद्द-रूवह रसह गंधस्स
तह फरसह सुंदरह, विसय-सारु जहि फलु [भ]णिज्जइ ।

तहिँ एरिसि तरुणतणि, विसय-सारु निच्छइ सरिज्जइ ॥
पउमसिरि पउमह्र वयणि, जंपइ सुणि भत्तार ।
सुर-नर-खयरह दुल्लहा, भुंजहिँ पंच पयार ॥६

एहु जोवणु एहु जोवणु अथिरु मन्नेहिँ
बोलावइ समसरिसु, पंच-दीह-पाहुणय-तुल्लउँ ।
विसयाण सुह मुह-रसिय, काइँ चित्तु तुह एहु भुल्लउ ॥
सुणि सुंदरि जंबू भणइ, जोवणु विसय म हारि ।
चंचल जोवणु एहु फलु, धम्मि विकिज्जइ नारि ॥७

कंत जीविय कंत जीविय तणउ फलु एहु
जं रमियइ वर-घरणि, नव-विलास-रस-हाव-भाविय ।
सिंगार-रस-रंग-सुह, विविह-भंग रय-भंग मारहिँ(?) ॥
पउमसेण जंपेइ सुणि, सामिय तवह न दीहु ।
विद्ध-समइ दुक्करु चरण, कर तुहुँ होइउ सीहु ॥८

जीउ सुंदरि जीउ सुंदरि सामि आपन्नु
सा सेवि आवागमणु, किणइ भावि चंचलु सहाविण ।
इणि कारणि धम्मु वर, तुरिउ रमणि किज्जइ सहाविण ॥
जंबु-कुमरु पभणेइ धणि, कम्मि कयंतह हत्थु ।
कहइँ अवेलह चालिसइ, न-वि संवलु न-वि सत्थु ॥९

कणइसेणा कणइसेणा भणइ सुणि सामि
एह रिद्धि वहुविह पवर, कणय रयण वहु विविह-भंगिहिं ।
जा उप्पमु पुणु लहइ, नव निहाण भंडार संगिहिं ॥
हत्थि कयं म-न पाइ करि, मिल्हि म कणयह कोडि ।
सावय-धम्मिण कंत तुहुँ, सव्वि किलेस वि तोडि ॥१०

भरहि मघविण भरहि मघविण संति सगरेण
अरु कुंथु जिण-चक्कवइ, नव-निहाण सिरि जेहि छड्डिय ।
इह चंचल अथिरु पुणु, नरय-गमणि नहु होइ अड्डिय ॥
सो पुण वुच्चइ वाणियउ, जो लाहइ वणिजेइ ।
तुच्छ रिद्धि जो परिहरइ, सासइ-संपइ लेइ ॥११

कुडिल-कुंतल कुडिल-कुंतल चंद-सम-वयणि
खामोयरि हंस-गइ, कमल-नयणि उन्नय-पओहरि ।

सु-पमाण वर-रूव-धर, नागसेणि जंपइ मणोहरि ॥
एरिस गुण-संपत्त तहिँ, अत्थि न महिला-सार ।
सिद्धिहिँ कारणि कंत तुहुँ, खिज्जि म वारइ वार ॥१२

सिद्धि जोवण सिद्धि जोवण लक्ख पणयाल
उत्ताणय छत्त सम, हिम-तुसार-दग-रय-पवन्ना ।
लोयग्ग संचिय पवर, सिद्धि-रमणि पावइँ ति धन्ना ॥
चंचल इत्थिय नहु रमउँ, खणि खणि खिज्जइ देहु ।
पलय-कालि जो नवि चलइ, सिद्धि-वहू सन्नेहू ॥१३

ताँव विलवइ ताँव विलवइ सयणु घणु सद्दि
माया वि खणि खणि रुयइ, सयण मित्त विरसं विसूरहिं ।
महिलाइ जं दुहु हवइ, तं कहेवि कहि कवणु धीरइ ॥
कणयसिरी पिययमु भणइ, सयणह तुहु आधारु ।
माय वप्पु गुरु मन्नियइँ, विहवह इत्तिउ सारु ॥१४

माय घरणी माय घरणी घरणि तह माय
पुत्तो चिय बप्पु तहिँ, बप्पु मरिवि पुत्तु रि भणिज्जइ ।
संसार नड-पिक्खणउँ, सयण को-वि कासु-वि न विज्जइ ॥
मोहिइ मोहिउ सयल जग, बंधवु वट्टइ लोइ ।
इक्कु जि मिल्हिउ धम्मु पुणु, सयणु न अन्नु-वि कोइ ॥१५

सुणिउ सुंदर सुणिउ सुंदर हास सविलास
पभणेइ कमलवइ, पुत्त सयण सुह इत्थ कारणु ।
एच्छेणवि सत्तिवर(?), पुत्त सयण जे कुल-सधारणु ॥
गुल नामिहिँ पिययम लियइ, किं मुह गुलिया हुंति ।
रहि रहि सुंदर ताव घरि, जावहिँ पुत्त हवंति ॥१६

मरणु इक्कह मरणु इक्कह होइ जीवस्स
इक्को-वि सहु अणुहवइ, इक्कु जीउ सिज्झइ निरुत्तउ ।
को पुत्त पडिपुत्तयहँ, धरइ मोहु संसारि खुत्तउ ॥
दिट्ठउ मालव-देस मइँ, खद्धा माँडा नारि ।
करउँ धम्मु जंबू भणइ, जिवँ न पडउँ संसारि ॥१७

कवण(णि) भोलिउ कवण(णि) भोलिउ चित्तु तुह देव
तुह कवणि भउ दक्खविउ, कवणि कंत उम्मग्गि ठाविउ।
कवणि मोहिं मोहियउ, मणुय-कम्मु उदयह जु आविउ ॥
जइसिरि पभणइ कंत तुहुँ, रमणी रिद्धि म पिल्लि।
लोय-विरुद्धा वयण सुणि, माणिक ठवलि म खिल्लि ॥१८

धम्मु निम्मलु धम्मु निम्मलु इक्कु संसारि
धम्मेण वि सिद्धि-सुह, धम्मु सयल सुह इत्थ कारणु।
संसारि धयवड-चवलि, मणुय-जम्मु धम्मह सधारणु ॥
मिल्हिवि माया मोह पुणु, थिरु मणु वयणिहि काइँ।
धम्मु इक्कु निम्मलु करउँ, सेसं पाणिउ वाउ ॥१९

इत्थ चिंतहिँ इत्थ चिंतहिँ चोर सइ पंच
धिगु जम्मु अम्हह तणउ, वारवार कुकम्मि वट्टइँ।
एहु कुमरु वर भोअ पुणु, परिहरेवि धम्मेण वट्टइ ॥
नव अहियइँ पुण पंच सय, पडिवुद्धा तहिँ ठावि।
जंवु-कुमरु संजमु लियइ, दियइ सु सोहम-सामि ॥२०

सु-अतुल-संजम सु-अतुल-संजम पवर-चारित्त
वर-सील-संजम-सहिय, दुहिय-जीव-संसार-तारण।
करुणामय-मयरहर, रोय-सोय निच्छइ निवा[र]ण ॥
जय जय गणहर धम्मवर, जय जय सिव-सुह-सामि।
सयल-संघ-दुरियइँ हरउ, गणहरु जंबू-सामि ॥२१

*

१०. गौतमस्वामी-रास

[**कर्ता :** उपाध्याय विनयप्रभ **रचना-समय :** १३५६ **लेखन-समय :** १३७४]

वीर-जिणेसर-चरण-कमल कमला-कय-वासो
पणमवि पभणिसु सामिसाल-गोयम-गुरु-रासो ।
मण तणु वयणु एकंति करवि निसुणह भो भविया
जिम निवसहँ तुम्ह देह-गेहि गुण-गण-गहगहिया ॥१

जंवु-दीवि सिरि-भरह-खित्ति खोणीतल-मंडणु
मगध-देसु श्रेणिय-नरेसु रिउ-दल-बल-खंडणु ।
धणवर गुव्वर-नाम-गामु जहि जण गुण-सज्जा
विप्रु वसइ वसुभूइ तत्थ जसु पुहवी भज्जा ॥२

ताण पुत्तु सिरि-इंदभूइ भू-वलय-पसिद्धउ
चउदह-विज्जा-दिविह रूव-नारी-रसि विद्धउ ।
विनय-विवेक-विचार-सार-गुण-गणह मनोहरू
सात हाथ सुप्रमाण देह रूवि रंभावरू ॥३

नयण-वयण-कर-चरणि जिणवि पंकज जलि पाडिय
तेजिहिँ तारा चंद सूर आकासि भमाडिय ।
रूविहिँ मयणु अनंग करवि मेल्हिउ निद्धाडिय
धीरिम मेरु गंभीर सिंधु चंगिम चय चाडिय ॥४

पिक्खवि निरुवम रूवु जस्स जण जंपइ किंचि य
एकाकी कलि भीत इत्थ गुण मेल्हा संचिय
अहवा निश्चइँ पुव्व-जम्मि जिणवरु इणि अंचिय
रंभा पउमा गउरि गंग रति हा विधि वंचिय ॥५

नहि बुध नहि गुरु कवि न कोवि जसु आगइ रहियउ
पंच-सयं गुण-पात्र-छात्रि हिंडइ परिवरिउ ।
करइ निरंतर जन्य-करम मिथ्या-मति-मोहिय
इणि छलि होसिइ चरण-नाण-दंसणह विसोहिय ॥६

वस्तु

जंबू-दीवह जंबूदीवह भरहवासम्मि
भूमीतल-मंडणउ मगध-देसु श्रेणिय नरेसरु ।
वर गुव्वर ग्रामु तहिँ विप्रु वसइ वसुभूइ सुंदरु ॥
तस भज्जा पुहवी सयल- गुण-गण-रूव-निहाणु ।
ताण पुत्तु विद्या-निलउ गोयमु अतिहिँ सुजाणु ॥७

भास

चरम जिणेसर केवल-नाणी चउविह संघ पयट्टा जाणी ।
पावापुरि सामिय संपत्तउ चउविह-देव-निकायह जुत्तउ ॥८
देवे समवसरणु तहिँ कीजइँ जिणि दीठइ मिथ्या-मति खीजइ ।
त्रिभुवन-गुरु सिंहासणि बयठउ ततखिण मोह दिगंति पइट्ठउ ॥९
क्रोध मान माया मद पूरा जाइ नाठा जिम दिणि चूरा ।
देव-दुंदुभि आकासिहिँ वाजी धर्म-नरेसरु आविउ गाजी ॥१०
कुसुम-वृष्टि विरचइँ तहिँ देवा चउसठि इंद्र समागय सेवा ।
चामर छत्र सिरोवरि सोहइ रूविहिँ जिणवरु जग संमोहइ ॥११
उपसम-रस-भरु भरि वरसंता जोजन-वाणि वक्खाणु करंता ।
जाणवि वद्धमाणु जिण पाया सुर नर किन्नर आवइँ राया ॥१२
कंति-समूहिं झलझलकंता गयणि विमाणा रणरणकंता ।
पिक्खवि इंदभूइ मणि चिंतइ सुर आवइँ अम्ह जन्य-हुउंतइ ॥१३
नीरि तरंडक जिम ते वहता समवसरणि पुहुता गहगहता ।
तउ अभिमानिहिँ गोयमु जंपइ इण अवसरि कोपिहिँ तणु कंपइ ॥१४
मूढा लोक अजाणिउँ बोलइ सुर जाणंता इम काइँ डोलइ ।
मू आगइ को जाणु भणीजइ मेरह अवरि किँ ऊपमा दीजइ ॥१५

वस्तु

वीर जिण-वरु वीर जिण-वरु नाण-संपन्नु
पावापुरि सुरसहि उपन्नु नाहु संसार-तारणु ।
तहिँ देविहि निम्मविउ समवसरणु बहु-सुक्ख-कारणु॥
जिणवरु जगु उज्जोयकरु तेजिहिँ करि दिणकारु ।
सिंहासणि सामिय ठियउँ हूयउ जयजयकारु ॥१६

भास

तउ चडियउ घण-माण-गजे इंद्रभूइ भूदेवु ।
हुंकारउ करि संचरिउ कवण सु जिणवरु देवु ॥१७

जोजन-भूमि समोसरणु पेखइ प्रथमारंभि ।
दस-दिसि देखइ विबुध-वधू आवंती संरंभि ॥१८
मणिमय तोरण दंड धज कउसीसे नव घाट ।
वयर-विवज्जितु जंतु-गण प्रातीहारिज आठ ।१९
सुर नर किन्नर असुरवर इंद्र इंद्राणि राय ।
चित्ति चमक्किउ चींतवए सेवंता प्रभु-पाय ॥२०
सहस-किरण जिम वीर-जिणु पेखवि रूव-विसालु ।
एहु असंभमु संभवए साचउँ अह इंद्रियालु ॥२१
तउ बोलावइ त्रिजग-गुरो इंद्रभूइ-नामेण ।
श्रीमुखि संसा सामि सवि फेडइ वेहु पएण ॥२२
मानु मेल्हि मद ठेलि करे भगतिहिँ नामइ सीसु ।
(त) पंच सए सिउँ व्रत लियए गोयमु पहिलउ सीसु ॥२३
वंधव संजम सुणवि करे अगनिभूति आवेइ ।
नाम लेइ आभाखि करे तं पुण प्रतिबोधेइ ॥२४
इणि अनुक्रमि गणहर-रयण थाप्या वीरि अग्यार ।
तउ उपदेसइ भुवन-गुरो संजम-सउँ व्रत बार ॥२५
विहुँ उपवासह पारणए आपणपइ विहरंति ।
गोयम-संजमि जग सयलो जयजयकारु करंति ॥२६

वस्तु

इंद्रभूइय इंद्रभूइय चडिय बहु-मानि
हुंकारइ कंपतउ समवसरणि पहुतउ तुरंतउ ।
अह संसय सामि सवि चरम-नाहु फेडइ फुरंतउ ॥
वोध-वीज संजाय मनि गोयमु भवह विरत्तु ।
दिक्ख लेइ सिक्खा-सहिय गणहर-पय संपत्तु ॥२७

भास

आज हूयउं सुविहाणु आजु पचेलिम पुन्न-भरो ।
दीठउ गोयमु सामि जउ निय-नयणे अमिय-सरो ॥२८
समवसरण मज्झारि जे जे संसय ऊपजइँ ।
ते ते पर-उपगार- कारणि पूछइ मुनि-पवरो ॥२९

जीयह देअए दीख तीयह केवल ऊपजए।
आप कन्हइ अणहूंतु गोयमि दीजइ दाणु इम ॥३०
गुरु-ऊपरि गुरु भत्ति सामिय-गोयम ऊपनीय ।
इण छलि केवल-नाणु राग जु राखइ रंगु करे ॥३१
जो अष्टापदि सेलि वाँदइ चडिउ चउवीस जिण ।
आतम-लबधि-वसेण चरम-सरीरी सो जि मुनि ॥३२
ईय दंसण निसुणेवि गोयम-गणहरु संचलिउ ।
तापस पनर-सएहिं तउ मुनि दीठउ आवतउ ॥३३
तप-सोसिय-निय-अंग अम्हहँ सकति न ऊपजइ ए ।
किम चडिसिह दृढकाय गज जिम दीसइ गाजतउ ॥३४
गरूइ इणि अभिमानि तापस जाँ मनि चींतवइँ ।
ता मुनि चडिउ वेगि आलंबवि दिनकर-किरण ॥३५
कंचण-मणि-निष्पन्न दंड-कलस-धयवड-सहिउ ।
पेखइ परमाणंदि जिणहरु भरथेसरु-विहईउ ॥३६
निय-निय-काय-प्रमाणि चहु-दिसि संठिय जिणह बिंब ।
पणमवि मन उल्हासि गोयम गणहरु तहिँ वसिउँ ॥३७
वयर-सामि-नउ जीवु तिजगि जंभकु देवु तहिँ ।
प्रतिबोधइ पुंडरीक- कंडरीक-अध्ययनु भणी ॥३८
वलता गोयम-सामि सवि तापस प्रतिबोध करे ।
लेइय आपण साथि चालइ जिम जूथाधिपते ॥३९
खीर खंडु घीउ आणि अमिय-वूठ अंगूठ ठवे ।
गोयमु एकइँ पात्रि काराव(य)इँ पारणउ सवे ॥४०
पांच सयं सुभ भावु उज्जल फुरि(य)उँ खीर-मिसे ।
साचा गुरु संजोगि कवल ति केवल-रूपि हुय ॥४१
पंच सय जिणनाह समवसरणि प्राकार-त्रय ।
देखवि केवल-नाणु ऊपन्नउँ उज्जोय-करो ॥४२
जाणे जिणवि पीयूष गाजंति घण मेघ जिम ।
जिण-वाणी निसुणेवि नाणी हूया पाँच सय ॥४३

वस्तु

इणि अनुक्रमि इणि अनुक्रमि नाण-संपन्न
पनरह सयं परिवरिय हरिय-दुरिय जिणनाहु वंदइ ।
जाणेविणु जग-गुरु वयणि तीहँ नाणु अप्पाणु निंदइ ॥
चरम जिणेसरु तउ भणइ गोयम म करिसि खेउ ।
छेहिं जई आपणि सही होसिउँ तुल्ला बेउ ॥४४

भास

सामिऊ ए वीर जिणिंद पुन्निम-चंद जिम उल्हसिउ ।
विहरऊ ए भरह-वासम्मि वरिस वाहुत्तरि संवसिउ ॥४५
ठवतऊ ए कणय-पउमेसु पाय-कमल संघिहिं सहीँ उ।
आविऊ ए नयणाणंदु नयरि पावाउरि सुर-महिउ ॥४६
प्रथीऊ ए गोयमु ग्रामि देवसर्म प्रतिबोध-कए ।
आपणि ए त्रिसला-देवि- नंदणु पत्तउ परम-पए ॥४७
वलतऊ ए देव आकासि पेखवि जाणिय जिण-समउ ।
तउ मुनि ए मनिहिँ विषादु नाद भेद जिम ऊपनउ ॥४८
तउ मुनि ए सामिय देखि आप-कन्हा हउँ टालिउ ए ।
जाणतई ए तिहुयण-नाहि लोक-विवहारु न पालियउँ ॥४९
अति भलउँ ए कीधउँ सामि जाणिउँ केवलु मागिसि[इ] ए ।
चींतविउँ ए बालक जेम अहवा केडइँ लागिसिइ ए ॥५०
हउँ किम वार-जिणिंदि भगतिहिँ भोलउ भोलविउ ।
आपण ए उचियउ नेहु नाहि न संपए सूचविउ ।५१
साचउ ए अह वीतरागु नेहु न जेहि लालियउ।
इणि समय ए गोयम चित्त रागु वयरागिहिँ वालिउँ ॥५२
आवतउँ ए जोऊ लटि रहतउँ रागिहिँ साहियउँ ।
केवल नाणू ऊपन्नु गोयम सो जि ऊमाहियउँ ॥५३
तिहूयणि ए जयजयकारु केवलि-महिमा सुर करइ ।
गणधरु ए करइ वक्खाणु भविया जिम भव निस्तरइँ ॥५४

वस्तु

पढम गणहरु पढम गणहरु वरिस पंचास
गिहि-वासिहि संवसिउ वीस वरिस संजमि विमासिय ।

सिरि केवल-नाणि पुण बार वरिस तिहूयणि नमंसिय ॥
रायग्गहि-नयरिहि ठिय वाणवइ वरिसाउ ।
सामिय-गोयम गुण-निलउ भूसइ सिवपुरि-ठाउ ॥५५

भास

जिम सहकारिहि॑ कोयल-टहकउ जिम कुसुमह वनि परिमल-बहकउ
जिम चंदनि सोगंध-विधि
जिम गंगा-जलु लहरिहि॑ लहकइ जिम कणयाचलु तेजिहि॑ झलकइ
तिम गोयम सोभाग-निधि ॥५६

जिम मानस-सरि निवसइँ हंसा जिम सुरवर-सिरि कणय-वतंसा
जिम महुयर राजीव-वनि ।
जिम रयणायरु रयणिहिं विलसइ जिम अंबरि तारा-गण विहसइ
तिम गोयमु गुण-केलि-खनि ॥५७

पुन्निम-दिणि जिम ससिहरु सोहइ सुरतरु-महिमा जिम जगु मोहइ
पूरव-दिसि जिम सहस-करो ।
पंचाननु जिम गिरिवरि राजइ नरवर-घरि जिम मयगलु गाजइ
तिम जिन-सासनि मुनि-पवरो ॥५८

जिम गुरु तरुवरि सोहइँ साखा जिम उत्तमि मुखि महुरी भाखा
जिम वनि केतकि महमहए ।
जिम भूमीपति भुय-वलि चमकइ जिम जिन-मंदिरि घंटा रणकइ
गोयमु लवधिहि गहगहए ॥५९

चिन्तामणि करि चडियउ आजु सुरतरु सारइ वंछिय काजो
काम-कुंभि सो वसिहूयउ ।
काम-गवि पूरइ मन-कामिय अष्ट महासिद्धि आवइँ धामिय
सामिय-गोयमु अणुसरउँ ॥६०

प्रणवक्षर पहिलउँ पभणीजइ माया बीजिहि॑ सउँ निसुणीजइ
श्रीमति सोभा संभवए ।
देवह धुरि अरिहंतु नमीजइ विणयप्पह उवझाइ थुणीजइ
इणि मंत्रिहि गोयमु, नमउ ॥६१

पर परवस परता काँइ कीजइँ देस-देसंतर काँइँ भमीजइ
कवणु काजु आयासु करे।
प्रह ऊठी गोयमु सँमरीजइ काजु समग्गू ततक्षण सीझइ
नव निहि विलसइँ ताहँ घरे ॥६२

चऊदह सय बारोत्तर बरसहि गोयम-गणहर-केवल-दिवसिहि
किउँ कवितु उपगार-परो।
आदिहि मंगलु एहु भणीजइ परवि महोछवि पहिलउँ दीजइँ
रिद्धि-वृद्धि-कल्याण-करो* ॥६३

*

* अंतः इति श्रीगौतमस्वामीरासः समाप्तः ॥ श्रीस्तंभतीर्थविहारे श्रीविनयप्रभोपाध्यायैः कृतः ॥
॥ शुभमस्तु ॥

११. नेमिनाथ-रास

सिरि सिरि सोहइ सुर रह-सार मुरिया वनि वनि घन सहकार
कोइल-सुर मणहारो ।
मधुरा मधुकर रणझणकार गरुड मरुड पल्लवि फार
दमणा पार न वारो ॥१

वेउल वालउ बकुलह वृंदो केतुक्कि करुणी कणयर-कंदो
फूल्या वहु मुचकंदो ।
नागर नरवर परमाणंदो निसिरिय विरहणी आननचंदो
हिव ऐ जिमि दिन-चंदो ॥२

करइँ कामिणि तणु-सिणगारो झलकइँ उर-वरि नवसर-हारो
शिरि वरि कुसमह भारो ।
करीअलि कंकण-नउ खलकारो पाए नेउर रणझणकारो
मृग-लोयणि सुविचारो ॥३

सहिजि सयाणि मिलीअ समाणी रितुहँ नायक आविउ जाणी
वाणी बोलइ चारो ।
वीणा-वाउ उच्छक थाउ सहि ए सीतल वायउ वाओ
गाउ नेमि-कुमारो ॥४

त्रिभुवन-मंडन मान-विहंडन धन धन जिणवर भवियानंदन
नंदन शिवि-दिवि चंगो ।
तम परहरए गुण-गण धरए रूपिहि मनभव नीराकरए
करए नितु नव-रंगो ॥५

अशरण-शरणू भव-भय-हरणू निर्जित-करणू काम-वितरणू
तरणू सिद्धि-भत्तारो ।
सहिजि स-करणू गत-जर-मरणू निर्जित-करणू कुल-उद्धरणू
चरणू पवित अपारो ॥६

जलधि-गहिंरू शाम-शरीरू साहस-धीरू जादव-वीरू
मद-महि-दारण-शीरू ॥

जिण अशरीरू जीतउ वीरू पामिउँ तीरू माया-नीरू
पहिरणि जादर-चीरू ॥७
नेमिकुमर अनइ रुकमिणि-कंतो जाने वीतउ रितु हिमवंतो
खेलइ मास वसंतो ॥
जेह गुण लाभइ किमइ न अंतो हीअडइ सामी सहिजि हसंतो
सूयणह चीति वसंतो ॥८
एक वार मिलि वंधु-निकाय शिवि-दिवि माडिय-नइहरि भाय
मायइ न बइठउ मंते ॥
नेमिकुमरु ईण इवइ तुरुणइ (?) सोहगसुंदर किमयइ परणइ
अरणइ ते अति चीते ॥९
तेहे आवि साहिउ वाहिं हाउ भणावी सामिउ पाहइँ
माँडिउ माँड वीवाहो ॥
धवल मँगल सिवि गाइं हरखी गोपी रूपिइँ वर रिति-सिरखी
हूउ मनि ऊछाहो ॥१०
दसइ दसार उ कुंयर मिलीया हरख धरंता जानइँ चलिया
वाजइँ ढोल-नीसाण ॥
रथवर गइँवर तुरीय थाट जयजय-कार भणइँ तिहिँ भाट
नाचइँ पात्र सुजाण ॥११
मंगल मद्दल वाजइँ भेर भुंगल शंख लक्खु इकतेर
त्रंबक त्रहत्रह-कारो ॥
मेघाडंवर शिर-वरि छत्र केता ढालइँ चमर पवित्र
चालिउ नेमिकुमारो ॥१२
उग्रसेन-पुरि पुहतउ जाम राणी राजल हरिखी ताम
करइ सयरि शृंगारो ॥
अलि-कलि-कज्जल जिमि अति-कालउ सिरि वरि वेणी-दंड 'रमालउ
मोती-नउ उरि हारो ॥१३
काँने कुंडल सोवन-केराँ झलकइँ कंकण पाणि भलेराँ
निम्मल तुर गुण-गेहो ॥
अंजइँ लोयण आयत वाली जीपइँ अहरे वर परवाली
काली भमही-रेहो ॥१४
झगमग करइँ वाहइँ केउर रणरणाट ते पाए नेउर
टीली निलय-दूयारे ॥

कटि-तटि सोहइ मेखल वारू आनन धरए शशि-अणुकारू
गति गय मानइ हारे ॥१५
बोलइ वाणी अमीयहँ मुहरी नदीयह सामी पाहइँ गुहरी
दूरिहि कीय सुर-नारे ॥
यदु-कुल-कैरव-कानन-चाँद ईम करंताँ नेमि-जिणंद
पुहतउ निलय-दूयारे ॥१६
वाडइ देखीय जीव वन-चार पूछइ सारथि-कन्ह तिणि वार
मूरतिवंतउ धम्म ॥
'एहे जीवे किसिउँ करेसिइँ' 'सामी आज ए सवि मरिसिइँ
गुरुव होसिइ तम्ह' ॥१७
'पाणि-ग्रहणिइ काज न राज अम्ह-कारणि होइ पशु-वध आज
पडियइ ईणि संसारे' ॥
तक्खणि लोक सहू खलभलिउ जिणि क्षिणि सामी पाछउ वलीउ
गईउ गढ गिरिनारे ॥१८
कमला सायर-वीचि-समान प्रभुता विज्ज-तणउँ उपमान
जीवीय नइ किरि वेगो ॥
यूवन संध्या-राग-सरीखउँ एउ संसार असार जि देखउँ'
चिंतइ मनि संवेगो ॥१९
धण मणि माणिक रयण-भंडार कमनिय कंचण वहु पट्ट सार
दियइ संवत्सर दान ॥
किमइ न पडइ भव-नइ फाँडइ राज-ऋद्धि घर घरणी छाँडइ
माँडइ मेल्हइ मान ॥२०
यहु जन मानस-माहि आलोची पंच मुष्टि शिरु पाछइ लोची
लीधउ संजम रंगे ॥
देवहँ दानव-मानव-राय प्रणमइँ नेमि-जिणेसर-पाय
रहीउ ऊजिलि(ल)-शृंगे ॥२१
बावीसमउ जिन-प्रधान अनुपम हूउँ केवल-ज्ञान
पुहुतउ सिद्धिइँ नाहो ॥
एह जि सही ए रासउ गाइं रोग सोग दुख दालिद जाइं
हुइ मन-वंछित लाहो ॥ २२

*

१२. शांतिनाथदेव-रास

[कर्ता : लक्ष्मीतिलक-गणि रचना-समय : ई.स.१३ वीं शताब्दी ले. स. ई.१४३०]

संति-जिणेसर-चरण-कमलु कमलह आवासू ।
उत्तंसिय-निय-उत्तमंग सुरहिय-दस-आसू ॥
सवण-महूसवु चरिउ तासु विरइसु संखेवी ।
नाचहु भवियहु भाव-सारु सिंगारु करेवी ॥१

अत्थि एत्थु हथिनाग-पुर कुरु-मंडल-मंडणु ।
अच्चब्भुय जसु रिद्धि पिक्खि संकिउ संकंदिणु ॥
धाइउ निय-पुरि सरइ तत्थ संभंतु संभालइ ।
घर-देउल-आराम-देव-देवी-अट्टालय ॥२

जय-सिरि-पंचालिय-रवण्ण-सोवन्न-सुदेहह ।
जसु अ[च्च]ब्भुय थंभ चारु सूरिम-कुल-गेहह ॥
सहहि लहहि जगि रेह सेह विससेण-नरेसरु ।
तसु जसु पसरि सरंति सग्गि विम्हियउ सुरेसर ॥३

तसु राणी सिरि-अयरदेवि वर-सील-संभूसिय ।
जिणि रूविणि रइ लच्छि गोरि इंदाणिय दूसिय ॥
चंदह चंदिम जीय कंति-पब्भारिण ल्हूसिय ।
जीइ मुहिणि कमलम्मि धुलि ललिय किर रूसिय ॥४

तासु उयरि अवय[२४६B]रिय देव सव्वट्ठ-विमाणह ।
भद्दव-सामल-सत्तमीइ सव्वट्ठ-विमाणह ॥
चक्कि-तित्थकर-लच्छि-तणा वद्धावा आविय ।
चउदस सुमिणइ दुगुण-कंति देवी संभाविय ॥५

डिंब-डमर-उड्डमर-मारि वित्थरिय अंधारय ।
गब्भंतरि व सामि-सूरु सहसत्ति सिंहारइ ॥
जिणि सिरि चक्कसिरी वि नूण सामहि उक्कंठिय ।
तायह घरि बहुविह-निहाण-मिसि आविवि संठिय ॥६

*

अयराएविहि उप्पन्न जिट्ठह सामल-तेरसिहि ।
सामिउ ए [सामल-वन्न] मृगलंछण तिहुयण-तिलउ ॥७

छप्पन्न ए दिसिकुमारीहि सूइ-कम्मु तिसु निम्मविउ ।
इंदिहि ए सव्व-सिरीहि मेरु-सिहरि सामी न्हविउ ॥८

धाविउ तउ धन्नेहि वीससेणु वद्धावियउ ॥
कंचण ए धण-धन्नेहि वूठउ तूठउ राउ तिहि ॥९

रहसि ए राइ पव्भाइ वद्धावणउँ करावियउँ ।
सामियउ ए तणु रूवाइ पिक्खिवि हरसि न माइयउ ॥१०

अवयरिय ए अम्मि पुत्तम्मि संति सयलि जगि वित्थरिय ।
सोहणी ए तो मुहुत्तम्मि संति नामु पियरि कियउँ ॥११

*

अह वद्धइ सो सामिसालु तिहुयण-न[य]णूसवु ।
धवलइ तिन्नि वि भुवण-भवण तसु जसु अंगुब्भवु ॥
दिसि-वहु-मुह पिंजरइ तासु तणु-कंति फुरंतिय ।
कोसंभिय पय तसु नहंसु दिसि दिसि मंडंति य ॥१२
गब्भि वि जसु ति-न्नाण दिव्व विप्फुरइ अ[२४७A]चंभू ।
संपय तासु कला-कलावु कु न मनइ सयंभू ॥
सुर-गुरु असुर-गुरू वि तासु किंपी गुण-कित्तणु ।
जइ सक्कहि इत्तलउ वेउ वहु मन्नइ अप्पणु ॥१३
जोवणि पत्तउ संति-नाहु तरुणी-जण-मोहणि ।
रूय-कित्ति मुक्किउ अणंगु रोवइ संकिउ मणि ॥
परिणावइ तउ वीससेणु वर-रायकुमारी ।
जसु सरिसी तिहु भुवणि अन्न नहु दीसइ नारी ॥१४
कुमरत्तणि पणवीस सहस वरिसइ सुह माणइ ।
जासु पमाणु ति-नाणु देव सो पर जय जाणइ ॥
मंडलत्ति पणवीस सहस उब्भड-भुयदंडु ।
तासु पयाविण विप्फुरंति कंपिउ मायंडु ॥१५

भ्रष्ट मूलपाठः ७. १. अयराएवहि. २. तेरसहि. ८. २. निम्मिविउ. ४. न्हविओ. ९. १. रहसिं. २. °वियओ. ११. ४. पियर कियओ. १२. १. वद्धय. ३. पिंजरह. १३. १. दीव. १५. २. जाणय. ३. मडलत्ति. ४. पयाविणु.

आउहसालइ संतिनाह तउ चक्कु उप्पन्नउँ ।
सामि-पयावह पुन्नु एहु दुद्धर हुउँ मन्नउँ ॥
तिहुयण-नाहु वि ताम तस्स कारइ अट्ठाही ।
अहवा तारिस पुव्व-वाट छंडइ इह नाही ॥१६

सालह चल्लिउ ताम चक्कु जाला-जीहाल्ल ।
वइरि-वग्ग-अभग्ग-गसण उट्ठिउ किरि काल्ल ॥
वज्जिय काहल वजिय ढक्क त्रहत्रहहि नीसाणा ।
रहसि चडिया मउडवद्ध मंडलिया राणा ॥१७
मत्ता मयगल गुलगलंति हय हिंसिय विहसिय ।
सुहड वि मेल्लइ सीहनाय रह घोसिय विलसिय ॥
खेहा-रणिअ भरिउ सूरु नहु सूझइ काइं ।
देइ पयाणउ संतिनाहु दलु कह वि न माइ ॥१८
तउ महियल थरहरिय नाग-कु[२४७B]ल सवि सलवलिया ।
टलटलिया कुल-सेल सव्वि सायर झलझलिया ।
नमिय सेस-फण नूण संति-जिण आणा झल्लिय ।
आय कमढि पुणु आणणे णु फेसंडिय घल्लिय ॥१९
चक्क-रयणि दंसियइ मग्गि साहवि छ-खंडु ।
भरह-खित्ति आवियउ संति गयउरि उदंडु ॥
मउडबद्ध बत्तीस सहस रायह अभिसित्तू ।
चक्कवट्टि-पय करइ रज्जु निज्जिय सवि सत्तू ॥२०
अंतेउर चउसट्ठि सहस तसु तह चउरासी ।
हय गय रहवर सय सहस पत्तेय[हि] आसी ॥
नव निहि चउदह रयण जक्ख सोलसह सहस्सह ।
आसि पहू छन्नवइ कोडि गामह पायक्कह ॥२१

*

चक्क-लच्छि २ छड्डि विच्छड्डि ।
लोगंतिय-वोहियउ देइ दाणु वच्छरु निरुत्तउ ।
सव्वट्ठ-सिविमारुहवि जिट्ठ-वहुल-चउदसिहि पत्तउ ॥

---

१६. १. आउयहसालय; उप्पन्नओ. २. मन्नओ. १७. २. करि. १८. १. विहिसिय; २. मेल्हय सीयनाय. २०. १. रवणि ३. अभिसत्तू. ४. निज्जय. २२. १. वोहियओ. २. देव; निरुत्तओ. ५. चउदसहि पत्तओ.

सहसं ब-वणुज्जाण-वणि संतिनाह पडिवन्नु ।
दिक्ख छट्ठि तवि निव-सहस-जुत्तउ कंचण-वन्नु ॥२२
बीय-वासरि २ निव-सुमित्तेण ।
पाराविय संति-जिणु सुह-मणेण परमन्न-दाणिण ।
सोमित्त-घर पूरियउ सुरवरेहि वसु-हार-वुट्ठिण ॥
देवहि जयजय-कारु किउ नहियलि चेलुक्खेवु ।
मणि हरसिय जग सयल किर दुद्धिहि वुट्ठउ देवु ॥२३

*

छउमत्थत्तणि एग-वरसि गइ ए संतिसरु ।
पिक्खिवि अंतर-वयरि-सिन्नु दप्पु[२४८A]द्धर-कंधरु ॥
चडियउ कोवाडोवि झत्ति भिउडी-भीमाणणु ।
वीर-रसह रलियावणउ पुणु हुयउ घणु(?) ॥२४
वज्जिय जत्त-ढक्क बुक्क अत्थक्क निसाणा ।
तउ सीलंगट्ठार[ह] सहस मणि हरसि न माणा ॥
पंच महव्वय-मउडबद्ध रोमंचिय राणा ।
सेस महाभड हरिस-वसिण हूया उत्ताणा ॥२५
संति-जिणेसरु पिक्खि सयल सेणा सन्नद्धा ।
वीर-वट्ट तुह(?) भाल-वट्टि वर-वीरह बद्धा ॥
पुन्न-सिरीए भरीय सेस महियलु पूरंतउ ।
निय-बलि चडियउ सुकल-झाण-जय-करि चोयंतउ ॥२६
आवंतउ जिणु निसुणि मोहराइ णि[य]-मणि हारिउ ।
धीरत्तणु करि तह-वि वल विलहणउ कराविउ ॥
मयण-कसाय-प्पमुह-भडह मत्थइ बंधावइ ।
वीर-वट्ट मिच्छत्त-जोह सेणावइ ठावइ ॥२७
सत्त-कम्म-मंडलिय-राय-परिवरिउ मोहू ।
संभालिंतउ सयलु सिन्नु मिल्हवि मण-खोहू ॥
तम-खेहा-रणि-पसरि नाण-सूरु वि रुंधंतउ ।
गुरुयाडंबरि पवण-वेगि लहु सीम पहुत्तउ ॥२८

*

२३. ४. पूरियओ. २६. २ °वाट्टिं. ३. पूरंतओ. ४. °किरि. २७. १. हारिओ.
२. कराविओ. ४. सेणावय ठावय. २८. ३. रुधंतउ. ४. पहुत्तओ.

वे-वि सिन्नइ २ अप्पु मन्नंत ।

जा दिट्ठि-पहि जुडिय (ता) घाय वलिय समहरि निसाणह ।
रण-तूर वज्जिय पउर कोउगेण आरुहि विमाणह ॥
देवादेव समागइय नहु नहयलि सम्माइ ।
जिम तिलु निवडिउ तुडि-वसिण हिट्ठउ कह-वि न जाइ ॥२९

वीर-वरणी २ करइ तइ सुहड[२४८B]

फारक्कि फर करि धरवि उग्ग-खग्ग-लय फरफरावहि ।
अत्थक्क पायक्क तिहि धणु-पडच्च आकन्न खंचहि ॥
वल-मज्झि ठिय जाम भड अंतर-पुड फाडंति ।
सिंहनादु मुंचंति भड तामुल्ललवि मिलंति ॥३०

*

दुन्नि-वि ए जुडिय सिन्न रण-तूरहि वज्जंतइहि ।
नच्चिउ ए वीर-रसो वि ऊभा हाथ करेवि तिहि ॥३१
पहरंता वल अन्नुन्नु पिक्खिवि देविहि संकियउ ।
जुज्झहि ए चिर-वयरेण अंधारउ अनु चांद्रणउ ॥३२
पायक ए मेल्हइ हाक फरियह रणझण-झुणि घणउ ।
कायर ए पडिया प्राण सुहड-कन्न वद्धावणउ ॥३३
ताणवि ए सर मुच्चंति उप्पाडवि पुण खग्ग-लय ।
उदंड्ड उड्डिउ लोहु लोहहि धाया वल उभय ॥३४

*

तह ज रण-भरि २ फरिय-झंकारु ।

झंकारु वर-सिंगणिहि विजय-भेरि-भंकारु घुम्मइ ।
तिम जे मइक्क(?) झुणहि जगि सुगालु सयलम्मि गम्मइ ॥
चिर-मिलिया जिम बंधु जिण सुहड गलोगलि लग्ग ।
अप्पुप्परि घायह वसिण भग्गा मिल्हवि खग्ग ॥३५

तहि जि हूयए २ समर[२४९A]-सम्मद्दि ।

पायक्कह कलकलिण कन्न पडिउ नहु किं-पि सुम्मइ ।
अच्छिन्न-सर-भर-पसरि किसउ सूरु हुय इउ न गम्मइ ॥

---

२९. १. सन्नइ. २९. ८. °वसण. ३०. ३. फरफरावय. ३३. १. मेल्हय. ३४. २. खग्गय. ३५. २. सिंगणहि. ३. घुम्मय. ५. गम्मय. ३६. ३. सुम्मय.

रण-तूरि य वज्जंतइहि नच्चिय हरिस कवंध ।
चम्म घंट किरि भट्ट घड(?) पढइ य कव्व-पवंध ॥३६

*

चडतउ दिक्खिवि सत्तु-सिन्नु नियवलु उहटंतउ ।
रोस-वसिण अइ पिंजरच्छु उट्ठ-उड्डु दसंतउ ॥
निय-दल-सहिउ मोह-राउ चल्लियउ तुरंतउ ।
संति वि सम्मुहु हुयउ वाम-खंधुप्फालंतउ ॥३७
भिक्खायर जे तुज्झ पेटि मह-भड आवट्टिय ।
मा नाससि कड्ढिसु ति अज्जु आपणा माँटिय ॥
मोह भणंतउ इसउ संति भणियउ मा वलवलि ।
रे वोपा(?) करे हत्थियारु हउ भंजिसु तुह भलि ॥३८
तउ पहरंतउ मोह संति ति-करणय-ति-सल्लिण ।
निज-वलि सहियउ हणियउ तेम उट्ठियउ न जिम पुण ।
मोह-राय तउ तणइ सिन्नि पडियउ भंगाणउँ ।
पाछउ अ-जोयंतु सव्वु नासइ उज्जाणउँ ॥३९
वइरिय-वलु नासंतु पिक्खि संतीसरु केडउ ।
करइ करावइ जमह[२४९B] पासि काहि वि तह तेडउ ॥
कि-वि मायाए उवरि देवि फर रिणि रडविडिया ।
कि-वि मुहि अंगुलि तिणय लेवि जिण-पाए पडिया ॥४०
जीवेवइ जयली (?) के-वि ते घिल्लिणि (?) दाविय ।
अइ-भयेण कि-वि खाल के-वि छींडी जोयाविय ॥
काहि वि नासंताह भग्ग दसणा तह गोडा ।
मत्थइ पडियउ अकित्ति-छारु विगलिय सवि कोडा ॥४१
तउ जय-सिरि किरि मुत्तिमंति केवल-सिरि आविवि ।
उक्कंठिउ सिरि-संति-नाहु आलिंगिउ धाविवि ॥
धाइय तरु-तलि लट्ठि छट्ठि पोसे सिय-नवमिहि ।
देवहि जयजय-कारु कियउ कुसुम-वुट्ठी तहि ॥४२

---

३७. १. °सन्नु; उहटतउ. २. पिंछरच्छु ३. निग°. ३८. ३. भणियाउ. ४. हिंत्थियारु. ३९. २. निग°. ३. तणय सन्नि. ४. नासय. ४१. २. अय.° ४. मत्थय. ४२. २. आलंगिउ. ३. नवमहि.

ताव देवहि २ किउ समोसरणु ।
मणि-कणग-रुप्पह रइउ भद्द-पीढु तसु मज्झि ठाविउ ।
उवविट्ठु तहि संति-जिणु उबरि सोग तिच्छत्तु धारिउ ॥
कुसुम-वुट्ठि चामर-जुयलु भा-मंडलि अइ-रम्मु ।
वज्जइ सुर-दुंदुहि कहइ दिव्व-झुणि[हि] जिण धम्मु ॥४३

अह जिणेसरु २ कुमरु कालम्मि ।
मंडलिय-पय चक्कि-पय जिण-पयम्मि पत्तेयमासिय ।
पणवीस वरिस[२५०A]ह सहस वरस-लक्खु सव्वाउ पालिय ॥
जिट्ठ[ह] सिय-तेरसि दिवसि मासि भत्ति संपत्तु ।
सिद्धिहि सम्मेयह सिखरि मुणि-नव-सय-संजुत्तु ॥४४

तसु पडिम गुरु-महिम निप्पडिम-रूवया ।
सांपटि(?)हि नंदणिण उद्धरिणि कारिया ॥
खेडि जिणवइसूरिहि पासि पइठाविया ।
तहि जि परि दिवसि सवि उच्छवा संगया ॥४५

विक्कमे वच्छरे वारहट्ठावने ।
महु-वहुल-पंचमी-दिवस किस सोवने (?) ॥
सोभनदेवराय कारिय पइट्ठ-विही ।
अप्पणा मज्झि होऊण गुरु-मह-निही ॥४६
धम्मपुरु नट्टपुरु किं नु गीयह पुरं ।
किं नु रासाण पुरु किं नु चच्चर-पुरं ॥
किं भुविहि संघ-पुरु किं नु दाणह पुरं ।
तहि महे संकियं एम खेडप्पुरं ॥४७
जालउरि उदयसिंह-रज्जि सोवनगिरी ।
उवरि सो संति ठाविउ जिणेसर-सुरी ॥
पवर-पासाय-मज्झम्मि संवच्छरे ।
फग्गुण-सिय-चउत्थि तेरहइ तेरुत्तरे ॥४८

---

४३. २. रइओ. ३. ठाविओ. ५. धारिओ. ८. कहय. ४४. ९. संजुत्त. ४५. १. निपडिम.° ३. जिणवय;° पय.° ४६. ३. पयट्ठ.° ४७.१. कि. २. कि. ४८. १. न्हाविओ.

जेम इंदिहि २ लच्छि-विच्छड्डि ।
नेऊण सोवन्नगिरि संति-नाहु जम्म-खणि न्हाविउ ।
तिम गुरुयाडंबरिंण सिरि-सुवन्नगिरि[२५०B]-उवरि ठाविउ ॥
जयतसिंह-इंद-प्पमुह इंदहि ण्हाविज्जंतु ।
सयल-संघ-दुरियइ हरउ संति-नाहु अइ-कंतु ॥४९
आरुहियउ संति-जिणु(?) सोवनगिरि-सिहरम्मि ।
तउ जाणीजइ सोवनहि फुल्लिहिं फुल्लि[य] भूमि ॥५०
फुल्लिय सवि वणराइ जगि फलिय सवि ऊजाण ।
जण हरसिय मण ऊससिय वद्धावणा पहाण ॥५१
दिक्खिवि उन्नय-पय-चडिय किर निय सामिय संति ।
हूई महि ऊसवमयइ जाय न हरिसह अंति ॥५२
गइय अणागम-देसि भय डिंब डमर दुब्भिक्ख ।
मरु-मंडलि अव वियसिय खेम-कुसल-सिरि-लक्ख ॥५३
जे पिक्खिहि सिरि-संति-जिणु रूवच्छेरय-भूउ ।
दंतिहि पाणह लेवि तहि नासइ मोहव्भूउ ॥५४

सामि सु संति-जिणिंदु सोवनगिरि-सिरि संठियउ ।
जण-मण-नयणाणंदु सयल-संघ-दुरियइ हरउ ॥५५
जे सिरि संतिहि कंतु जत्तुच्छवु भवियण करहि ।
पगि काँटउ भज्जंतु गरुड-जक्खु राखउ तउ ॥५६
जे संतीसर-वारि नच्चहि गायहि विविह-परि ।
ताह होउ सवि-वार खेलाखेली खेम-कुसल ॥ [२५१A]५७
एहु रासु जे दिंति खेलाखेली अइ-कुसल ।
वंभ-संति तह संति मेघनादु वि खेतल करउ ॥५८
एहु रासु बहु-भासु लच्छितिलय-गणि-निम्म[वि]यउ ।
ते लहंति सिव-वासु जे निय-मणि ऊलटि दियहि ॥५९
महि-कामिणि रवि-इंदु कुंडल-जुयलिण जा सहइ ।
ताम संति-जिण-चंदु अनु इउ रासु वि चिरु जयउ* ॥६०

*

५१. १. वणराय. ५३. २. दुभिक्ख. ५५. १. °जिणिदु. २. संठियओ. ५६. १. संतहि. ४. राक्खउ *इति श्रीशांतिनाथदेवरासः समाप्तः ॥

१३. शांतिनाथ-रास

पंचमु भरह-नरिंदो जिणवइ सोलसमउ ।
संति सुहंकर-कंदो पणमवि पयडिय नउ ॥१

चरिउ किंपि पभणउँ तसु नाहह सुर चूडामणि-चुंबिय-पायहँ ।
जं निसुणंतहँ भवियहँ सवणइँ भरियहिँ अमिय-रसायण-सघणइँ ॥२

खेडनयरि जो संति उद्धरणि कराविउ ।
विहि-समुदयस सुभत्ति जिणवइ-सूरि-ठाविउ ॥ध्रुवक॥

आसि भरहि सिरिसेण नरेसरु रयणाउरि जिम्व सग्गि सुरेसरु ।
जो सुरूवु कुरु-माणव-सारउ होइवि पत्तउ पढम सुरालउ ॥३

अमियतेउ विज्जाहरु नरवइ जो वेयद्धि पयाविण दिणवइ ।
पाणइ वीस अयर पुण देवू इहि वि दीवि विजयह बलदेवू ॥४

अवराइउ नामेण पसिद्धउ तो अच्चुय-तियसिंदु समिद्धउ ।
निव-वज्जाउहु करुणा-सायरु जो संथुणिउ सुरिंदिण सायरु ॥५

जिम्व गेविज्जु वि अनवम कंठह भूसणु तिम्व नवमह गेविज्जह ।
जायउ पुणु घणरह जिण(? निव)पुत्तू विजय मेहरह-राउ असत्तू ॥६

अज्जिउ चारु चरणि चक्कित्तणु तहिँ भवि अन्नु वि जेण जिणत्तणु ।
अहव सुपुन्नह काइँ अ-सज्झउ तउ सव्वट्ठि सुरुत्तम सिद्धउ ॥७

जा सिरि पर'उवयार-विवज्जिय को गुण तिणु इक्कंगिण भुत्तिय ।
इय चिंतिवि धुवु सुह-भर-नच्चिय जिणि सव्वट्ठ-सिरि वि परिचत्तिय ॥८

भद्दव-सत्तमि कसिण-निसा-भरि जगु पिच्छिवि गंजिउ तमि दुहयरि ।
तहि गुणत्थु अवइन्नु जु नज्जइ तेय-पुंजु जो कह-व न खज्जइ ॥९

चक्कि जिणेसरु जइ तुहु आयउ चउदस दुगुणन सुमिणिहि जायउ ।
तह वि जणणि-संतोसु सपुन्नहँ अहिउ न जइ सन्निहिं सप्पुन्नहँ ॥१०

गयउरि वीससेण-कुल-मंडणु अयरादेविहि नयणाणंदणु ।
सो जायउ जिण तेय-निहाणू पुव्व-दिसिहि जिम्व निम्मलु भाणू ॥११

जिट्ठ-कसिण-तेरसि निसि-अद्ध वि पउर-पयासिण तक्खणि वड्ढिवि ।
पुन्न कलानिहि जिण मघ-लंछणि जायइ अच्चब्भुउ किउ जण-मणि ॥१२

ध्रुवक—सुभती.

कंचण-तणु चालीस-धणुच्चउ भरणिहि धम्म-धुरंधरु सच्चउ ।
जासु सीसु उसिणीस-सुपच्चलु सिरिवच्छंकिउ मह-वच्छत्थलु ॥१३
सयल-सुरिंदिहिँ जसु किउ मज्जणु मेरु-सिहरि कय-पाव-पमज्जणु ।
वारिय-भव-जल-रासि-निमज्जणु सुरह न पुन्नहँ तह-वि किमज्जणु ॥१४
गब्भि वि असिवह संति जणंतहँ भुवणि वि तेयवंत अहरंतह ।
नासु संति जं जिण विक्खायउ सुचरिउ कित्ति-निमित्तु तमायउ॥१५
कुसुय-कमल-वणि जेम महासरु खीर-रयण-भरि जेम नईसरु ।
तिम्व चकित्त-जिणत्तण-लक्खण तसु संपुन्नु सरीरु वियखण ॥१६
पुन्नह परम कोडि फलु लोयहु तिहुयणि वि म अन्नु (?) पलोयह ।
जिन इय पडण नाइ निमित्तिण चक्कि-लच्छि सहु भइय जिणत्तिण ॥१७
जिम्व रेहइ सरउ वि ससि-सहियउ जह व संखु वर-खीरिण भरियउ ।
जिम्व महु-कोइल-रवि मायंदू तिम्व चक्कित्तणि संति-जिणिंदू ॥१८
कुमर-भावि मंडल-चक्कित्तणि जिण पणवीस सहस्स जइत्तणि ।
वरिस गमंतइ सयलावत्थहँ पयडिउ समतुलु मणु मह-सत्तहँ ॥१९
सयलु वि भारह-वरिसु पयक्खिणि भमिवि पसाहिउ जिम्व नव दिणमणि ।
नह-मंडलु अइ-सिग्धु अविग्घिण अहव सुतेयह किमिह वियप्पिण ॥२०
अखलिय-निखिल-चरण-परिपालण फल-पज्जंतु कु सक्कइ जाणण ।
नव-निहाण संपत्ति विनम्वइ नव-नियाण-वज्जण-फलु सिज्झइ ॥२१
चउदस-विह जं जीव सुपालिय विमल रयण तिणि तित्तिय पाविय ।
बद्ध-मउड-वर-राय निसेवय जे पडिबिंब महिड्ढिय देवय ॥२२
सोलस जक्ख-सहस जसु किंकर वसि अखंड छक्खंड भरह-धर ।
अमर-तरंगिणि सिंधु वि देवय चमर-धारि-रूविण जसु सेवय ॥२३
रज्ज-महातरु सुकय-सुकंदहँ हिमगिरि-परिमिय धर-मह-खंडहँ ।
आलवालु वत्तीस-सहस्सिउ जणवउ सायर-सलिल-समस्सिउ ॥२४
चुलसी चुलसी लक्ख दलालह हय-गय-रह सेणंग विसालह ।
छणवइ कोडि पयाइ दलंकिय विढिम जासु नह-चारि पसंसिय ॥२५
चउदस सोलस वीस दसुत्तइ नव नव दो चउवीस दु चत्तइँ ।
सहस दलावलि कमि संवाहहँ खेडागार पुण दोणमुहोहहँ ॥२६

---

१६. १ कमलि.

मह मडंब कव्वड पट्टण तह जण-खग-संकुल अट्ठ पसाहह ।
वर चउसट्ठि सहस्स विलासिणि भोग-पमोय-महाफल-दंसणि ॥२७
छनवइ गाम-कोडि जसु पल्लव महुर-गेय महुयर-झुणि-उब्भव ।
जसु बत्तीस सहस नाडय-विहि कुसुम-गुच्छ लोयण मुहु महु तिहि ॥२८
छाय-निलीण वि जसु नहु पावहिँ तवण-तावु सुह सरुअर गाहहिँ ।
अहव किमिंदु न किरण-करंबिय कुमय हुंति नित्तम वियसंतिय ॥२९
इय पयासिरि रज्ज-महादुमि पहु-पहाव परिवड्ढइ अह-कमि ।
पूरिय जण-वंछाहिग सुह-फलि विजिय-कप्प-पायवि अइ बहु-दलि ॥३०
संति-जिणेसर चित्त-विहंगमु भव-पंजरह विरत्तु सु-चंकमु ।
सुद्ध-पक्ख-थिर-बंधुर-कायह लीण-तल व मित्तु वि गय-रायह ॥३१
दावालिंगिय वणह समाणउ मल-मंजूस किलेस-निहाणउ ।
निखिल-सुक्ख-धरणीधर-वज्जू परम-दिट्ठि-दिट्ठठउ तिणि रज्जू ॥३२
नव निहाण असु-विट्ठि नवग्गह रयण स-विग्गह दारुण विग्गह ।
संताविउ तिणि नियं-अंतेउरु नरयाहवणु रणि रमणि-नेउरु ॥३३
जिम्व सप्पिणि विस-मंथर-सप्पिणि अहव रुद्ध दुधुर जिम्व जक्खिणि ।
अइ-दुसील जिम्व रमणि विरत्तिय तिम्व विभूइ जणि सयल वि चत्तिय ॥३४
विमल-ति-नाण-रयण-उवसोहिउ कप्पु मुणिवि लोयंतिय-बोहिउ ।
वरिसु देइ मह-दाण अ-मूढउ तउ सव्वट्ठ-सिविय आरूढउ ॥३५
सहइ विलित्तु विभूसण-मंडिउ जिम्व सुरिंदु सवि माणि अखंडिउ ।
जह व मेरु-धर कप्प-महीरुहु संति-जिणेसरु तिम्व सिविआरुहु ॥३६
अहिणव-पाउसु जिम्व वियसंतउ अखलिय कणय-धार वरिसंतउ ।
भूसण-कंति-तडिच्छड-सोहिउ गहिर-तूर-रव-गज्जि-विबोहिउ ॥३७
नील-तलिण-कंचुलिय-अलंकिय तहिँ वर-केस-कलाविण चंगिय ।
मय-भर कल-कंठिण गायंतिय हरिसि निरंतरु थिरु नच्चंतिय ॥३८
तरुण-विलासिणि-सेणि स-हेलइँ वरिहिण-पंति विडंवहिँ लीलइँ ।
नरवइ-पुंडरीय सुवलाहय कणय-धार हरिसिय-जण-वायय ॥३९
इय सिरि-संति अकालिय-वासह कसिण-चउद्दसि जिट्ठह मासह ।
सुह-पहावि संतावु पणट्ठउ नच्चइ जग मिय-कुंडि पइट्ठउ ॥४०
सहसंबिअ-मणोहर-काणणि सहस-राय-सहु भाव-पहाणिण ।
गहिवि दिक्ख मण-पज्जय पाविउ जिणि जग मण-परिणामु विभाविउ ॥४१

कयलि-खंभ-सुकुमाल-सीरीरिण तविउ तिव्वु-तवु सिव-मणि धीरिण ।
कणउ वि निम्मलु ताव न होयइ जाव न अप्पउ तावह ढोयइ ॥४२
कम्मह दुसह दाहक्खय-उज्जय संतिहि सव्वायर कय-निज्जय ।
नज्जइ तहि साहिज्ज-निमित्तिण सहिउ नियय-परिवारि समत्थिण ॥४३
चंद-जुन्ह अइ-सिसिर जलासय हिम-कण पवण-नियर तवनासय ।
मेलिवि सिय-नवमिहि दिणि पत्तउ नाइ पोसु सुह-मित्तु निरुत्तउ ॥४४
गंजिवि दुज्जय घाइ-महाभड जय-सिरि जिम्व केवल-सिरि उक्कड ।
जिणि पाविय अहवा मय-लंछण कइय न होइहि सिरि-लाभ-क्खण ॥४५
पाडिहेर वर पूय सुरासुर तुरिय तुरिय सइँ वियरहि स-प्फुर ।
जसु विणीय विवुह ते सामीय कज्जु पसाहहि समयावेसिय ॥४६
समवसरणि विहि-धम्मु पयासिउ अविहि-तिमिरु जण-मणह विनासिउ ।
विहिउ चउ-व्विहु हत्थालंवणु चउ-गइ जंतह संघु निरंजणु ॥४७
गणहर-ठावण सम्म-चरित्तह रोवण संति करइ सु-पसत्थह ।
गुरुग्गमणि समुग्गय नाणु वि अहव वेल चालइ तसु जाणु वि ॥४८
चउ-विह-धम्म-पइट्ठिय-खंभु करण-महासुंडा वर-वंभू ।
चरण-सिहरु सु-विसुद्धि-अलंकिउ निम्मल-भावण-सुहरस-पंकिउ ॥४९
सायार-प्परिवार पसाहिउ मूल-विंवु जहि दंसणु ठाविउ ।
सदवबोहु जहिं तुंगु स-तोरणु जसुवरि सेलेसी-वय-फोरणु ॥५०
परमत्ताणु तहिं कलसु चडाविउ भावुवगाहि कम्मट्ठि समाविउ ।
इहु वुत्तंतु निमित्तु सुदुक्खहँ पयडिउ भविय लोय अइसुक्खहं ॥५१
वरिस लक्खु उतरुत्तरु सुक्खइँ सेविय.................................

[अपूर्ण]

*

१४. सालिभद्र-रासु

[कर्ता : राजतिलक   लेखन-समय : १३८१]

[१]

थंभणपुरि पहु पासनाहु पणमेविणु भत्तिण
सयल समीहिय रिद्धि वृद्धि सिज्झइ जसु सत्तिण ।
हउँ पभणिसु सिरि-सालिभद्द-मुणि-तिलयह रासू
भवियहु निसुणहु जेण तुम्ह हुइ सिवपुरि वासू ॥१

अत्थि पुहवि वर-नयरु रायगिहु लच्छिहिँ पुन्नउँ
जिणि निज्जिय गय अंतरिक्खि अमरावइ मन्नउँ ।
रज्जु करइ तहिँ अमर-राउ जिव सेणिउ राओ
भंजिय-बल-भुयदंड-चंड-वेरिय-भडवाओ ॥२

तत्थ वसइ गोभद्दु सिट्ठि धण-जिय-धणईसरु
दीण-दुहिय-साहारु निच्च-हिय-वासि-जिणेसरु ।
रूविण निज्जिय-गउरि-लच्छि भज्जा तसु भद्दा
निरुवम-सील-पभाव-भावि मण-वंछिय-भद्दा ॥३

उप्पन्नउ तसु कुच्छि लच्छि जिव कासु सुरूविण
गोवालय-संगमय-जीवु मुणि-दाण-पभाविण ।
उज्जोयंतउ दिसह चक्कु संजायउ पुत्तू
सालि-खित्त-सुमिणेण कहिउ सोहग्गह पत्तू ॥४

घात

अत्थि सिरि-पुरु रायगिह-नामु
पालेइ सेणिउ पवरु राउ रज्जु तहिँ वेरि-खंडणु ।
गोभद्द-सिट्ठिहि पवर भज्ज भद्द संजाउ नंदणु ॥
कंतिहिँ जोइय-दिसि-पडलु संगमियउ गोवालु ।
साहु-दाण-कमलह तणउँ वित्थरियउँ किर नालु ॥५

१.१. ज. °पुर; व. °नाह. २. व. विद्धि. ४. व. भविय. २.१. व. पुहइ; नयर. राउगहि; पुन्नओ. २. व. मन्नओ. ३. व. रज्ज, तहि, जिय. ४. व. भूय. वयरिय; ज. भडवाउ. ३ २. ज. निव्वहिय, व. हियइ वसइ. ४.४. व. कहिय. ५. ४. ज. सिट्ठि; ५. व. तासु भज्ज.

जंपई ए वहिवा 'सुंआल कह संजम-भरु तुहु वहिसि ।
न सकइ ए वहिवा वाछ वाछडउ मह-रहह भरु' ॥२३
आणहि ए जणणि मन्नावि धन्नइ साहियउ सालिभॅद्दु ।
परिहरि ए धण-धन्नाइ वेरग्गिण वासिय-हियउ ॥२४
विच्छडि ए वउ गिन्हेइ पासि वीर-तित्थंकरह ।
विहरइ ए सह वीरण धन्नइँ सहियउ तवु तवइ ॥२५
विहरंतउ आविउ सामि वीर-जिणेसरु रायगिहि ।
वीरिण ए कहियउ 'माय-करि तुहु सालिभद्द पारिहिसि' ॥२६
गोचरि ए फिरतउ पत्तु जणणि-घरे तव किसिय-तणु ।
उलखियउ नहि मायाइ जिण-वंदण-ऊसिय-मणऍ ॥२७

*

तउ मुणि पहुतउ पोली समीवि हरिसिय धन्ना तं पिक्खेवि ।
विहरावइ दहि पूजतउ ॥२८
आविय पुच्छिउ तिणि मुणि वीरु कहइ पुव्व-भवु तसु अइ-धीरु ।
सालि-गामि उच्छिन्न-कुलु ॥२९
धन्ना सुउ संगम-गोवाळ तं आसी दय-दाण विसाळ ।
खीरिण तइँ मुणि पारियउ ॥३०
दाण-पभाविण एरिस रिद्धी जाया कमि तुह हुइ [इ]सि सिद्धि ।
पुव्व-जणणि विहरावियउ ।३१
इय जाईसर-लाभिण तुट्ठा तव-सोसिय-तणु धम्मिण पुट्ठा ।
धन्न सालिभॅद्दु बे-वि मुणि ॥३२
वेभारह गिरि उप्परि जंती अणसणु काउस्सग्गु कुणंती ।
सुद्ध-सिलामल-भूमि-ठिय ॥३३
अह भद्दा वक्खाण-अणंतरु जिणु पुच्छइ 'मह निच्छह (?) सुयवरु' ।
भणियं जिणि 'वेभारि गउ' ॥३४
सेणिय-सहिया भद्दा जाए जहि ँ बे ते मुणि उज्झिय-काए ।
पिक्खइ निच्चल दोवि मुणि ॥३५

---

२३. १. ज. सूयाल. २४. ३. ज. परिहरिव धए. २५. १. व. पच्छडि. २६. १. ज. आवियउ, व. ए आविउ, ४. व. किरि, °भद्द पारि सहि. २७. ३. ज. ओलखिओ; व. ए नहु. ३१. २. ज. हुइंसी, व. हुइसी. ३२. ३. व. धन्नउ. ३४. १. ज. भज्ज; २. ज. नत्थिह. ३५. २. ज. सुणि, व. जहि ठे ते.

पणमिय भद्दा बोलावेई 'वाछ पुत्त मुह संमुह जोई ।
महु हियडउ नहु फुट्टिसइ' ॥३६

मुणि नहु जोयइ नहु बुल्लेई भद्दा ढणहण तउ रोएई ।
आय मुच्छ धरणिहि पडिय ॥३७

गइय मुच्छ तउ सा विलवेई 'हइउ दैवु मह आस हरेई ।
'मइ जाणिउ इउ बोलिसइ ॥३८

कठिण-ठाणि कह इत्थ रहेसी तुहु कोमलु किम सीउ सहेसी ।
ध्रसकइ हियडउ मझ तणउ' ॥३९

सेणिय बोहिय भद्दा निय घरि पत्ता सबट्ठसिद्धि ते मुणिवर ।
राजतिलक-गणि संथुणइ ॥४०

वीर-जिणेसरु गोयमु गणहरु सालिभद्द तह धन्नउ मुणिवरु ।
सयल-संघ-दुरियइ हरउ ॥४१

सालिभद्द-मुणि-रासो जे खेला दिंती
तेसिं सासण-देवी जणयउ सिव-संती ॥४२

*

३६ ज. हियउं नह. ३७. १. व. वोल्लेई. २. ज. ढणढण. ३. ज. आयउ पुच्छ, व. मुच्छि. ३८ ३. व. जाणिउ वोलिसए; ज. यउ. ३९. ज. मूझु. ४१. ३. ज. दुरियउ. ४२. १. व मुणिवर रासू. २. व. जे निय उल्लासय. ज. प्रति का अन्तः इति श्रीशालिभद्र मुनिराजरासः संपूर्णः. व. का अन्तः श्री सालिभद्ररासः समाप्तः ।

१५. महावीर-रास

[कर्ता : अभयतिलक-गणि   रचना-समय : १२६० लेखन-समय : १३८१]

पासनाह-जिणदत्त-गुरु अनु   पाय-पउम पणमेवि ।
पभणिसु वीरह रासुलउ अनु   सँभलहु भविय मिलेवी ॥१
सरसति-माडिय नवउँ (?) अनु   मझु करि वडउ पसाओ ।
वीर-जिणेसरु जिम थुणउ अनु   मेल्हिवि अनु ववसाओ ॥२
भीमपल्लि-पुरि विहि-भुयणि अनु   संठिउ वीर-जिणेंदो ।
दरिसण-मित्ति वि भविय-जण अनु   तोडइ भव-दुह-कंदो ॥३
सिरि-सिद्धत्थ-नरेसरह अनु   कुल-नहयलि मायंडु ।
तिसलादेविय उवर-सरि अनु   सोवन-कमलु उदंडु ॥४
निरुवम-रूविण वीर-जिणु अनु   सवु जगु विम्हावेई ।
पणमंतह भवियण-जणह अनु   सयल वि दुरिय हरेई ॥५

*

तसु उवरि भुयणु उत्तंग-वर-तोरणं   मंडलिय-राय-आएसि अइ-सोहणं ।
साहुणा भुयणपालेण करावियं   जगधरह साहु-कुलि कलसु चडावियं ॥६
हेम-धय-डंड-कलसो तहिं कारिओ   पहु-जिणेसर-सुगुरु-पासि पइठाविओ ।
विक्कमे वरिसि तेरहइ सतरोतरे   सेय-वइसाह-दसमीइ सुह-वासरे ॥७
इह महे दसह दिसि संघ मिलियाँ घणा   वसण-धण एहिँ वरिसंति जिम्व नव-घणा ।
ठाणि ठाणे पणच्चंति तरुणी-जणा   कणिर-मणि-नेउराराव-रंजिय-जणा ॥८
घरि घरे बद्ध नव-वंदणय-मालिया   उब्भविय गुड्डिया चउक परिपूरिया ।
आदरिण संघु सयलो वि संपूइओ   सव्व-दरिसण-नयर-लोगु सम्माणिओ ॥९

---

१. १. B गुरो नहीं है. ३. B रासुलओ. ४. A सांभलह; मिलेवि.
२. १. A माडी वीनवउ, 'अनु' नहीं है. ३. A जिव; B थुणओ, 'अनु' नहीं है. ४. B मिल्हवि.
३. १. B तीमपल्ली°; A भवणि; 'अनु' नहीं है. २. B संठिओ; A जिणंदु. ३. B मित्त; A 'अनु' नहीं है. B असु. ४. B तोडए; AB °कंदु.
४. १. A 'अनु' नहीं है. २. B नहि°. ३. A °देवि; B उयरि; A 'अनु' नहीं है.
५. १. A. 'अनु' नहीं है. ३. A 'अनु' नहीं है. ४. A सयलु.
६. १. A भवणु. २ B °राइ.° ३. A भुवण°; B कराविउ. ४ B जगधर; A कलस; B वाडावेउ.
७. १. B तहि. २ A पयठाविउ, B पइट्ठाविउ. ३. B विकमे वरसि, सत्तरु°. ४ B सिय°.
८. १. A दिसोदिस. २ A दसण; B घणएहि विरिसंति जिम.
९. १. A घर; B घरि, वद्धा. २ B ऊभविय गूडिया.

रंगि खिल्लंति मल्हंति तहि खेलया महुर-सरि गीउ गायंति वर-बालिया ।
सीलणो दंडनायग-वरो हरसिओ वीर-भुयणेण पूरिय-पयन्नो हुओ ॥१०

*

तउ चडियउ वीरह भुयणि दंड-कलसु सोवन्नु त ।
तउ विहि-मग्गि समुच्छलिउ जय-[जय-]सद्दु रवन्नु त ॥११
वीरह धय जउ लहलहिय तउ विहसिय जग सव्व त ।
हरसिण भाट-नगारिय ए पढिया कव्व अपुव्व त ॥१२
पवण-पकंपिर वीर-गिहि जाणिज्जइ य पडाय [त] ।
उप्पाडिया चवेड किर दुट्ठ-रिट्ठ-हण... जेत ॥१३
चडियइ धयवडि वीर-जिणि कला न ...ग समाइ त ।
जणु पिक्खिवि वीरह भुयणु हल्लकलोलिहि जाइ त ॥१४
वीर-भुयणि सु-पइट्ठियइ दस-दिसि वज्जिय तूर त ।
दस-दिसि वद्धावणय हुय संघ-मणोरह पूर त ॥१५

*

जे पहु वीर-जिणिंदु नयणंजलि-पुडइहिँ पियहिँ ।
जिम्व अमियह निस्संदु ते जि धन्न सु-कयत्थ नर ॥१६
जे न्हवंति वंदंति अच्चहिँ चच्चहि वीर-जिणु ।
नव निहाण ति लहंति भंति म करिसहु भविय-जण ॥१७
वीरह सीह-दुयारि एहु रासु जे दिंति नर ।
ते सिवपुर-मज्झारि विलसहि सुख भोगवहिं पर ॥१८

---

१०. १. A 'मल्हंति' नहीं है. ३. A दंडनायगु, B डंडनायग. ४. A भवणेण.

११. १. B चडिउ; भुवणि. २. B डंड°; A सोवन्न, B सोवनु; A 'त' नहीं है. ३. B °मागि समुछलिउं; A समच्छलिउ.

१२. १. A लहलहहिं. २ A विहिसिय; 'त' नहीं है. B जगि. ३ A हरसिणि भट्ठ; 'ए' नहीं है. ४. A 'त' नहीं है.

१३. १. A वीर जे; २ B जाणीजइ.

१४. १. B धयवड वीरि; A जिण. २ A 'त' नहीं है, ३. A जणि; B पिखवि; वयणु. ४ A °कल्लोलिहि, B °कलोले.

१५. १. A भुवणि; B सुपइठ्ठयए. २ A दिसि दिसि; 'त' नहीं है. ३. A दिसि दिसि. ४ A 'त' नहीं है.

१६. १. B जिणिंद. २. B °णंजणि; पियहि. ३ B जिम. ४ A तिज्ज; B सुकय.

१७. १. B दंति. २ B अव्वहि. ४. B करिसउ.

१८. १. A सिंहदुवारि; B दिंति न; १८ का उत्तरार्ध नहीं है.

खेलाखेली देंति रासु जि इउ रलियावणउ ।
ताहँ करउ सिव संति बंभ-संति अनु खेतलउ ॥१९
जाम्व मेरु-गिरि सारु विलसइ महि-मंडलि सयलि ।
सिरि-मंडलिय-विहारु ताम्व एहु नंदउ जयउ ॥२०
अभयतिलक-गणि-पासि खेले मिलिवि करावियउ ।
इय निय-मण-उल्हासि रासुलडउ भवियण दियहु ॥२१

*



१९. १. B में नहीं है. २. B इयउ रलियावणओ. ३ A तहे. ४ A 'वंभ संति' नहीं हैं.
२०. १. B जाम. २ B मह°. ४ B ताम.
२१. २. A खेलहि; B. मिलवि कराविउ. ३ B इति; °मणि उल्लासि.

पुष्पिकाः इति श्रीमहावीररास समाप्त.

१६. थूलिभद्द-रासु

[लेखन-समयः १३८१]

पणमवि सासण-देवी अन्नइँ वाएसरि ।
थूलिभद्द-गुण-गहणु मुणिवरह जु केसरि ॥१

पभणउँ थूलिभद्द इहु रासू पाडलिपुत्ति नयरि जसु वासू ।
नंदउ रायह नंदह रज्जे मंति सगडालु अम्हारइ कज्जे ॥२

थूलिभद्द-पिउ ताव सगडालु महंतउ ।
चिंतइ सामिय-कज्जे राखइ अथु जंतउ ॥३

राय-तणइँ नितु पंडितु आवइ अहिणव गाहा रचिउ भणावइ ।
पंडित-दापु कियउ नितु राइँ दीजहि द्रम्मह पंच सयाइँ ॥४

इत्थंतरि महतेण रय बुद्धि दिखालिय ।
'पंडित अहिणव गाहा मुझु जाणइ बालिय ॥५

तावँहि अवसरि पंडितु आवइ पहिलउ वररुचि गाह भणावइ
पंडित रचिउ भणइ तव गाहा पोथइ पढिउ कहइ नरनाहा ॥६

तउ पंडितु पभणेई ऊछलिउ जु आखइ ।
नत्थी जणणिहि जाओ मुझु बीजउ पाखइ ॥७

अन्न-दिवसि जं अवसरि आवइ महता-बेटी राउ तेडावइ ।
सवि वर धिय रा-लागिय बोलिय सुललित भाउ न मेल्हइ खोलिय ॥८

इक-सँथ बि-संथिय बाला जं ति-संथिय जंपइ ।
वररुचि रूठउ राओ रोसिहि मणु कंपइ ॥९

तावह पंडितु बाहिरि थाइउ द्रम्म थवइ नितु गंगह जाइउ ।
पसरह लीयह द्रम्म दिखालइ 'नरवइ वट्ट अम्ह नवि पालइ' ॥१०

इत्थंतरि महतेण तउ द्रम्म उसारिय ।
पंडितु ओछउ थाए तलि दोरउ सारिय ॥११

---

२. १. ज. ब. रासु. ३. व. नंदह ३. ४. ज. अर्थु. ४. ३. ज. दानु. ४. ज. दीजइं. ६. १. ज. तावं. ३. व. मुकिय कहइ नव. ४. ज. °वाहा, ब. सवि गाहा ७. २. व. मु. क्खाइ. ४. व. पक्खइ. ज. बीजइ. ८. ३. ज. सविचार धीयः व. वर वरविय बोलण लागिय. ४. ज. मात्र. १०. १. व. थाई. २. ज. द्राम. व. जाई. ४. ज. वाट. नइ, व. अम्हह नवि जाणइ. ११. ३. ज. व. उछउ; व. थाउ. ४. ब. तहि. सारिउ.

तउ पंडितु कोपानलि चडियउ घाठउ हिंडइ सूनउ थियउ ।
तउ चेलुकाँ पिरायाँ पोसइ 'नंदु हणिउ सिरियउ राउ होसइ' ॥१२

नयर-दुवारे सद्दो नरवइ संभलियउ ।
महता रूठउ राओ अछतउ नितु टलियउ ॥१३

जावह महतउ अवसरि आवइ तावह पूठि दियइ पुणु नरवइ ।
महतइ जाणिउ मूल विणासिउ बंभण-वयणे नरवइ रूसिउ ॥१४

महतइ घरि जाएवी सिरियउ हक्कारिउ ।
तुम्हि नंदहु चिर-कालो अप्पइँ पिउ मारिउ ॥१५

सिरियउ भणइ 'न घल्लउँ घाऊ जीविउ लाछि लियइ जइ राऊ' ।
महतइ घरह कुडुंबउं खामिउ असिउ हलाहलु रयसिरु नामिउ ॥१६

महतइ विसु भक्खेवी किउ प्राण-तियागू ।
सिरियउ अंगह रक्खो तिणि मूकउँ खग्गू ॥१७

खग्गइ मूकइ हूयउ घाऊ कपटु करिउ तउ पूछइ राऊ ।
'सिरिया महतउ तइँ काइँ मारिउ सामि-प्रओजनु किंपि न सारिउ' ॥१८

सिरियउ पभणइ कर जोडेविणु 'निसुणि नरेसर कन्नु धरेविणु ।
जो महु सामिहि चूकइ भावइ सो हउँ निहणउँ जइ पिउ आवइ' ॥१९

सिरियइ रंजिउ राओ जिम जमह न चूकइ ।
हक्कारइ 'लइ मुंद्र महता-पदु ढूकइ' ॥२०

सिरियउ कहइ नरिंदह जाइउ 'अम्ह थूलिभदु जेठउ भाइउ ।
तसु तणि मुंद्र अम्ह नवि छाजइ कामिणि-विरहु किमइ जइ भाजइ' ॥२१

तउ निसुणेविणु नरवइ जाणिउ मुंद्र कहइ लइ थूलिभदु आणिउ ।
रायह मंदिरि थूलिभदु पहुतउ मणु आलोचिउ भोग-विरत्तउ ॥२२

उत्तरु देइ न जावँ मणि रचियउ दाऊ ।
लइयउ संजम-भारो अवगणियउ राऊ ॥२३

---

१२. १. व. हूयउ. २. व. सूनउं. ३. व. चेलुकइं परायइं. ४. व. रजि. १३. ३. व. सविवर रूठउ. ४. व कुवियउ. १४. १. ज. जाव. २. ज. ताव. ३. ज. विणासु, व. विणासो. १८. १. ज. व. खग्गह, ज. मूका. २. व. कोडु करिवि. ४. ज. परोजनु, व. प्रउजनु १९. ३. व. सामिय चूकउ. २१. २. ज. थूलभदु. व. अम्हह थूलिभद्र. २. ज. अम्हंह; च. तसु केरी. २२. ४. व. ओलोचिवि. २३. २. व. रधियउ. ४. व. अवगंनिउ.

लोचु करिवि जउ निब्भरु भावइँ ओघउ मुहतिय अवसरि आवइ ।
वेसु करिवि तउ मुणिवरु चलियउ विषय-महाभड्डु तिणि निद्दलियउ ॥२४
सासण-देवि तसु वंदइ पाया देखइ चमकिउ नंदु वि राया ।
नंदह धम्म-लाभु सो देविणु चल्लिउ धण कण रयण चएविणु ॥२५

जोआवइ नरनाहो मुणिवरपहु राइउ ।
ताम्व दुगंधह माहे दाहिण-दिसि जाइउ ॥२६

*

विजयसिंह-सूरि-गुरु तहिँ ज पुरि निवसए
गच्छु गुणवंतु जहिँ थूलिभदु पविसए ।
अट्ठ-मय-निद्दलणु पंच वय पालए
मुक्क-संसारु जिम्व मोक्खु नीहालए ॥२७

पत्त चउमासयं ताम्व मुणि आविया
गुरुहु आएसु लइ मुणिवरा चल्लिया ।
सप्प-विल सीह-गुफ कूय-निन्नासयं
गुरुहु वुतु मुणिहि तिथु कियउँ चउमासयं ॥२८

ताम्व उट्ठिवि गओ थूलिभदु गुरुहु पइ
'अम्ह चउमासयं वेस-घरि भणहु जइ' ।
गुरुहु (?) गुण जाणिउ वेस-घरि मूकओ
छहि विगइ पारतउ वयह न चूकओ ॥२९

वीतु चउमासयं ताम्व मुणि आविया
थूलिभदु मेल्हिवि नहिय लड्डाविया ।
इक्कि तप्पोधनि रोसु मणि धरियउ
'वेस-घरि अछइ तइँ दुक्करु चरियउ' ॥३०

---

२४. १. ज. व. भविं. ३. ज. जउ. २५. ४. व. वच्चिउ. २६. १. ब. जो पावइ. २. ज. मुणिवरु, राउ; व. पउराहू. ३. ज. गंधह, व. माहि. ४. व. दाहिणि. २७. १. ज. °सिंघ. २. व. वच्छ तहि. अच्छए. ३. च. अट्ठ कम्म. ४. व. जो; ज. सोक्खु, ब. मुक्ख. २८. १. ज. पहुत्तु. २. ज. लेउ २९. १. ब. दिट्ठ गउ भणइ. २. ज. अम्हह; भणउ. ३. व. जाणिवि. ४. ज. मणह, व. विगय विहरिउ. ३०. ३. ज. ब. तपोधनि. ४. ज. गाम घरि. व थक्कउ दूकरु भणियउ.

अम्ह गुरु सबलु किरि छंदओ भासए
तासु गुण लहिसु हउँ पुण वि चउमासए' ।
जाम्व गउ गिम्ह पुण पत्तु पावस-भरो
ताम्व तव-चरणि गउ वेस-घरि मुणिवरो ॥३१
वेस ससि-वयणि मृग-नयणि नव-जोयणी
सुविहि परि विवह-परि दिट्ठु मुणि लोयणी ।
'आॅवहु मुणि कवहु झुणि देसण तुम्ह दुल्लही
अम्ह घरि अनिक-परि तुम्हि जइ सुज्झई ॥३२
मज्झु णयणु गुरु-वयणु पर तु जइ झाइये
वेस-घरि पोस धरि तं दिवसु आइयं ।
श्रावणे सलिलु मुणि-सील संबोलियं
मयण-वृख-कंद खणि तवणि उम्मूलियं ॥३३
भाद्रवडइ घणु गुहिरउ जलहरो गाजए
चरित-पुर-पाटणु मयण-भड्ड भंजए ।
ईण-परि वेस-घरि मुणिहि मणु रंजियं
रमइँ नर अनिकि परि पिक्खेवि तं जियं ॥३४
भारथु पियइ(?) किरि बोल इमु छक्किउ
अत्थ विणु वेस पुणु निठुर वइ हक्किउ (?) ।
वेसा पभणेविणु 'दंसण लेविणु जाहि राय मग्गहि रयणु
तुहुँ अत्थ-विहीणउ मुझु हिंडहि दिणउ वरि वत्तु करेसि जइ (?) ॥३५
ताम्व मुणि मेघु घणु गणइ नं चल्लिओ ।
कलिहि नं जलिहिं नं नईहि नं पेल्लिओ ।
कम्म घणु मत्तु तणु भमइ पुठि लग्गउ
नेपाल-देसि गउ रयण-कंबलह(?) मग्गउ ॥३६

---

३१. १. व. करि. ३. ज. गिम्ह भरु. ४. ब. चरणु लइ. ३२. १. ज. °जोवणी. ३. व. कहहु, देस. ४. ज. तुम्ह. ब. जइ ससई. ३३. १ व मुझु, जे. २ व पाउसभरि, आवियं. ३ ज. सावणं; व. सलिल मणि, वोलियं. ४. ज सयल्दुम चित्तुउ, ब वृष, खणु तवणु. ३४.१ व गुहरउं, जल्हरो, ज. 'गुहिरउ' नहीं है. २. ज. °तु पुरु °णु. व. चा° पुरु. ३. ज. गंजिय. व. आण. ४ ज. पिखिवि. व. अनेक नर रसहि पिखेवि तहि रंजिय. ३६.. १ ज. °थो, पेल, व. °इ मुणि. २ ज. वेस घरि निट्ठुर वाह किसउ ३ ज. मुझु वयणु सुणेविणु, मग्गिज. व. जाइ मागगह. ४ ज. पणि वुत्तउ करिज तुहु. व. विहूणउ हिंडह लीणउ, घरि कम्मु. ३६. १ ज. आण परि वेसघरि जाइ मुणि हल्लिउ, व. चल्लिउ. २ ज. 'हि °हि पिल्लिओ, व. न, न नयइ पेल्लिउ. ३ ज. भन्न, व. कामतणु, पंथिलागउ. ४. दिसि, ज. साहुणा राउ जं भिद्दिउ.

भेटिउ साहुणा नेपाल-देस-राउ (?)
लहिउण कंबल-रयणु मुणि कइ दिसि ठाउ ॥३७
वेगु करि पंथु भरि चलिउ मुणि आविओ
'वेस लइ गमइ जइ' कहवि लम्बाविओ ॥३८
'आणि मुणि कंबल-रयणु' खालि मेल्हिउ कहइ ।
'पाउ मन लाइ घणि लक्खु द्रम्मह लहइ' ॥३९
'लद्धउ लक्खु मुणि दिट्ठु कउडी गम्मइ
वेस गुणवंत जसु धम्मि चित्तु रम्मइ' ।
ताव उट्ठिवि गउ गुरुहु पय बालउ
अक्खए 'इउ सँजम-भारु दुप्पालउ' ॥४०

*

नियतणि जओ मुणि दीणउ थाए
चणा भखेविणु मिरिय कु खाए ।
इह गय-खंभु करीरिहिं भज्जइ
थूलिभद्द जोग ति कह वि न छज्जइ ॥४१

कह नेपाल देसू भणीजइ वडइ कट्ठि तहिँ पुणु जाईजइ ।
तइँ मूरख नवि जाणिउ भेउ लक्ख रयण मुणि कंबलु एहु ॥४२
दिट्ठु रयणु जं कद्दमि भरियउँ हियडउँ सुन्नउँ सहु वीसरियउ ।
तउ मुणिवरु मेल्हइ नीसासा 'मज्झु तणी नवि पूरी आसा ॥४३
जं जिण-धम्मह किज्जइ मूलु तं तरुणत्तणि पालिउ सीलु' ।
इसउ वयणु सो हियडइ धरइ मयण-मोह चित्तह उत्तरइ ॥४४
चिंतइ मुणिवरु चिहियइ निरंगू संजम-तरु मइँ रूयइ भग्गू ।
धनु धनु थूलिभद्दु सो सामिउ पाउ पणासइ लइयइं नामिं ॥४५

---

३७. १. २. ज. में नहीं है. व. साहु, ३ ज. लहइ, कहइ, ठाइउ. व. कहउ. ३८.१.२ ज आणि परि वेस घरि रन्नु ले आइउ सवस पुणि २ नितुलि खालि लंवाविउ. ३९. २ ज. मिल्हिवि; ३ व. मं, ४ व. द्रम्म. ४० १. ज. लक्खु लद्धउ मुनि. गमइ, व. लाधउ लाखु, गमइ, २ ज. चित्ति मणु रंजमइ, व. चित्तु रमइ, २ ज. आंण परि वेस घरि मुणिहि मणु वाल्यिं, व. ऊट्ठिवि, ४. ज. अक्खइ अइयारु सजमभारो पालए. व. अक्खइउ. ४१ १ २. ज. नीचउ नियमणि लीण थाइ, विणा मुरिप, खाइं, ४ ज. त कस. ४२. १. ज नय, २ ज कष्टि, तहि वे, ३ ज मेओ. ४३. २ व हियड सुन्नं ४४. व मयणु ४५ २. ज मइरू यउ. ४ ज नामिउ

तसु ऊपरि मइँ मच्छरु कियउ तिणि कारणि मइँ फलु पावियउ ॥
तुहु महु गुरु कोसा महु माए हउँ पडिबोहिउ आणिउ ठाए ॥४६
मइ जाणिउ तइँ कियउँ अकम्मू आलि वहिउ गउ माणुस-जम्मू'।
वेसा कोसा बोल्लइ एहु 'अज्जिउ मुणिवर म-न करि खेऊ ॥४७
चारित्त-रयणु हियडइ धरहि गुरुहु पासि आलोयण लेहि ।
वहुत्त-कालु संजमु पालेहि चउदह पूरव हियइ धरेहि ॥४८
थूलभद्दु जिण-धम्मु कहेवि देवलोकि पहुतउ जाएवि ॥४९

*

४६. १. ज धरियउ, व कीयउ. २. ज प्रामीयउ, ३. ज तुहु गुरु, तुहु महु माया; व मुहु गुरु, मुहु माया. ४७. २ ज चलिउ गउ, ४ ज अज्जि. ४८ १. व. चारितु २. ज. व. लेहि°, ४ व. धरेवि. ४९. १. ज. कहेइ; व कहेई. २. व जाएवो.

पुष्पिकाः ज. थूलिभद्ररास समाप्तः, व थूलभद्दरासः समाप्तः.

१७. नवकार-रास

पणमिवि रिसह-जिणिंदु देव तियलोय-दिवायरु ।
वीरु नमउ गंभीरु धीरु सासय-सुह-सायरु ॥
अजर अमर वर-नाणवंत तिहुयण-चूडामणि ।
सासय-सुह-संपत्त सिद्ध वंदउ ते निय-मणि ॥१॥
अंग इगारह चउद पुव्व तिहुं पइ निम्मविया ।
गोयम-गणहर-पमुह सयल पणमउ आयरिया ॥
सुय-सागर-गुण-मणि-रवंन तिहुयण-विक्खाया ।
उवयत्ता उवएस-दाणि पणमउँ उवझाया ॥२॥
भव-संसार-विरत्त-चित्त सिव-सुह-उक्कंठिय ।
सतर-भेय-संजम-पवन्न तव-उवसम-संठिय ॥
सायर जिम गंभीर धीर मण जिम कंचणगिरि ।
अप्पमत्त-चारित्त-जुत्त जे पियमम-खम-सिरि ॥३॥
कंचण तिण मणि लिट्टु पवर जे मणि समु धारहिँ ।
समिति गुत्ति दय-दाण-धम्मु निम्मलु परिपालहिँ ॥
विजयवतीसि जि मुणि विदेहि पण भारहि सिवकर ॥
पणव-एरवइ जि तव-निहाण वंदहु भत्तिब्भर ॥४॥

ठवणि

पढमु पणमउँ, पढमु पणमउँ, सयल अरहंत
तयणंरु सिद्धवर सूरि गुणउँ गुण-विविह-संठिय ।
आगम-निहि उवज्झाय तह साहु नमउँ तव-धण-महिड्ढिय ॥
सिव-मंगल-कल्लाण-कर जो सुमरइ सु-वियाणु ।
सो परमिट्ठिहि फलि लहइ निच्छइ अमर-विमाणु ॥५॥

घत्ता

रोग-हरणु दुह-सय-दलणु सयल-समीहिय-रिद्धि-पयारु ।
नर-सुर-सिव-सुह-इट्ठ-करु भवियहु समरहु मणु नवकारु ॥६॥
भूमि-सयण वंभवय-कलिउ गुणइँ जु विहि-सउँ लक्खु नवकारु ।
अरहंत-पउ सो नरु लहइ महहिँ सुरासुर विविह-पयारु ॥७॥

महियलि सग्गि पयालि तह जसु जस-परिमल-गुरु-वित्थारु ।
सयलहँ आगम जो तिलओ जिणिहिँ भणिउँ सासय नवकारु ॥८॥

काम-धेणु चिंता-रयणु सुरतरु इहु भवि हुइ वंछिय-करु ।
जिण नवकारु सयल अहिउ भवियहु इह-पर-लोय-सुहंकरु ॥९॥

ठवणि

पाव-नासणु, पाव-नासणु, अत्थ-गंभीरु
भुवणत्तय-सुह-करणु दुट्ठ अट्ठ कम्महँ विहाडणु ।
कोह-दवानल-पवरु जलु कुगइ-पंथ निच्छइ निवारणु ॥
भव-सायर सो नरु तरइ मण-वंछिय-दायारु ।
पंचम-गइ निरुवम लहइ जो झायइ नवकारु ॥१०॥

घत्ता

दुन्नि वसह गुण-गण-धवल जिण-धर्मि किउ बहु भाउ ।
त संबल-कंबल ते सुर हुयइँ सुणि परमिट्ठि-पभाउ ॥११॥

सिद्धु पुरिसु नवकार-फलि अहि थिउ कुसुमह माल ।
त पुलिंदिय नरवइ-धू हुइय पाविय सुक्ख-विसाल ॥१२॥

तणु चइ पुलिंदु सु ऊपनउँ महियलि नरवइ-पुत्तु ।
त जाइ-सरणि निय-भउ मुणिउँ मणि वंछिउ तिणि पत्तु ॥१३॥

पाव-निरत गयणिहिँ भमंत समली वीधिय बाणि ।
त नवकारह फलि सा हुइय नरवइ-धू सुह-खाणि ॥१४॥

नर-भवि संपइ जे वरिय पत्त जि अमर-विमाणि ।
त सिद्धि-रमणि जे नर रमहिँ फलु नवकारह जाणि ॥१५॥

ठवणि

निसुणि संगतु, निसुणि संगतु, पुरिसु नामेण
कोडुंबिउ गामि थिउ मुणिहिं वयणि नवकारु झायइ ।
बीय-भविहिँ हुउ रयणिसिहो राय-रिद्धि मइ पवर पावइ ।
भुंजेविणु सुह-रज्ज-सिरि केवल-नाणु लहेइ ।
जो परमिट्ठिहि मणि सरइ मण-वंछिउ तसु होइ ॥१६॥

घत्ता

जिण-नवकारु जु नरु निचु झायइ सो आवइ कइया-वि न पावइ ।
दुट्ठ कुट्ठ गह-भउ तसु नासइ वाहि जलणु जलु दूरिहि तासइ ॥१७॥
गुरु गिरि रन्नि पडिउ मणि धारइ भव-सायरु तसु लीलइ तारइ ।
हरि करि विसहर साइणि सीह रिउ-दल तासु न लंघहिँ लीह ॥१८॥

जो नर झायइ ए परमक्खर दूरिहि नासहिँ तसु सवि तक्कर ।
पंच पयइँ जो अणुदिणु झायइ लच्छि सयंवर तसु घरि आवइ ॥१९॥
विहि-सउ उजमइ जो नवकारु दुत्तरु हेला तरइ संसारु ।
जो नरु सुमरइ अठसट्ठि अक्खर तासु सुरासुर वट्टहि किंकर ॥२०॥
पभणिउ यहु नवकारह रासु सयल-मंगल-गुण-गण-आवासु ।
जो नरु अणुदिणु निय-मणि झायइ सिव-पुर-लच्छि पवर सो पावइ* ॥२१॥

*

---

* अंत : इति श्रीनवकाररासः समाप्तः.

१८. धर्म-चच्चरी

सुमरेविणु सिरि-वीर-जिणु पभणिसु सावय-धम्मु ।
जे आराहइ इक्क-मणि सो नरु पावइ सम्मु ॥१
जो उट्ठंतउ पह-समइ चित्ति धरइ नवकारु ।
मुत्ति-नियंवणि-वच्छयलि विलसइ सो जिम हारु ॥२
साइणि डाइणि जोइणिय गह-रक्खस वेयालु ।
ताह न पहवइ जे सरइ पण-परमिट्ठि ति-कालु ॥३
कल्लाणावलि-वल्लरिय- पप्फुल्लण घण-पूरु ।
सुमरहु जिणवरु अनु सुगुरु मोह-महातम-सूरु ॥४
इक्कु देवु गुरु इक्कु जसु सो नरु सुक्खह खाणि ।
दो-पक्खा-संसत्तयह चंदु जेम कल-हाणि ॥५
जलनिहि-पडि[य]उ रयणु जिम कुल-वल-जाइ-समिद्धु ।
पाविवि दुलहउ मणुय-भवु अच्छि म विसयहिँ गिद्धु ॥६
तस-थावर-जीवह उवरि करि करुणा सुपवित्त ।
अलिय-वयणु दोसह भवणु परिहरि सच्चणुरत्त ॥७
परिहरि परधण-हरण-मइ सव्वाणत्थह खाणि ।
वंभचेरु निम्मलु धरहु निवसउ सासय-ठाणि ॥८
मुच्छा परिहरि मणि धरहु सव्व-वत्थु-परिमाणु ।
अभय-दाणु सत्तु भव(?)जियह कुणहु दिसा मम(?,माणु ॥९
इंदिय-पसरु निवारि करि भोगुवभोगह बंधु ।
दुह-कारणु परिहरि सयलु णत्थ-दंड-पडिवंधु ॥१०
पालहु चंडविडंस जिम सामाइउ अकलंकु ।
देसावगासिउ वउ धरहु धम्म-सारु निस्संकु ॥११
कम्म-वाहिउ सहु लियहु पोसह पव्व-दिणेसु ।
पालिउ अतिहि-सँविभाग-वउ(?) जम्मह फलु माणेसु ॥१२
वारह वय अंगीकरहु तासु मूलु संमत्तु ।
अरिहु देवु निग्गंथु गुरु धम्मु सु जिण-पण्णत्तु ॥१३

मूल के भ्रष्ट पाठः ५. ३. °संवतयह. ७. ३. °उमयणु दो°. १०. २. भोग° ११.४ धम्मु.

कम्मबंधु-कारणु चयहु   कुगइ-हेउ मिच्छत्तु ।
कुगुरु-कुदेव-कुधम्म-मइ   तसु सरूवु इइ वुत्तु ॥१४
कत्थूरी कप्पूर वर   कुंकुम चंदण एहिँ ।
चच्चहु जिणवरु विविह-परि पाविउ बहु-पुन्नेहिँ ॥१५
चंपय-पाडल-केवडिय-   जाइ-कुंद-पमुहेहिँ ।
पूयहु फुल्लहिँ तित्थयरु   गंध-लुद्ध-[भम]रेहिँ ॥१६
सुह-गुरु-चरणिहिँ वंदणउ   बारह वत्तह जुत्तु ।
कन्ह-नराहिव-जिम दियहु   विरयहु गत्तु पवित्तु ॥१७
छव्विहु आवस्सउ करहु   उभय-कालु गुरु-भावि ।
धम्मु चउव्विहु अणुसरउ   मुच्चहु जिम भव-पावि ॥१८
अमिय-सरसु सुहगुरु-वयणु   कन्नंजलिहिँ पिवेहु ।
एवमाइ धम्मुज्जमिहि   नर-जम्मह फलु लेहु ॥१९
जे आराहइ गुरु-चलण   जिणवर-धम्मु करिंति ।
संसारिय-सुहु अणुभविय   सिवपुरि ते विलसंति ॥२०

*

---

१४. १. °बंधु. १५. ३. विविविह. १६. ३. पूअहु. १८. १. अछव्विहु; २ भाविहिं.
३ °विहु.

पुष्पिका : इति धर्म्मचच्चरी समाप्ता.

१९. चच्चरी

भगति करिवि पहु रिसह-जिण वीरह चलण नमेवि ।
हउँ चालिउ मणि भाउ करि दुइ जिण मणि सुमरेवि ॥१

सरसइ-सामिणि-पय-कमलु गरुय-भगति पणमेवि ।
ऊजिलि नेमि सेत्तुजि रिसहु पणमिसु अंबाएवि ॥२

पहिलउँ थंभणपुरि नगहु दुरिय-निवारण-पासु ।
कमठासुर जिणि भाणु गलि किउ सिवपुरि-आवासु ॥३

सावय साविय मिलि भणहिं आजु दिवसु सुकयत्थु ।
तेत्रेवीसमु जिणु थंभणइ पणमिसु पारसनाथो ॥४

सासण-सुर जे विहि-भुयणि ते सवि मणि सुमरेवि ।
संघह दुरिउ निवारि तुहु सामिणि अंबाएवि ॥५

संघि सयलि थउ मन्त्रियउ गामि नयरि जिण-भुयणु ।
न्हवणु विलेवणु पूज करि तह गायह गुण-गहणु ॥६

धन्नु सु सोरठ-देसु प्रिय धन्नु गिरिहिं गिरनारु ।
जासु सिहरि पहु नेमि-जिणु सामिउ सोहग-सारु ॥७

मह्यु मणु छइ उम्माहियउ किसउ सु गढ-गिरनारु ।
जहिं निवसइ जिणु अतुल-बलु सो डुंगरु जगि सारु ॥८

रेवय-गिरिवर-सिहरि चडि अदबुदु करि सिंगारु ।
परियणि पुत्ति कलत्ति सउँ पणमिसु नेमि-कुमारु ॥९

जायव-कुल-मंडण-तिलउ पणमिसु नेमि-जिणंदु ।
जिम्व मण-वंछिउ संपडइ तोडइ भव-दुह-कंदो ॥१०

कलस भरेविणु गयँदवइ निम्मलु लेविणु नीरु ।
फेडिसु कलि-मलु आपणउँ न्हाविसु साँवल-धीरु ॥११

---

१. ३. ख. धरि; ४. ख. दुइणि. २. २. क. पणमेसु. २. ३. क. सेतुजि ३. १. खं. पणमहु थंभइ. ४. १. ख. संघि मिलि इयउ; २ क. °थो; ४. क. पणमहु, °थो. ५. ख. में ५,-६ का भाग उलटा है. ६. १. ख. इयहु. २. ख. गाधि. ८. ३. क. °बहु. ९. २. ख. सिणगारु. १०. २. क °धो. ३. ख. जिण. ४. क. °दो. ११. १. ख. गइ-दवइ. २. क. °रो. ४. क. °रो.

जाइ कुंद मुचकुंद हउँ लेवि कुसुम-वर-माल ।
पूज रइसु सिरि-नेमि-जिण कंचण-रयण-विसाल ॥१२
अंगि विलेवणु सामि करि चंदणु मेलि कपूरु ।
अगरु उखेवहु तहि भुग्गणि वरतह सहिउ कपूरु (?) ॥१३
पंच-रंग पहिरावि पडि प्रिय मन करहि उसूरु ।
कसथूरिय मयवट्टु भरवि मुहि देहि सुरहि कपूर ॥१४
मण-चिंतिय बलि वित्थरहु करहु जँ मणह सुहाइ ।
पूरि मणोरह सामि महु जिव कलि-मलु सहु जाइ ॥१५
लूणु नीरु अरु आरतिउ सामिहि उत्तारेसु ।
पंच-सबुदु वज्जावि करि मंगल-दीवु करेसु ॥१६
गुण गायहु पहु नेमि-जिण करहु विविह बहु भत्ति ।
चउ-गइ-गवणु निवारि जिव पावहु पंचम गत्ति ॥१७
जासु सिहरि दुइ मुणि वसहि संब-पजुन्न-कुमार ।
तिव करि सामिय नेमि-जिण जिव पणमउँ सवि-वार ॥१८
कवडि-जक्ख तइँ वीनवउँ संघ-वयणु अवधारि ।
सेत्तुजि नमहिँ जि रिसह-जिणु तहँ तुहु दुरिय निवारि ॥१९
तिव करि सामिय रिसह-जिण जिवँ तुह दरिसणु देव ।
परियणि पुत्ति कलत्ति सउँ करउँ तुहारिय सेव ॥२०
जे नर सामिय तइँ नमहिँ करहिँ भगति-जोहारु ।
सुगुरु-वयणु निय-मणि धरहिँ तहँ थोडउ संसारु ॥२१
जहिँ निवसइ पहु पढम जिणु रिसह-जिणेसरु देउ ।
सेत्तुजि सिद्धा के-वि मुणि ताहँ कु जाणइ छेउ ॥२२
कि-वि सावय नव-नविय-परि बोलहिँ घणउँ विचारु ।
जे जुग-पवरु न गुरु नमहिँ महु मणि तहँ संसारु ॥२३

---

१२. ३. ख. रयहु. १३. २. क. सिरखंडु. ४. ख. वरत. १४. ४. ख. पवर क.° १५. १. ख. मणि; २ क. करउ ज; ख. सुहाए ४. ख. जाए. १६. २ क. सामिय ४. ख. दीवउ देसु. १७. ३. क. गमण. १८. १. क वसह. १९. के लिए ख. में कवडजाख तइं वीनवउं संघमणोरह पूरि । जिव पूजह पहु रिसहजिणु ऊगइ ऊगइ सूरि ॥१९॥ इसके पश्चात् ख. में क. की २६वीं तूक है. २०. क. तुम्हायरीय. ख. तहारिय. २१. ३. ख. वयणि जिणेसर सूरि गुरु. २२ ख में पूर्वार्ध—उत्तरार्ध उलटे हैं २३. १. ख. नवन परिहि में २२. ३. क. सेतुजि.

नेमि-नाहु रेवय-सिहरि सेत्रुजि रिसह-जिणिंदु ।
नमहु पास-जिणु थंभणइ अव्बुइ पढम-जिणिंदु ॥२४

मेरु जाँव इह धर-वलइ सायर चलइ न नीरु ।
ताँव संघु चउ-विहु जयउ अतुल-परिक्कम-धीरु ॥२५

सामिणि अंबाएवि सुणि संघ-मणोरह पूरि ।
धणि कणि परियणि सयलि तुह दुरिय निवारे दूरि ॥२६

जिण चउवीस वि वीनवउँ मागउँ एकु पसाउ ।
सेव करावहु आपणिय नवि ईहउँ सुर-राउ ॥२७

राजु रिद्धि नहु मणि धरउँ कंचण-रयण-भँडारु ।
सिव-सुह मागउँ एकु हउँ जो तियलोयह सारु ॥२८

सावय साविय जे भणहिँ इह चाचरि सुह-भावि ।
ते सवि भूरि-भवंतरहँ छुट्टहिँ कलि-मल-पावि ॥२९

गाँवि नयरि पुरि जिण-भुयणि जे चाचरि पभणंति ।
चउ-गइ गमणु निवारि नर ते सिव-सुहु पावंति ॥३०

*

२४. २. क. सेतुजि. २५. २. ख. वलइ. ४. ख. धीरु. २६. ३. ख. संघ तुहु; ४. ख. निवारि जि. ३०. ख. पयणि जिणेसरसुरिगुरु.

पुष्पिका : क. चच्चरी समाप्ता. ख. चाचरि समाप्ताः.

२०. दिघम-सबरी-भास

गय-गमणि बाली, मयणची आली, दिघमि निय-नयणुले वनि निहाली।
नयण-रसि रसाली, राय-नी हीयाली, कुसुमसर-पसिरि हुई त्र(?)पराली ॥१

राग-रसि राचइँ, विषय-मदि माचइँ, भमइ संसारि ते जीव साचइँ ।
पर-रमणि ईहइँ,नरक न बीहइँ, दिघम ते कुंभीय-पाकि पाचइँ ॥२॥आं०

ससिवयणि-गूतउ, नेह-कलि खूतउ, रंगि निरखइ निखूतउ ।
पासि तसु पहुतउ, मोह-भरि जूतउँ, सांभरि भोलीय विभ्रमि भूतउ ॥३॥राग०

भणइँ नेहल-वयणि, तूं कवण मृग-नयणि, अमृत-सम-वयणि, भमि काँईं वणि ।
रूपि जिम सुर-रमणि, वेस अनेसउ पणि, बोलि न समाइँ अम्ह एहु मणि ॥४॥राग०

कहइ इम नारी, वसउँ गिरि-मझारी, पहिरणि पान ए परि अम्हारी ।
भील-वहुआरी, वालंभि वारी, फिरउँ फल-काजि हुं भोलुयारी ॥५॥राग०

राइ इम जाणी, भील-की राणी, मयण-नी आण मन-माँहि आणी ।
भणइ इय वाणी, करउँ पटराणी, मेल्हि वनु जोइतूं राजु माणी ॥६॥राग०

पहरि रलीयाली, जादर-फाली, कूर-कप्पूर-रसु जोइ-न बाली ।
मूंकि वनु टाली, भीलु अनु हाली, दिघमु आदरि म सुंदरि विमाली ॥७॥राग०

दिघम इकु जाणउ, भोग म-न वखाणउ, एकु जि अम्ह मनि भील-राणउ ।
राजु तम्हि माणउ, बोल एउ जाणउ, अवरु नवि राउ राणउ ॥८॥राग०

धउलहरि वासउ, सवरि तम्हि विमासउ, दिघमु राजा न कीजइ निरासउ ।
धउलहर वरासउ,नरक नवि सांसउ, भीलडी भणइ मन भयु विणासउ ॥९॥राग०

नरक भयु आछइ, तरणि ते पाछइ, मयण-भडु आज मूं-ऊपरि काछउँ
सहूउ सुख वाँछइ, कालु पुण ताछइ, गलइ जीउ जेम जलु चीरि आछइ ॥१०

कुसुमसरु जागइ, कहिउ किम लागइ, शबरि तइ प्राणिहि दिघमु मागइ ।
म कहि इम राया, अरिरि भव-माया, प्राणि नवि नेहु इहु कहिउ आगइ ॥११

शवरि भो लामी, वात आंतरामी(?), प्राणु नवि माणु नवि गिणइ कामी ।
दिघम तूं सामी, राय-धूय पामी, शबरि-सिनेह-नी दिसि जि लामी ॥१२॥राग०

रहि न रहि वारिउ, न सहइँ एउ विचारिउ, अलप-काजि तूँय कुणि वियारिउ ।
विसय-विषि धारिउ, मोह-भरि-भारिउ, दिघम तइँ आपुलु जनमु हारिउ ॥१२॥राग०

रागु अति-न कीजइ. दिघम काइ खीजइ, प्रेम-परवसपणइ देहु दाझइ ।
गंध-गुणि रातउ, फल-रसि मातउ, भमरडउ कमल-वनि जोइ वाझइ ॥१४॥राग०

पर-कलत्र देखी, जणणि-जिम लेखी, स्वदार-संतोषु करि वूझि वूझि ।
दिघम-कुल गाजइ, जस पडहु वाजइ, सील-जलि सूझि तूं मम म मूझि ॥१५

नयणि तिणि भीजउ, दिघमु मनि पतीजउ, धनु धनु बहिनि तूँ इम खमावइ ।
शवरि-ने पाइ लागइ, आ[सी]सु तव मागइ, वलिउ नर-नाहु निय-नयरि आवइ ॥१६*

*

२१. जिनचंद्रसूरि-फागु

अरे पणमवि सामिउ संति-जु सिव-वाउलि-उरि हारु ।
अरे अणाहिलवाडा-मंडणउ सव्वह तिहुयण-सारु ॥१
अरे जिणपबोहसूरि-पाटिहि सिरि-संजमुसिरि-कंतु ।
अरे गाइवउ जिणचंदसूरि-गुरु कामलदेवि-कउ पूतु ॥२
अरे रुयडउ तपियउ पेखिवि न सहए रति-पति-नाहु ।
अरे बोलावइ वसंतु ज सव्वह रितुहु राउ ॥३
अरे आगए तुह बलि जीतज्यो गोरड-करउ वालंभु ।
अरे इसइँ वचनु निसुणेविणु आणयउ रलिय वसंतु ॥४
अरे पाडल वालउ वेउल सेवत्री जाइ मुचकुंदु ।
अरे कंदुकरणी रायचंपक विहसिय केवडि-विंदु ॥५
अरे कमलहिँ कुमुदिहिँ सोहिया मानस-जवलि तलाय ।
अरे सीयल कोमला सुरहिया वायइँ दक्खिण वाय ॥६
अरे पुरि पुरि आँबुला मउरिया कोइल हरखिय देह ।
अरे तहिँ ठए टुहकए बोलए मयणह केरिय खेह ॥७
अरे इसइ वसंतिहि हूयए माणुस केतिय मात्र ।
अरे अचेतन जे पाखिया तिन्हु तणी जुगलिय वात्र(?) ॥८
अरे इसउ वसंतु पेखेवि नारिय-कुंजरु कामु ।
अरे सिंगारावए विविह परि सव्वह लोयह वासु ॥९
अरे सिरि मउडु कन्नि कुंडल-वरा कोटिहि नवसरु हारु ।
अरे वाहहिँ चूडा पागिहि नेउर-कओ झणकारु ॥१०
अरे सिरि आमोडा लहलहहिँ कसतूरिय महिवट्टु ।
अरे न.. ॥११

× × × × × × × ×

.......................ट परि हुयउ देव-गण-भाउ ॥४१
रिण-तूरिहिँ वज्जंतिहिँ उट्ठिउ सील-नरिंदु ।
देखिवि उतकट्ठ विम्हियउ सयलु-वि देविहि विंदु ॥४२
अरे द्रेठिहिँ द्रेठिहिँ दीठए नाठउ रति-पति-राउ ।

× × × × × × × ×

नारीय-कुंजरु मेल्हिवि जोयए छाडिए खाल ॥४४
धरणिंदह पायालिहि पुहुविहि पंडिय-लोउ ।

× × × × × × × ×

जीतउँ जीतउँ इम भणइ सग्गिहि सुरपति इंदु ॥४६
वद्धावणउँ करावए सिग्गहि जिणसर-सूरि ।

× × × × × × × ×

गुजरात-पाटण भल्लउँ सयलहँ नयरहँ माहि ॥४८
मालवा-की वाउल भणहिं सयलहँ लोयहँ माहि ।

× × ×× × × ××

सिरि जिणचंद-सूरि फागिहि गायहि जे अति भावि ।
ते वाउल अरु पुरुसला विलसहि सिव-सुह सावि ॥५०

*

२१. सिरि-थूलिभद्द-फागु

[रचना-समयः १३००-१३५०　　　　कर्त्ता-जिनपद्मसूरि]

पणमिय पास-जिणिंद-पय　अनु सरसइ समरेवी॑ ।
थूलिभद्द-मुणिवइ भणिसु　फागु-बंधि गुण केवी॑ ॥१

[प्रथम भास]

अहे सोहग-सुंदर रूववंतु　गुण-मणि भंडारो ।
कंचण जिम झलकंत-कंति संजम-सिरि-हारो ॥
थूलिभद्द मुणि-राउ जाम　महियलि बोहंतउ ।
नयरराय-पाडलिय-नयरि　पहुतउ　विहरंतउ ॥२
परिसालइ　चउमास-माहि　साहू　गहगहिया ।
लियइ अभिग्गह गुरुह पासि　निय-गुण-महमहिया ॥
अज्ज-विजयसंभूइ-सूरि　गुरु-वर　मुकलाविउ ।
तसु आएसि मुणीसु　कोस-वेसा-घरि आविउ ॥३
मंदिर-तोरणि　आवियउ　मुणिवरु　पिक्खेवी ।
चमकिय चित्तिहि दासडिय वेगि जाइ वधावी ॥
कोसा अतिहि ऊतावलिय हारिहि॑ लहकंती ।
आविय　मुणिवर-राय-पासि　करयल　जोडंती ॥४
'धम्म-लाभु' मुणिवइ भणवि　चित्रसाली॑ मागेवी॑ ।
रहियउ सीह-किसोर जिम　धीरिम हियइ धरेवी॑ ॥५

*

[द्वितीय भास]

अहे झिरिमिरि झिरिमिरि झिरिमिरि ए मेहा वरिसंते ।
खलहल खलहल खलहल ए वाहला वंहते ॥
झबझब झबझब झबझब ए वीजुलिय झबकइ ।
थरहर थरहर थरहर ए विरहिणी-मनु कंपइ ॥६
महुर-गँभीर-सरेण　मेह जिम　जिम गाजंते ।
पंचबाणु निय कुसुम-बाण तिम तिम साजंते ॥
जिम जिम केतक महमहंत परिमलु विहसावइ ।
तिम तिम कामिय चरण लग्गि निय-रमणि मनावइ ॥७

सीयल कोमल सुरहि वाय जिम जिम वायंते ।
मान-मडप्फरु माणणिय तिम तिम नासंते ॥
जिम जिम जल-भर-भरिय मेह गयणंगणि मिलिया ।
तिम तिम पंथिय-तणा नयण नीरिहिँ जलजलिया ॥८
मेहा-रव-भरि ऊलटिय जिम जिम नाचइँ मोर ।
तिम तिम माणिणि खलभलइँ साहीता जिम चोर ॥९

*

[तृतीय भास]

अह सिंगारु करेइ वेस मोटइ मन-ऊलटि ।
रयइ अंगि बहु-रंगि चंगि चंदण-रस-ऊगटि ॥
चंपक-केतक-जाइ-कुसुमि सिरि खुंप भरेई ।
अति-अच्छउँ सुकुमालु चीरु पहिरणि पहिरेई ॥१०
लहलह-लहलह-लहलहए उरि मोतिय-हारो ।
रणरण-रणरण-रणरणए पगि नेउर-सारो ॥
झगमग-झगमग-झगमगए कानिहिँ वर-कुंडल ।
झलहल-झलहल-झलहलए आभरणहँ मंडल ॥११
मयण-खग्गु जिम लहलहए जसु वेणी-दंडो ।
सरलउ तरलउ सामलउ (?) रोमावलि-दंडो ॥
तुंग पयोहर उल्लसइ [जिम] सिँगार-थवक्का
कुसुम-बाणि निय अमिय-कुंभ किर थापणि मुक्का ॥१२
काजलि अंजिवि नयण-जुय सिरि सइँथउ फाडेइँ ।
बोरीयाँवडि-कंचुलिय पुणि उर-मंडलि ताडेइँ ॥१३

*

[चतुर्थ भास]

अहे कन्न-जुयल जसु लहलहंत किर मयण-हिँडोला ।
चंचल चपल तरंग-चंग जसु नयण-कचोला ॥
सोहइँ जासु कपोल-पालि जणु गालि-मसूरा ।
कोमलु विमलु सु-कंठु जासु वम्मह-सँख-तूरा ॥१४

लवणिम-रस-भरि कूवडिय जसु नाहिय रेहइ ।
मयण-राय किरि विजय-खंभ जसु ऊरू सोहइ ॥

जसु नह-पल्लव कामदेव-अंकुस जिम राजइ ।
रिमिझिमि रिमिझिमि पाय-कमलि घाघरि यसु वजइँ ॥१५

*

नव-जोवण-विलसंत-देह नव-नेह-गहिल्ली
परिमल-लहरिहिं महमहंत रइ-केलि पहिल्ली ॥

अहर-बिंब परवाल-खंड वर-चंपा-वन्नी ।
नयण-सलूणीय हाव-भाव-बहुरस-संपुन्नी ॥१६

इय सिंगार करेवि वरु जउ आविय मुणि-पासि ।
जोएवा कउतिग मिलिय सुर-किन्नर आकासि ॥१७

*

[पंचम भास]

अहे नयण-कडक्खिहिँ आहणए वाँकउँ जोवंती ।
हाव-भाव-सिंगार-भंगि नव-नविय करंती ॥

तह-वि न भिज्जइ मुणि-पवरु तउ वेस वोलावइ ।
'तवण-तुल्लु तुह विरह नाह मह तणु संतावइ ॥१८

वारहँ वरिसहँ तणउ नेहु किणि कारणि छंडिउ ।
एवडु निट्ठुरपणउँ काइँ मू-सिउँ तुंम्हि मंडिउ' ॥

थूलिभद्द पभणेइ 'वेस अइ-खेदु न कीजइ
लोहिण घडियउँ हियउँ मुज्झ तुम वयणि न भीजइ' ॥१९

'मह विलवंतिय उवरि नाह अणुरागु धरीजइ
एरिसु पावस-कालु सयलु मू-सिउँ माणीजइ' ॥

मुणिवइ जंपइ 'वेस ! सिद्धि-रमणी परिणेवा ।
मणु लीणउँ संजम-सिरीहिँ सिउँ भोग रमेवा ॥२०

भणइ कोस 'साचउँ कियउँ "नवलइ राचइ लोउ" ।
मू मिल्हिवि संजम-सिरिहिँ जउ रातउ मुणि-राउ' ॥२१

[षष्ठ भास]

अहे उवसम-रस-भर-पूरियउ(?) रिसि-राउ भणेई ।
'चिंतामणि परिहरवि कवणु पत्थरु गिन्हेई ॥
तिम संजम-सिरि परिचएवि सुर-इंदु-समुज्जल ।
आलिंगइ तुह, कोस ! कवणु पसरंत-महाबल' ॥२२

'पहिलउँ हिवडाँ' कोस कहइ 'जुव्वण-फलु लीजइ ।
तयणंतरु संजम-सिरीहिँ सिउँ सुहिण रमीजइ' ॥
मुणि बोलइ 'जं मइँ लियउ तं लियउ जि होइ (?) ।
कवणु सु अच्छइ भुवण-तले जो मह मणु मोहइ' ॥२३

इणि परि कोसा अवगणिय थूलिभद्द-मुणिराइ ।
तसु धीरिम अवधारि-करि चमकिय चित्ति सुहाइ ॥२४

*

[सप्तम भास]

अइ-बलवंतु सु मोह-राउ जिणि नाणि निधाडिउ ।
झाण-खडग्गिण मयण-सुहड समरंगणि पाडिउ ॥
कुसुम-वुट्ठि सुर करइ तुट्ठ तह जयजय-कारो
'धनु धनु एहु जु थूलिभद्दु जिणि जीतउ मारो' ॥२५

पडिबोहिवि तह कोस वेस चउमासि-अणंतरु
पालि अभिग्गह ललिय-वलिय गुरु-पासि मुणीसरु ॥
'दुक्कर-दुक्कर-कारगु' त्ति सूरिहिँ सु पसंसिउ
संख-समुज्जल-जस-लसंतु सुर-नरिहिँ नमंसिउ ॥२६

नंदउ सो सिरि-थूलिभद्दु जो जुगह पहाणो
मलियउ जिणि जगि मल्ल-सल्ल-रइवल्लह-माणो ॥
खरतर-गॅच्छि जिणपदम-सूरि-कीउ फागु रमेवउ
खेला नाचइँ चैत्र-मासि रंगिहि गाएवउ ॥२७

*

पाठान्तर

(पा० = पाटण की प्रति; का० = वडोदरा की प्रति; ना०, ना०[1] = नाहटाजी की दो प्रतियाँ; पु०=पुण्यविजयजी के संग्रह की प्रति । उल्लेख तुक और पंक्ति के अनुसार)

१, १.पु· पणमवि, पा. पु. °जिणंद°; २, १, का. पु· 'अह' नहीं है; ३. का. महिअलु; बोहत्तउ, पु. मोहंतु; ४. पा. पाडलियमाहि; का. पाडलियपुरि पहतउ; ३. १. का. वरसालय; २. पु. लिइं; पा. गुरह; का. गुणसीमहियो; ३. पा. पु. °संभूय°; गुरुवय; पा. मोकलावइ; ४. का. तस्स; पा. आवइ; ४. १ का. मुणिवर पेक्खेई; २. का. चित्ति चमक्किय; दासड ए; वेगि लीय वधावी; ३. पा. वेसा; का. अतिहिं उतावलीय; पा. हारिहि, ४. पा. करयल, का. करइल; ना. पु. ४ और ५ के बीच 'भास' । ऐसे समस्त खण्डों के अन्तिम पद्य के पहले. ५, १. का. मुणिवय; पा. भणिसु; का. भणवि; २. का. चित्तसाली; पा. मंगेवी; ३. का. सिंह°. ६.१. पा. वरिसंति, का. वरसंते; २. पा. वहंति; पा. झबकइ; ४. का. विरहणिमनु; ७. का. लागि; ८. १. का. ना. वाजंते; २. का. मणफर; पा. नाचंते, पु. ना· साजंते, ३ का. जलभरि; ४ पा. कामीतणा; नीरिहि; ९, १. पा. भर; १०, १. पा. अइ; का. ना. सिंगार करेवि; मनि. २. पा. रइयरंगि; का. चंदणसिरिः ३. पा. चंपय°. पा. केतकी; का. केत्ताकि°; पा. बुंप मरेइ; ४. पा. आछउ सुकमाल; का. ना. पिरहणि, ११. १. पा. ना, मोती°; २. का. पाए; ३. पा. कानिहि; का. पु. कलकुंडल; ४, का. आभरणमंडल. १२. १. पा. लहलहंत; ३. का. उल्हसइं; का. पु. °थवक्का; ४. का. ना. कुसुमवाण; का. °कुभथा पणि करि; ना. न थापणि; नो; नी थां°. १३, २. पा. ना. संथउ; ना. सिंथउ, ३. का. बोरीआ°; पा. °कांचुलिय, ना० ना०[1] कुंचुलिय. १४, १. का. ना. °जुअल तस ललवलए; मयणह; ३. का. ना. कपोल कन्न किरि गालि°; ४. का० विमल सुकंठ; जासु; का. वाजइ, का. वहइ. १५. १. का. कूवडीय; नाही रेहइं; २. का. किरि; °खंभु; ४; पा. ए पाय°, घाघरि; पा. वाजइं. १६. १. पा० °जोवन°; २ पा. लहरिहि; मयमयंत, का. मयमहंतु; ३. का. अधर°; ४. पा. वहुगुणसंपुन्नी. १७. १. का. ईय; पा. सिणगार; का. सिंगार; करेवि वेस; २ पा. जव; का. °पासे; ३. का. कुतिगी; ४. पा. किंनर; का. आकासे. १८. १. का. 'अह' नहीं है; पा. °कडक्खहं; का. वाकुं जोयंती; २. पा. सिणगार; नयन कारंति; ४. पा. तवणु; का. °तुल्ल, पा. तुह देह नाह. १९. १. का. बारहं वरसाह; छांडिउ; २. का. एवड; पा. निठुरपणउ कंइ मूंसिउ; का. मंडिउं, ३. पा. अह खेदु, का. खेद; ४. पा. लोहिहि, ना. लोहइं; का. जडिउं हिउं मुझ. २०. १. का. महु., २. का. एरिस; पा. पावसु; का. °काल सयल मूंसिउं; पा. °सिउ; का. माणीजइं; ३. का. पभणइ वेस; परेणेवा; ४. का. लीणु; पा. °सिरीहि सुं. २१. १. पा. साचउ कियउ, २. का. लोयउ; ३. का. मिल्हवि; पा. °सिरिहि; २२. १. का. उपसम°; भरि पूरियउ रियउ रिसि°; भणेइ; २. का. परहरवि; ३. पा. परिवएवि; पा. वहु धमस्स°; का. पु. सिरिइंदुसमुज्जल; ४. पा. महावल, का. महामल, २३. १. का. पहिलुं; पा. हिवडा; का. जुवणु फल; २. पा. तयणंतरि; पा. °सिरीहि सुह सुहिण; ३. पा. जि मइ; ना. संजमइ; का. जु होइ; ४. का. भुवणयले; पु. महियलिइं; का.

जो मुझ. २४, १. **पा.** इण; २. **का.** थूलिभद्दि मुणिराए; ४. **का.** चित्ति सधाए, **पु.** सुथाए. २५. १. **का.** विलवंतु; निधाडीउ; २ **का.** °खडगिहि°; **पा.** °सुभड; **का.** पाडियउ; ४. **का.** करइ; **पा.** तुट्टि हुउ जय°; ४. **पा.** थूलिभद्द. २६. १. **का.** °अणंनर; २. **पा.** पालियभिग्गह; वलिय; ३. **का.** °दुक्कर कारगु; सूरिहि स पसंसियउ; ४. **पा.** **का.** जसु; **पा.** सुरनरहं; **का.** समंसियउ. २७. १. **पा.** °थूलिभद्द; **का.** पहाणू; २. **का.** मलिउ; °माणूं; ३. **पा.** किव; ४. **का.** खेला खेलय चित्तमासि गाएवुं; **ना.** **ना.**[1] **पु.** चैत्रमासि बहु हरिसि रंगि इहु मुणि गाएवउ । खेलिहि निय-मणि ऊलटिहिं तसु फागु रमेवउ.

अन्त : **पा.** सिरिथूलिभद्दफागु समत्तु; **का.** सिरिथूलिभद्दफागु समाप्तः; **ना.** इति श्रीथूलिभद्रफागु; **ना**[1] इति श्रीथूलभद्रफाग; **पु.** इति श्रीथूलभद्दफाग समाप्तः.

नेमिनाथ-चतुष्पदिका

[रचना-समयः १३ वीं शताब्दी कर्ताः विनयचंद्रसूरि]

सोहग-सुंदरु घण-लायण्णु सुमरवि सामिउ सामल-वन्नु ।
सखि-पति राजल-चडिउत्तरिय वारमास सुणि, जिम वज्जरिय ॥१
नेमि-कुमरु सुमरवि गिरनारि
सिद्धि राजल-कन्न कुमारि ॥आंकिणी।

'श्रा व णि सरवणि कडुयं मेहु गज्जइ, विरहि रि ! झिज्जइ देहु ।
विज्जु झवक्कइ रक्खसि जेव नेमिहि विणु, सहि ! सहियइ केम ?'॥२
सखी भणइ 'सामिणि ! मन झूरि दुज्जण-तणा म वंछित पूरि ।
गयउ नेमि, तउ विणठउ काइ अछइ अनेरा वरह सयाइ' ॥३
बोलइ राजल तउ इहु वयणु 'नत्थी नेमि-समं वर-रयणु ।
धरइ तेजु गह-गण सवि ताव गयणि न उग्गइ दिणयरु जाव ॥४

भा द्र वि भरिया सर पिक्खेवि स-करुण रोअइ राजल-देवि ।
'हा ! एकलडी मइ निरधार किम ऊवेखिसि, करुणा-सार ?'॥५
भणइ सखी 'राजल ! म-न रोइ नीठुरु नेमि न अप्पणु होइ ।
सिंचिय तरुवर परि पलवंति गिरिवर पुण कडडेरा हुंति' ॥६
'साचउँ, सखि ! वरि गिरि भिज्जंति किमइ न भिज्जइ सामल-कंति ।
घण वरिसंतइ सर फुट्टंति सायरु पुणु घणु ओहट्ट लिंति' ॥७

आ सो मा सह अंसु-प्रवाह राजल मिल्हइ विणु नमिनाह ।
'दहइ चंदु चंदण हिम-सीउ विणु भत्तारह सउ विवरीउ' ॥८
'सखि ! न-वि खीना नेमिहि रेसि मन आपणपउँ तउँ खय नेसि ।
जिणि दिक्खाडिउ पहिलउँ छेहु न गणिउ अट्ठ-भवंतर-नेहु' ॥९
'नेमि दयालु, सखि ! निरदोसु कीजइ उँग्रसिण-ऊपरि रोसु ।
पसुय भराविउ मूकउ वाडु मुझ प्रिय-सरिसउ कियउ विहाडु' ॥१०

क त्ति ग क्षित्तिग ऊगइ संझ रजमति झिझि(?)उ हुइ अति-झंझ ।
रात-दिवसु अछइ विलवन्त 'वलि वलि, दय करि दय करि, कंत ॥११
'नेमि-तणी, सखि ! मूकि-न आस कायरु भग्गउ सो घर-वास ।

इमइ इसि सनेहल नारि जाइ कोइ छंडवि गिरनारि ?' ॥१२
'कायरु किम, सखि ! नेमि-जिणंदु जिणि रिणि जित्तउ लक्खु नरिंदु ।
फुरइ साखु जा अग्गलि नास ताव न मिल्हउँ नेमिहि आस' ॥१३
म ग सि रि मग्गु पलोअइ बाल इण परि ९भणइ नयण-विसाल ।
'जो मइ मेलइ नेमि-कुमार तसु णींवेल(?) वहउ सवि-वार' ॥१४
'एहु कदाग्रहु तउ, सखि ! मिल्हि करिसि काइ तिणि नेमिहि, हिल्लि ।
मंडि चडाविउ जो फिर मालि "हे ! हे !" कु करइ टोहण-कालि ?' ॥१५
'अठ भव सेविउ, सखि ! मइ नेमि तसु ऊमाहउ किम न करेमि ।
अवगन्नेसइ जइ मइ सामि लग्गी अछिसु तो-इ तसु नामि' ॥१६
'पो सि रोस सवि छंडिवि, नाह ! राखि राखि मइ मयणह पाह ।
'पडइ सीउ, नवि रयणि विहाइ लहिय छिद सवि दुक्ख अमाइ' ॥१७
"नेमि ! नेमि !" तू करती, मुद्धि ! जुव्वणु जाइ न जाणिसि सुद्धि ।
पुरिस-रयण-भरियउ संसारु परणि अनेरउ कुइ भत्तारु' ॥१८
'भोली तउ, सखि ! खरी गमारि वरि अच्छंतइ नेमि-कुमारि ।
अन्नु पुरिसु कुइ अप्पणु नडइ ? गइवरु लहिउ, कु रासभि चडइ ?' ॥१९
मा ह मा सि माचइ हिम-रासि देवि भणइ 'मइ, प्रिय ! लइ पासि ।
तइ विणु, सामिय ! दहइ तुसारु नव-नव-मारिहि मारइ मारु' ॥२०
'इहु, सखि ! रोइसि सहु अरन्नि हत्थि कि जामइ धरणउ कन्नि ?।
तउ न पतीजसि, माहरी माइ ! सिद्धि-रमणि-रत्तउ नमि जाइ' ॥२१
'कंति वसंतइ हियडा-माहि वाति पतीजउँ किम, हलसाइ । (? हि)
सिद्धि जाइ तउ काइ त बीह सरसी जाउ त उँग्रसेण-धीय' ॥२२
फा गु ण वा-गुणि पन्न पडंति राजल-दुक्खि कि तरु रोयंति ?।
'गब्भि गलिवि हउँ काइ न मूय ?' भणइ विहंगल धारणि-धूय ॥२३
'अजिउ भणिउ करि, सखि ! विम्मासि अछइ भला वर नेमिहि पास ।
अनु, सखि ! मोदक जउ नवि हुंति छुहिय सुहाली कि न रुच्चंति ?' ॥२४
'मणह पासि जइ वहिलउ होइ नेमिहि पासि ततलउ न कोइ ।
जइ, सखि ! वरउँ त सामल-धीरु घण-विणु पियइ कि चातकु नीर ?' ॥२५
चै त्र मा सि वणसइ पंगुरइ वणि वणि कोयल टहका करइ ।
पंचवाण करि धनुष धरेवि वेझइ मांडी राजल-देवि ॥२६

'जुइ, सखि ! मातउ मासु वसंतु इणि खिलिज्जइ, जइ हुइ कंतु ।
रमियइ नव नव करि सिणगारु लिज्जइ जीविय-जुव्वण-सारु' ॥२७
'सुणि, सखि ! मानिउ मुझु परिणयणु नवि ऊवरि थिउ बंधव-वयणु ।
जइ पडिवन्नइ चुकइ नेमि जीविय जुव्वणु जलणि जलेमि' ॥२८
व इ सा ह ह विहसिय वण-राइ मयण-मित्तु मलयानिलु वाइ ।
'फुट्टि, रि हियडा !' माझि वसंतु विलवइ राजल पिक्खिउ कंतु ॥२९
सखी दुक्ख वीसरिवा भणइ 'संभलि, भमरउ किम रुणझुणइ ।
"दीस पंच थिरु जोव्वणु होइ खाउ, पियउ, विलसउ सहु-कोइ"' ॥३०
रमणि पसंसइ राजल-कन्न 'जीह कंतु वसि, ते पर धन्न ।
जसु प्रिउ न करइ किमइ मुहाडि सा हउँ इक्क ज भुंड-निलाडि' ॥३१
जि ट्ठ विरहु जिम तप्पइ सूरु घण-विओगि सुसियं नइ-पूरु ।
पिक्खिउ फुल्लिउ चंपइ-विल्लि राजल मूछी नेह-गहिल्लि ॥३२
'मूछी राणी, हा सखि ! धाउँ पडियउ खंडइ जेवडु घाउ' ।
हरिय मूछ चंदण-पवणेहिं सखि आसासइ प्रिय-वयणेहिँ ॥३३
भणइ देवि 'विरती संसार पडिखि पडिखि मइ, जादव-सार ।
निय-पडिवन्नउँ, प्रभु ! संभारि मइ लइ सरिसी गढि गिरिनारि' ॥३४
आ सा ढ ह दिढु हियउँ करेवि गज्जु विज्जु सवि अवगन्नेवि ।
भणइ वयणु उँग्रसेणह जाय 'करिसु धम्मु, सेविसु प्रिय-पाय' ॥३५
मिलिउ सखी राजल पभणंति 'चिणय जेम न मिरिय खज्जंति ।
अउगी अच्छि, सखि ! झखि मन आल तपु दोहिल्लउ, तउँ सुकुमाल' ॥३६
'अठ भव विलसिउ प्रियह पसाइ किमइ जीवु, सखि ! सुख[ह] न धाइ ।
हिव प्रिय-सरिसउँ जीविय-मरणु इण भवि पर-भवि निमि जु सरणु' ॥३७
अ धि कु मा सु सवि मासहि फिरइ छह-रितु-केरा गुण अणुहरइ ।
मिलिवा प्रिय ऊभाहुलि हूय सउ मुकलाविउ उँग्रसेण-धूय ॥३८
पंच सखी-सइ जसु परिवारि प्रिय-ऊमाही गइ गिरिनारि ।
सखी-सहित राजल गुण-रासि लेइ दिक्ख परमेसर-पासि ॥३९॥
निम्मल केवल-नाणु लहेवि सिद्धी सामिणि राजल-देवि ।
रयणसिंह-सूरि पणमवि पाय बार-इ मास भणिया मइ, भाय ! ॥४०
नेमि-कुमरु सुमरवि गिरनारि ।
सिद्धी राजल-कन्न कुमारि ॥

*

२४. नेमि-बारहमासा

[कर्ताः पाल्हण रचना-समय : तेरहवीँ शताब्दी]

कासमीर-मुख-मंडण देवी वाएसरि पाल्हणु पणमेवी ।
पदमावतिय चक्केसरि नमिउँ अंबिक-देवी हउ वीनवउँ ॥
चरिउ पयासउ नेमि-जिण करउँ कवितु गुण-धम्म-निवासो ।
जिम राइमइ विओगु भउ बारह मास पयासउ रासो ॥१

भणइ विचक्खण राइमइ सामल-धीर वयणु अवधारे ।
परिहरि देव न दोस-विणु सामि [म] गमणु करि गिरनारे ॥ (आँचली)

सावणि सघण घुडुक्कइ मेहो पावसि पत्तउ नेमि-विछोहो ।
दद्दुर मोर लवहिँ असगाह दह दिह वीजु खिवइ चउवाह ॥
कोइल महुर वयणु चवए खइ विवीहउ धाह करेई ।
सावणु नेमि जिणिंद-विणू भणइ कुमरि किम गमणउ जाए ॥२
भणइ विचक्खण०

भादरवउ असलेस उल्हारो अति घण वरिसइ घोर अधारो ।
वावि कूव नइ भरिय तडाग दह दिह रहिय वहंता माग ॥
धरणि धराहर ओयरियो इक मइ नीरु न सूझइ पंथो ।
नयणि न देखउ नेमिजिणो भरु भादवउ गयउ अकयत्थो ॥३

आसउजहँ धण आस सँपुन्नी धरणि कणय फल फुल्लि उपन्नी ।
सखर सथिर सच्छ छामेह निरमल नीर समग्गल नेह ॥
जणु परियणु रहसिउ भमइ महु मणि असुहु असेसु निवट्टइ ।
नेमिकुमरु अवगन्नियओ पाल्हणि सुति मोरउ हियडउ फूटइ ॥४

कत्तिय धण धवलहि निय-गेह मढ-देवलिहि चडहिँ धज-रेह ।
घरि घरि मंगल-चार-उछाह सुर जागहि नर रचहि विवाह ॥
हय गयवर नरवइ गुडहिँ मँडलिक सुहड सनाह सिगारु ।
देखि कुमरि मन गहवरिओ मइ मेल्हिवि गउ नेमि-कुमारो ॥५

भउ मागसिर-तणउ पइसारो भरत कणय तहि करहि सिगारो ।
पहिरहि मयण मजीण चीर ले कूंकू सवलहहि सरीर ॥
निय पिय किहिँ आयरु करहि ते पेखिवि राइमइ विसूरइ ।
हा विहि को अपराधु किउ नेमिकुमार विणु अणुदिणु झूरइ ॥६

---

१. ७. भओ; आँचलीः १, १. रायमण. ३. १. भाडवरउ; ३. भडिय. ४. १. गयवय. ६. १. पयसारो, ६. रायमइ, ८. °कुमरु.

पोसु सुपत्तउ मतिहि सियारू घिउ घेउर लापसिय कसारु ।
लाडू लावग भोयणु होइ पोसउ पिंडु सयलु जगु लोए ॥
जादरि गजवडि ओढणए रयणि दिवसि नितु पडइ तुसारो ।
कु कुमरि स-दूखिय इउँ भणए मइ मेल्हिवि गउ नेमि कुमारो ॥७

माहु महाभडु हिम सिवयाधु वणु वणसइ पुडइणि सिय-दाधु ।
सिउ सिउ सिउ सिउ जणु ऊचरए जा हरिसवडि तहउ अणुसरए ॥
एक रयणि वारसागलिय कुमरि भणइ किम करि पभणाउ ।
नेमि-विहूणा परि दिन हा विहिं दइय न लेखे लाए ॥८

आउ आगमु फागुण-तणउँ अति सिउ पवणु फरूक[इ] घणउँ ।
गिरि तरुवर फल पात झलाहि डालहि डाल सिखा धरि जाहि ॥
दिणि दिणि अंगु झकोलिजए तिम्व तिम्व सालहि वहु दुख-भार ।
कुमरि भणइ किम नीगमओ तइ विणु सामिय नेमिकुमार ॥९

चीतु ससिरु संपत्तु वसंतु मालइ-कोल-कमल-विहसंतु ।
महुय गलहिँ मउरिया सहार कोइल महुर करहि झंकार ॥
तरुणि नयनि काजलु ठवहिँ निवसहि चीरु रुलावहि हारो ।
तो न चलइ मनु मुझ तणओ हुयवहु सरणु कि नेमिकुमारो ॥१०

वयसाहहँ विहसइ वणराए वेउलु कुंदु निवालिय जाए ।
चंपउ पाडल कुलवु ? कल्हारो दवणउ मरुअउ देवगधारो ॥
जणु परिमल मोहिउ भमिए महु चींतत निसि नीढि विहाए ।
नेमिकुमरु तवचरणु गओ सखि वैसाखु दुहेलउ जाए ॥११

जेठह भाणु तवइ अइ तेओ महु निय मणि परिगलइ पसेओ ।
चंदणु कुसुमु पत्तल चीर लवंग कप्पूर सुवासिय नीर ॥
खणि खेवउ खणि वीजणओ तु वि तणु तवइ हुवहु सविसेसो ।
जिम भव आठ भतारु थिउ तसु सामिय गिरिनारि निवेसो ॥१२

मास इकादस वीता जाव आवि असाढ पहूतउ ताव ।
रवि किरणिहिँ तम तातिय अति झल ल्हय वाह मयमातिय ॥
अंगि अकोलु असेसु चओ सूकइ कमलु निरंतरु जत्थ ।
तो नव रीझउ नेमि-जिणु वारह मास गया अकयत्थ ॥१३

---

९. ६ दुक्ख°. १०. १. वीतु; ३. मालय°. ७. मुझ. ११. १. वय°.

जीव अभउ करु दीन्हउ जेण सत सारथि किउ धम्म धुरेण ।
साहसु पुरिसु सखाइउ धरिउ जपु तपु संजमु व्रतु अणुसरिओ ॥
दृढ मनु व्रतु निश्चलु धरिओ राज रयणु परिहरिउ भंडारू ।
कुमरि तजिय जिणि रायमए ध्यानि रहिउ व्रतु नेमिकुमारो ॥१४
जो जादव-कुल-मंडण-सारो जिणि तिणि चडि परिहरिउ संसारो
कुमरि तजिय तपु लउ गिरनारे सिधि परिणउ गउ मोख-दुवारे ॥
जणु परिमलु पाल्हणु भणए तसु पय अणुदिण भत्ति करेहु ।
मण-वंछिउ फलु पाविजए थुय-समसरिसु वयणु फुडु एहु ॥१५
इणि परि भणिया बारस मास पढत-सुणंतहँ पूजउ आसा ।
रायमइ नेमिकुमर वहु चरिउँ संखेविण कवि इणि परि कहिउ ॥
अंबिकदेवि सासणदेवि माई सँघ-सानिधु करिजउ समुदाई ॥

*

---

* अंतः इति श्रीनेमिनाथस्य द्वादशमासवर्णन समाप्तम्.

२५. कयवन्ना-विवाहलउ

[कर्ता-देपाल रचना-समय : १५ वीं शताब्दी]

भणइ कयवन्नउ अभयकुमारु, एक अपूरव वातडी ए।
च्यारिए नारि एह नयर-मझारि, च्यारि ए बेटा अम्ह-तणा ए ॥१॥

एकु तां एहु जु वडउँ विनाणुं, जेहु जणावउँ तेउ हसइ ए।
हउँ नवि जाणउँ तेह-तणँ नामु, न अहिनाणु न धवलहरो ॥२॥

सुपन-सारीखिय सांचिय वात, निशिदिन घडीय न वीसरइ ए।
अवरह माणस केहिय मात्र, हउँ भूलउ हउँ भोलविउ ए ॥३॥

राउलि कहउँ न लागए राव, कहउँ तउ कोइ मानइ नही ए।
बुद्धि-मयरहर तुं बिरद बोलाव, जाणिसिद बुद्धि तुम्ह-तणी ए' ॥४॥

जाणिउँ कारण-तणउ विचारु, श्रेणिक-संभम इम भणइ ए।
तउ कयवन्ना अभयकुमार, 'सयल कुटंब जउ मेलवउँ ए' ॥५॥

जिसउ कयवन्नउ तिसउ जाखु, अनुपम मूरती लेपमी ए।
हरखिहिं वेचिउ सोवन्न लाख, अभयकुमार कराविउ ए ॥६॥

कंचण-रयण-तणउ सिणगार, नवल पटोलाँ पहिरणइ ए।
रूप अपूरव अतिहि अपारु, जीणइँ जग सहु मोहीउँ ए ॥७॥

चउ-बारउ चहुटइ प्रासादु, राजगृहे रुलियामणउ ए।
नयरह माँहि पडाविउ साद, पडहु वजावउ घरिहि घरे ॥८॥

आवउ वेगिहिं सहु सुकुटंबु, पंच मोदक जण जण प्रति ए।
राखे करिसउ कोइ विलंबु, जाखु जुहारउ विघन-हरो ॥९॥

जाणिउ जाखह तणउ-पमाणु, घरि घरि मोदक नीपजइ ए।
एवडु बुद्धि-तणउ परमाणु, अभयकुमारि कराविउँ ए ॥१०॥

एकि भणइँ परमेसर जाख, लाडूय देसु हूँ अति घणा ए।
जे अम्ह रोगह आगलि राख, तउ तउँ सामीउ अम्ह तणउ ए ॥११॥

एकि नाचिइ एकि गाइँ गीतु, हरिखिहि कवि देपाल जिम।
इण परि जाखु जु हुयउ वदीतु, मंगल-कारउ मगध-देसे ॥१२॥

च्यारि ए बेटा च्यारि ए नारि, नवमी सरिसीय-डोकरी ए।
जउ पुहुताँ प्रासाद-मझारि, जाखु देखि अचरिज हुओ ए ॥१३॥
पुत्र भणइ 'घरि चालउ तात, नारि न बोलइँ पुणु हसइँ ए।
इसीय एह अपूरब बात, नव-जण-मेलावउ हुयउ ए ॥१४॥
बलिकीजउँ तसो अभयकुमार, जेण विफटाँ मेलावियाँ ए।
गरूँयपणइ घण-गुणह भंडारु, सयला श्रीसंघ आणंदकरो ॥१५॥



२६. नेमिनाथ-धवल

[कर्ता-देपाल रचना-समय : १५ वीं शताब्दी]

करुणा-सायर गुण-निलउ, वर-समुदविजय-सुत अति-भलउ।
तिहुयणि सयलि वखाणियए, वर माडी य सिवा-देवि राणी ए ॥१॥
वीसइ सूधउ सामलउ वरो, मति-श्रुति-अवधिइ ऊजलउ।
केवडियालउ खूंपु ए, वस इंद्र निहाले रूपु ए ॥२॥
लाडणु जव घोडइ चडइ ए, क्रम आठइ अरि दडवड्ड पडए।
सारथि हरि तेडावउ ए, रथि चारि तुरिय जोत्रावउ ए ॥३॥
लाडणु रहवरि आरुहइ ए, तिम तिम उपशमु गहगहए।
सोल सहस गोपी मिली ए, जानउत्रि चालइ मन-रुली ॥४॥
गोपीय उढणि घाट ए, वर-आगलि बोलइ भाट ए।
सिरवरि झलकइँ छात्र ए, वर-आगलि नाचइँ पात्र ए ॥५॥
गज-रथ-तुरियह थाट ए, वर जालि जोयइ वाट ए।
च्यारि चमर ढलावइ ए, वर नेमि-जिणेसर आवइ ए ॥६॥
उग्रसेण-घरि जाई ए, वर नेमि-जिणेसर गाईय ए।
जीव-दया-प्रतिपाल्ह ए, वर गायणु कवि देपाल्ह ए ॥७॥



२७. आर्द्रकुमार-धवल

[कर्ता-देपाल रचना-समय : १५ वीं शताब्दी]

नाई ए नयरह सीहहुयारि, पांच कन्या रामति रमइँ ए।
चिहु पुण वरीॅयला थाँभ च्यारि, वरु नवि पामइ पाँचमी ए॥

वावि चउखंडि ए च्यारि, जे थंभ चिहुँ कुयारि च्यारइ ग्रहिया ए।
रुपि निरूपम जेसीॅय रंभ, धणवत्त-धूय तेहे खीजवी ए ॥१

खीजवीय धणदत्त-धूय, बोलिया बोल बहूॅय।
अम्हि थंभ वरीॅया तो, तूं वरु अनेरउ जोइ ॥२

तूं वरु अनेरुउ जोइ सखि ए काँइ कर आगलि रही।
ऊभी पिराया प्रीॅय जोयति बहिनी मनि लाजइ नहीॅ॥
रामति फीटी हूउ झगडउ नयणि जलि झखोलिया।
सवि राखी मेल्ही वावि पाखलि भमइ भंभर-भोलिया ॥३

भंभर-भोलिय नयण-विशाल, वर जोइ धण एकली ए।
वावि-पाखलि परिभमइं स बाल, मुनि लाधउ कासगि रहियउ ए॥

लगन-वेलाँ गोधूलक-वारि, जाणीउँ थंभ ए पाँचमु ए।
कासगि रहीॅउ ए आद्रकुआरु, वरु वरीॅउ अणजाणती ए ॥४

वरु वरिउ अबुहि अयाणि, ते वात चडी प्रमाणि।
जाणीं एहूं थंभ, शृंगार प्रथमारंभ ॥५
............पेखिय आपुलइ मनि गहगही।
खीजवो हूंती जेहिं ति सवि बोलावी सही॥
साँभलउ वाईउ वात साची माहरइ कर्मि आणीउ।
हूं नहीं मेल्हउँ नहीं मेल्हउँ न मेल्हउँ नर जाणीउ ॥५
नरु जाणीॅओॅ तउ भणीॅयउँ तीण, सहोॅय समाणी ए साँभलउ ए।
आपणपइ सवि तउ सुकुलीणी, वरियउ वरु नवि मेल्हियइ ए ॥७

जयउ जयउ जंपइ सासण-देवि अहिवि सूहवि होइजे।
वाँछितू ए सुरवर वृष्टि करइ तीणँ खेवि कंचण सारध बार कोडि॥
माय-ताय-सिउँ पहूतउ राय, नयरलोउ सहु बूझवइ ए
नारि न मेल्हइ मुनिवर-पाय, मुनिवरु मुखि बोलइ नहीॅ ए ॥८

ईम करंतां ऊगिउ सूर, मुनिवर कासगो पारिउ ए।
चलण मेल्हावी चालिउ दूरे, भोगहली क्रमि भोलविउ ए।
सुनंदा दानु दीयइ दानह साल, दक्षिण करु दवु उल्हवइ ए॥
दानु प्रभाविहिं कवि देपालु, आद्रकुअरु वलि आविउ ए॥९

*

॥ धउलु ॥

आद-न[र]राउ पहूत जाम, लाडीए वरु उलखियउ ताम।
रहि रहि थिरु थिरु मुनिवर राय, मइ उलखिउला प्रीय तुम्ह पाय ॥१
हूं तोइ वात न बोलउँ जूठी, मू-रहिँ सासणदेवि ति तूठी।
पालउ वाचा करीउ पसाउ, तउ तिथ परिणए आद-नराउ ॥२
सुरवर जंपइ जय-जय-कारो, सजनह मनि आणंदु अपारो।
मंगल-चार धवल तहिं दीजइँ, आद्रकुँआर-वर-गुण गाईजइँ ॥३
लाडी ए सुरवर तुम्हि वरीउ, सोवण्ण-कलसु अमीय-रसु भरीउ।
पुव्व-भवंतरि जिणु आराधिउ, तउ तुम्हि आद्रकुमार-वरु लाधउ ॥४
लाडीय सहज सोभागिहि रूडी, करयलि कंकण सुवण्णचूडी।
लाडीए सिरवरि कुसमह भारो, पाए नेउर-रुणझणकारो ॥५
कडि कसमसतीय सेत पटउली, लाडीय लाँकु सुमांई कउली।
नवलइँ जोवणि बेउ परणाव्यॉं, मोह-मयणि बेउ आण मनाव्यॉं ॥६
साव सलाखणु बेटउ जायउ, पुण्य-प्रभाविहिँ सो घरि आयु।
सामिणि सासण-देवि पसाइँ, अलिय विधन सवि दूर पुलाइँ ॥७

*

पुत्र-जन्मू ए २ कुलह श्रृङ्गारु
नीय-कुल-कमला-केलि-करो।, कुल-मंडणु कुल-तणु दीवु
मण-रंगिहिँ जिणि दित्त तसो, सासण-देवि-पसाइ जीवु॥
नयर-लोकु आणंदि[उ], उच्छवु कीऊ अपारु।
तउ मोकलावइ वर गहणि, कारणि आद्र-कुँआरु ॥१॥
घरणि पभणै २ निसुणी भरतार
सामीय काइँ ऊताव[लउ,]प्राणनाह अवधारु वयणु।
अजीय बाळु लहूँयडूं, अजीय देव मुं दमइ मयणु॥

अज्जवि जइ जाएसि प्रिय, तउ दुख मेरु-समानु ।
कइ मुह हीयडउ फुट्टिसिई, कइ उडिसीइ प्रानु ॥२॥
रमणि संभलि २ भणइ नरुनाहु
राजु छंडि मइं व्रतु लीयउ, व्रत मेल्हिवि गृहवासु किद्धो ।
हुं तोइं तसु जामलि हुउँ, जिसउँ लोहु घण-तंब किद्धो
मित्तु अम्हारउ राजगृह, नयरि जि अभयकुमारु ।
लिद्धो मिल्हियो जाणिसिइ, सो अम्ह संजम-भारु ॥३॥
देव दुहिलउ २ म धरि अवधारि
बंधवु अभयकुमार तसु, राजु छंडि व्रत तीणि लिद्धऊ ।
विहरंतउ वेस-घरि गयऊँ, अहंकार-रसि सो जि लिद्धउ ॥
विषइ रमइ देसण करइँ, दिनि दस प्रतिबोधेइं ।
नंदिषेण मुनि नाम तसो, निंदा कोइ न करेइ ॥४॥
म भणि सुंदरि २ एउ दृष्टंतु
पुव्व भवंतर संभरै, तेम तेम मुह दुक्खु हल्लई ।
जर-रक्खसि दलि दोरि सिउँ, अज्ज-कल्लि अम्ह-भणीय चल्लई ॥
तामु सुनंदा इम भणइ, वर विन्नती सुणेऊ ।
वेटउ लेसालहँ ठवीउ, पच्छइ व्रत लेजेउ ॥५॥
तीण वयणिहि २ रहीउ नरनाहु
अंगुलि गिणते दीहडे, च्यारि वरिस वोलीयाँ क्रमि क्रमि ।
पुतु लेसालहुँ परिठवीउ, छडपड्ड मणु आणंतु उपशमि ॥
कंतु गमंतु जाणि करि, कत्तण-लग्गि नारि ।
रमतु रमन्तउ बेटडऊ, सो जि संपत्तउ वारि ॥६॥

*

आपणइ घरि किछउँ कातणउँ ए ।
जायसिइ वाछ तूय तात, तूँ वडउ नेसालीयउ ए
अखईउ होइजे वाछ, मइ भलइ संभालीउ ए ॥१
जायसिइ वच्छ तूय किम जायसि एवाधुला मोह-ने पासि, तूँ, वडउ लेसालीउ ए ।
तात लडाव तूय तोतला ए, हुं बलिकीजिसो नाम, तूँ वडो लेसालिउ ए ॥२
वारउ ताँतण वीँटीया ए, वार के सांकल भार, तूँ वडउ लेसालिउ ए ।
वारसोत्र जणणि तणाँ ए, छूटउ वारि जे त्रागि, तूँ वडउ लेसालिउ ए ॥३

माईय पढतइ वछ तइ ए, माडीय पूरीय आस, तूं वडउ लेसालिउ ए।
पुत्र तइं सूत्र लिख्या पखइ ए, रहावीयलइँ घरसूत्र, तूँ वडउ लेसालिउ ए ॥४
अभयकुयारु तुंय पीत्रीउ, ए न्याइ एवड बुद्धि, तूँ वडउ लेसालिउ ए।
अम्ह प्रिय वछ तइँ रहाविउ ए, रमतुलइँ बार वरीस, तूँ वडउ लेसालिउ ए ॥५
अखइ होइजे वच्छ, तूँ वडउ लेसालिउ ए ॥

*

२८. अंबिकादेवी-पूर्वभव-वर्णन-तलहारा

× × ×   × × ×   तिलोत्तम   रंभ   रइ ॥४
सीलिहिं जणु सीता दवदंति राणी, अंजणसुंदरी रायगइ ।
सोहग-सुंदरि जगह पहाणी, जा विहिं निम्मल निम्मविय ॥५

तिहँ सुह भुंजंत दुन्नि उपन्न, पुत्त-रयण जणु हरि-कुमर ।
सिद्धु पसिद्धउ रूपि रवन्न, बुद्धु कणिट्ठउ पुत्त तसु ॥६

इणि परि समउ अइक्कमंताहं, सुह-वसि आयउ अपर पाखु ।
सोमि निमंतिय बंभण ताहं, मंडण आसण साध-दिणि ॥७

कत्थ-वि बंभण वेद पढंति, कत्थ-वि पिण्ड-प्रदानु होइ ।
कत्थ-वि संतिकु होमु करंति, कत्थ-वि कीजइ वइसदेउ ॥८

सालि दालि पकवान-पयार, खीरि खाँड घिउ विंजनइ ।
सरस संपाडिय जीमणवार, सासुव वइठिय न्हाण किन्हि ॥९

तक्खणि मुणिवरु गणिहिं संजुतु, तप-जप-संजम-नियम-धरु ।
मास-खमण-पारणइ पहुतु, तह घरि जंगम कलपतरु ॥१०

सुपात आविउ अंबिणि पेखि, ऊठिय हरिस-विसंठुलिय ।
मुणिवरो भोयण-पाणि-विसेखि, भावि भगति विहराविय ॥११

विहरिं तपोधनु चालिउ जाम, दिट्ठि पलोवंतु भूगि-पहु ।
सासुवि न्हाविय ऊठिय ताम, देखिवि निय-मणि मच्छरिय ॥१२

सोमहि आगओ कहियउ 'वच्छ, वहुडिय सयलु अजुत्तु कियउ' ।
कोपि चडिउ सोमु पभणइ 'गच्छ, हे अपलंदिण काइँ कियउ ॥१३

अजउ न पूजिय अम्हि कुलदेव, अजउ न बंभण जेमियाइं ।
अज्ज-वि पिंड भराविय नेय, कइ तइं दिन्निय पढम सिहा' ॥१४

तं जि वयणु सुणि परिहसि भरिय, चालिय अंबिणि बंभणिय ।
नंदणु सिद्धु करंगुलि धरिय, कडिहिं चडाविउ बुद्धु तिणि ॥१५

तिसिय सुयहँ पहि पुन्न-प्रभावि, सुक्कउ सरवरु जलि भरिउ ।
सुक्कउ अंबउ फलियउ सावि, भुखिय पुत्तह देइ फला ॥१६

अंबिणि दीठउ कूवउ मग्गि, तक्खणि मणि जिणु अणुसरिउ ।
तत्थ झंपावइ पाण-विसग्गि, सुह-झाणि जीविउ तजिउ तिणि ॥१७
कूवह माँडि विमाणि उपन्न, सोहम-तलि चहु जोयणिहि ।
सोपात्र-दानि प्रभावि उपन्न, अंबिक-देविय नामि तउ ॥१८
अंबिणि तजिय जि पातलि वि, सोवन थाल कचोल थिय ।
अउठिहि कण पुणु पडिय जि-के-वि, मोतिय माणिक ते-वि हुय ॥१९
सासुव देखिवि विम्हिय ताम, चिंतइ वहुय सलक्खणिय ।
मण पछताविय जंपइ सोमु, अणहि व्यालउ तउ करउ ॥२०
सोमु महासइ पूठिहि जाइ, कूवि झंपावती दीठ तिणि ।
सो पुणु अणुसइ तहिं धस देइ, मरिवि हुवउ सिंह-रूपि सुरु ॥२१
अंबहँ लुंबिय पासु धरेइ, दाहिण करि जुगि वाम पुणु ।
पुत्त-अंकुस-धर सिंह-वाहणिय, वंछिय-पूरणि कनय-वन्न ॥२२
सामिय नेमि-जिणिंदह तित्थि, अंबिक सासणि-देवि हुय ।
संघहँ दुत्थ-दलणि सु-पसत्थि, निवसइ गिरि-गिरनार-सिरि ॥२३
सीसि मउडु मणि-कुंडल कानि, सोहइ मोतिय-हारु उरि ।
रयण-घडिय करि कंकण दुन्नि, पाइहि नेउर रुणझुणहि ॥२४
तुहुँ तारा तोतर भैरव चंडि, सोलस विज्जादेवि तुहुँ ।
एक जि तिहुयणि तुहुँ जु पयंडि, भयवइ वहुविह रूव-धरा ॥२५
साइणि जोइणि रक्खस भूय, विंतर दुद्धर दुट्ठ गह ।
नाम-गहणि तुह विफलीहूय, वंदिहि सकल झडप्पडहि ॥२६
तुम्ह पसाइहि तुम्ह (?) थट्ट, रहवर पयदल रायसिरि ।
लाभहिँ मयगल गयणि विसट्ठ, उत्तम कामिणि पुत्त वरा ॥२७॥
जणहिं तणय सुर-कुमर-समाण, तुह पय झायंति चंऊ (?) नारि ।
दूहव पावहिँ पियहँ सम्माण, जीवहि नंदण निंदुवह ॥२८
बुहयण-वयणह किंपि सुणेवि, किंपि मुणिय निय मइ-बलिण ।
चरिउ तुम्हारउ वन्निउ देवि, पूरि मणोरह अम्ह तणइ ॥२९
नेमि-जिणेसर-चरण-अंभोय-महुयरि अंबिक-देवि तुहुँ ।
संघह सानिधु करि सुह-भाय, देहि मणिछिय उदय-रिद्धि ॥३०

*

भ्रष्ट पाठः २७.३. गयण. २८.२. वंऊ. ३०.३. सुह करि भोय.

२९. नेमिनाथ-बोली

जगति जयति शश्वन्नेमिनाथो विवस्वच्छतसमधिककांतिः सृष्टमोहोपशान्तिः ।
उदितविदितचित्रस्फूर्जदूध्धरित्रस्त्रिभुवनजनबन्धुः पुण्यलावण्यसिन्धुः ॥१

त समुदविजय-निव-अंगरुहं त पुन्निम-सोम-समाण-मुहं ।
त राजमती-राणी-हियय-वरं त धरिय-सुदुद्धर-सील-भरं ॥२
ता जय-पायड-नव-संख रवं ता दूर-वियंभिय-सं ख-रवं ।
ता अरि अरि भवियहु रत्तिदिणं ता पणमुहु पणमुहु नेमि-जिणं ॥३

*

ता एका-चित्ता होई मित्ता पढि सुह-कव्वु ।
ता एऊ लोऊ करिउ पमोल सँभलहु सव्वु ॥
ता सिवपुरि-गामिउ जिव जिव सामिउ सामल-धीरु ।
ता तिहुयण-रंजणु मयणहू गंजणु एकल-वीरु ॥४
ता इह संसारी दुत्तर-पारी दुह-भंडारि ।
ता इकल-मल्ला तिहुयण-सल्ला राणा च्यारि ॥
ता रिद्धिहि गहिलउ सिविहिँ पहिलउँ पहिलउँ क्रोधु ।
ता जण-जण-सरिसउ अइ दुद्धरसउ करइ विरोधु ॥५
आ अइदुतू (?) बह-बलवंतू बीजउ माणु ।
कि स्यू (?) न नमइ सव्वू नामइ अखलिय-आणु ॥
ता पारू वंचइ पापू संचइ त्रीजउ दंभु ।
ता जग्गू हस्सय नहु वीसस्सइ उखभिय-खंभु ॥६
ता सव्वू मोहइ जग्गू डोहइ चउत्थउ लोभु ।
ता धम्मू नासइ साहू वासइ खरउ आथोभ ॥
ता तहि गुरुयउ कम्महि विरुयउ धम्महि अच्छइ मोह ।
ता राए राणे सव्वेसाणे किणइ दुजोह ॥७
ता अवरे अच्छइ मार्गि गच्छइ चारि नरिंद ।
ता देवादेवा ताहिं सेवा करहि सुरिंद ॥
ता पूरइ भोगू दियइ संजोगू पहिलउ दाणु ।
ता जइ पुण जोई बूझइ कोई तासु पमाणु ॥८

ता पुण नीसंकू जगि अकलंकू बीजउ सीलु ।
ता घरि घरि हिंडय सयलु वि मंडय अतहि सुसीलु ॥
ता सत्तहि भत्ता अन्नय मुत्तहिँ अति अभिरामु ।
ता तीजउ राणउ तुम्हे जाणह तसु तपु नामू ॥९

ता निग्गहिअ तुंगिहि अन्नय विग्गहि काल-कियंतु ।
ता महा-पभावू चउत्थउ भावू अति-जयवंतु ॥
ता तहि ठाऊ वडउ राऊ पुणु धमराजु ।
ता ओलगाणा अखलिय-आणा साहइ काजु ॥१०

ता अवरे भट्टा सरसति-चट्टा कहियइ तुज्झु ।
ताहि वेहिं प्राण-संदेहिं लागउ झूझु ॥
ता उच्छाहा समर-सिनाहा वाजिय ढाक ।
ता जंता फाले सेल-ऊछाले सुहड त मेल्हत हाक ॥११

ता ऊता ऊता द्रेंद्रें था जमइ नीसाण ।
ता नायल गोयल भट्टा टिंटा पडियत प्राण ॥
ता ऊता ऊता धीरह वीरह बाझ(?)हि वाट ।
ता ऊता ऊता सामिय भत्ता पढइ नगारिय भाट ॥१२

ता ऊता ऊता सोभिय ऊभिय चिंध अलंबु ।
ता वाचाद्रोहू ऊडिय-लोहू नाही विलंबु ॥
ता णिऊ ताणिय मर्मु जाणिय सर मुच्चंति ।
ता अंगू राखिय लाहू चाखिउ केवि पडंति ॥१३

ता मेल्हहि धाय लोहहि धाय केवि छडंति(?) ।
ता नाठा धाठा घणुहरगि भाथा छाडहि विदु(?) ॥
ता क्रोधू भागउ धरिउ नागउ नयन बंध बाल ।
ता न चडिउ छोहू नाठउ लोहू जोयइ छंडिय खाल ॥१४

ता माया-माणा थिय निय-माणा पुणु ऊजाणा वेवि ।
ता अवरे नासइ नाथी(?)भासइ दंतहि अंगुल लेवि ॥
ता रोगू सोगू रत्तिय रत्तिय कोइ लेखइ लाइ ।
ता दूटू जूटू हासू दासू पड़ियत ठाइ ॥१५

ता दाणू सोळ तप्पू भावू ए गाजंति ।
ता गूड छालहि करह दुकालहि पोगा दिंति(?) ।
ता एती वारा जाणी सारा आयउ कामदेउ वीरु ।
ता नारीकुंजर वज्ज-पंजरु रक्खिय-सरीरु ॥१६

ता सिरियामोडा बाहिं चूडा कन्नि कुंडल झलकंति ।
आखी आँजि भ्रमहइ भाँजी घुसणि घवकंति ॥
ता सिंथुं फाडिय कंचू ताडिय कोटहिं नवसरि हारु ।
ता पाए पाला तरुणिय वाला तसु परिवार ॥१७

ता त्रीखा चोखा आडात्रेडा अनु अणयाल ।
ता जिव खरसाणा ताही बाणा नयण कुडाल(?) ॥
ता इत्थं अवसरि ताहिं संगरि नेमिकुमारु ।
ता आविउ ढूकउ ठाणि न चूकउ करइ सिंहारु ॥१८

ता कुसलहि खेमहि पहिलउ नेमी पाडिउ छत्र ।
ता दंता कुंता छिरिका फिरिका केतिय मात्र ॥
ता उद्दामू धायउ कामू मेल्हत घाय ।
ता मुह जोयावय सहु-को आवइ राणा राय ॥१९

ता नेमिकुमारी निरहंकारी जाम सु दीठु ।
ता धूजइ खीजइ झूरय मूरय नाहिय विसीठु ॥
ता इंद्रा(?)फोडिउ तहि दप त्रोडिउ नेमिकुमारि ।
ता मोहा राया सेना-सुहडा हुई हारि ॥२०

ता सजने छाडी रतने रांडी करहि विलाप ।
ता मोरा कंता एरिसि दंता पाडियत पाप ॥
ता रणभूमि सोधिउ सउ संबोधिउ लोय-पसायो ।
ता मनोहरणहि समोसरणहि देहिय वास ॥२१

ता इंदे चंदे [दे]वाणंदे कियउ जयजयकारु ।
ता सवि इंद्राणी जीतउ जाणियं करहि ति मंगलचारु ॥
ता सव्वह वीरह उपरवट्टू मयण-घरट्टू आसं वदंतु ।
ता पूजहु पूजहु नेमिकुमारु निव्वइकंतु ॥२२

३०. थूलिभद्र-मुनि-वर्णना-बोली

सुरराय समहरि करवि निज्जिय चक्कवइ हरि-हलहरा ।
पायालि पन्नग सेवं मन्नहिँ कवण मत्त नरेसरा ॥
तसु कुसुमसरि कोदंडु खंडिवि बाण-पसरु विहंडिउ ।
सिरि-थूलभद्दिण तेम निंज्जिउ जेम्व कह-वि न निज्जिउ ॥१
जाम्व निय-कोदंडु सज्जइ करइ किरि टंकारवो ।
सुर-भुवणु कंपइ सेसु संकइ धर पडइ बुंबारवो ॥
जिण-लील-मत्तिण सुह-पसत्तिण सयलु तिहुयण दंडिउ ।
तसु पंचबाणह थूलभद्दिण माणु लीलइ खंडिउ ॥२
जसु सरिसु समरि न कोइ मंडइ को-वि करु नहु उब्भए ।
जिणि हणिउ हक्किउ को न भज्जइ कवणु कवणु न खुब्भए ॥
तसु थूलभद्दह सरिसु तुडि करि मयण-मल्लु विगुत्तओ ।
इणि सुहडि सरिसु न खणु वि खिल्लिउ इयरु जगु सहु जित्तओ ॥३
साहण-सहस्सहिँ जा न जिप्पइ असि-पहारि न छिज्जए ।
तसु सेल-सव्वल-सत्थ समहरि रोमु इक्कु न भिज्जए ॥
जो गरुय-सद्दिण थूलभद्दिण रहसि (?) जा हक्किउ ।
तिम्व किम्वइ पडिउ अणंगु खडहडि वलिवि सरु नहु संधिउ ॥४
अरिरि मत्त-गयंद भज्जहिँ जेम्व हरि-हुंकारवे ।
जिम्व इयर कायर के-वि नासहिँ समरि हय-हिंसा-रवें ॥
जेम तिमिरु झडत्ति भिज्जइ पिक्खि रवि गयणंगणे ।
तिम्व मयणु मयण जिम्व विलिज्जइ थूलिभद्दह दंसणे ॥५
तह ठाण झत्ति पणट्ठि उट्ठिउ गिरिहि मज्झि पइट्ठउ ।
संकुडिवि लिक्किवि किम्वइ थक्कउ पुणवि कह-वि न दिट्ठउ ॥
सिरि-थूलभद्दिण समरि भग्गउ वलिवि अंगि न लग्गए ।
जाणियइ किरि तह दिणह पच्छए इमु अणंगु भणिज्जए ॥६

मूल के भ्रष्ट पाठ : १. २. पन्नघ. २. २. विंबा°; °पसित्त°; ४. °वाणघ, °णुं, लीलइं. ३. ३. °भद्दघ. ४. जित्तउ. ४. २. पडिडिउ. ५. १. °वे. २. °वे. ४. °द्दघ. ६. २. संकिवइं. ३. से°. ४. तद दिणघ, इमो.

जाम्व नट्टु पइट्टु निय-घरि ताम्व रइ-बुल्लाविओ ।
'कहि थूलभद्दिण सरिसु तुडि करि कवणु फलु पईँ पाम्विउ' ॥
'सुणि कंति इणि छहिँ रसहिँ भोयणु करवि हउँ वीसासिउ ।
झाणग्गि-खग्गि हणेवि भग्गउ ता न सक्किउ नासिउ' ॥७
'को-वि निय-तणु तविण सोसइ कु-वि य रन्निहिँ निवसए ।
किवि को-वि पिइ सेवाल भक्खइ सो वि तू आसंकए ॥
जो वेस घरि चउमासि निवसवि सरस-भोयण-सत्तओ ।
तसु थूलभद्दह पाय पणमहुँ जिणि मयण तुहुँ जित्तओ' ॥८

*

७ १. पयट्टउ. २. पुइ. ८ १. कुविस. ३. °सत्तउ. ४ °महु, मयणु.
अंत : थूलभद्रमुनिवर्णनाबोली समाप्ताः.

३१. शांतिनाथ-बोलिका

ता उत्तर दक्षिण   पूरव पच्छिम   चिहुँ दिसि हुंती नारि ।
ता कर जोडेविणु   नाहु नमेविणु   'वयणु इक्कु अवधारि ॥
ता दूसम-काले   पहु सिरिमाले   अदबुदु सुणियइ तित्थु ।
ता इह भव-सायरि   दुक्खह आयरि   भवियण-जण-बोहित्थु ॥१
ता तिहुयण-सामिउ   सिद्धिहि गामिउ   निसुणिज्जइ संसारि ।
ता प्रिय वंदावह   वेगु करावह   लद्धउ जम्मु म हारि' ॥
ता रंगि (?) चडेविणु   वेगु करेविणु   मनि धरि गरुयउ भाउ ।
ता मंदिरु दिट्ठउ   पाउ पणट्ठउ   फिट्टउ भव-दुह-दाहु ॥२
ता पहुती बाला   नयण-विसाला   अदबुदु करि सिणगारु ।
ता पहु पणमेविणु   पूय रएविणु   सहलउ करि संसारु ॥
ता घिंदिणि देविणु   रासु रमेविणु   दीवी लिउ नच्चंति ।
ता ससहर-वयणी   मणहर-नयणी   संतिहि गुण गायंति ॥३
ता धन पुनवंती   बहु गुणवंती   अमर पसंसहि सग्गि ।
ता दाणु दियावहि   महिम करावहि   सुगुरु-वयणि विहि-मग्गि ॥
ता सिरिमालह मंडणु   पाव-विहंडणु   थप्पिउ जिणिसर-सूरि ।
ता भवियहु वंदहु   जिव चिरु नंदहु   दुरिउ पणासइ दूरि ॥४

*

१. ३. क. °ली, °ली, ४. क. भवियह. २. ३. ग. लिंग. ३. १ क. उदभदु, ग. अदभुत; ३. क. घिद्दिणि. ख. ग. घिन्नण. ४. क. ग. °ठवणी. ४. १. ग. पनहती; ३. क. ग. सिर°; क. जिण°, ग. जिणे°.

अंत : इति श्रीशान्तिनाथबोलिका.

३२. वासुपूज्य-बोलिका

ता पल्हणपुरि गोरी विनंती करहि जु 'प्रिय निसुणेहु ।
ता दूसम-कालि सूसमु अवयरियउ दुहह जलंजलि देहु ॥
ता चल्लहि सामिय मयगल-गामिय सहलउ जम्मु करेसु ।
ता विज्जाउरि विहि-मंदिरि पणमिसु वासुपुज्जु-तित्थेसु' ॥१
ता चल्लहि सुंदरि मणि निच्छउ करि अदभुदु करि सिणगारु ।
ता गहिवि अगरु कप्पूरु कुसुम-चंदन-कत्थूरी-सारु ॥
ता पूज रयावहि भावण भावहि चंगु विलेवणु अंगि ।
ता पहिरावणी विविह कारावहि सपडि (?) नितु नव-रंगि ॥२॥
ता उल्लुलों दों दों तिउली वज्जहि गिडि (?) करडि-झंकारु ।
ता दों दों त्रिखु नखु खुनता मादल झिगडदि पडहु अइसारु ॥
ता झणुहणु कारहि झल्लरि मणहर कंत सुहावी ताल ।
ता भररं भररं भेरी सुम्मइ छपल छपल कंसाल ॥३
ता छं छं छररं आउज वज्जहि वीण वेणु अइ रम्म ।
ता तुंबुर-सरि महुर-सरि गायहि गायण खोडहि कम्म ॥
ता वासुपुज्जु तित्थयरु पसंसहि सुगुरु-जिणेसर-सूरि ।
ता भवियहु जण मण-वंछिउ पावहु दुरिउ पणासउ दूरि ॥४

*

भ्रष्ट पाठः १. २. अवयरिउ यउ, देउ; ४. विजा°. २. १. चलहि, उदभद्रु; २ कपू°; ३ अंगि विलेवणु चंगु. ३. ४. सुमइं. ५. १. वजहि. ४. पणासइ.

अंत : इति श्रीवासुपूज्यबोलिका.

३३. सर्वजिन-कलश

जम्म-मज्जणु भणउँ उसभस्स ।

जिय-संभवभिणंदणह सुमइ-सुपभ-सुप्पास-नाहह ।
ससि-सुविहि-सीयल-जिणह सिरि-सिजंस-जिण-वासुपुज्जह ॥
विमल-अणंतह धम्म-जिण- संति-कुंथु-अर-मल्लि- ।
मुणि-सुव्वय-नमि-नेमि-जिण- पास-वीर-जिण-वल्लि ॥१

अमर-गिरिवर-सिहरि न्हाविंसु ।

चउवीस य तित्थयर (?) पढम-कप्प-सक्कंकि संठिय ।
तेवट्ठि-देविंद सुर अच्चुइंद-पमुहा महड्ढिय ॥
मणिमय-मट्टिय-कणगमय- संजोगय (?)-कलसेहिँ ।
इक्खु[य]-रस-खीरंबु-घय- जलहिंतो भरिएहिँ ॥२

तयणु संठियचुयइ कप्पिंदु ।

उच्छंगि सव्वे वि जिण न्हवइ पढम कप्पिंदु वेगिण ।
सिय-वसह-सिंगुच्छलिय- ललिय-दुद्ध-धारा-पवंधिण ॥
धाविवि मज्जण-जलु अमर अमरी वि हु वंदंति ।
के-वि देव चामर पवर जिण-पुरओ ढालंति ॥३

के-वि नच्चहिँ के-वि गायंति ।

कि-वि जय-जय-रवु करहिँ कि-वि विसट्ट नट्टइ पवट्टहिँ ।
कि-वि खिल्लहिँ कि-वि उल्लहिँ कि-वि रसंति कि-वि हसहिँ विलसहिँ ॥
कि-वि गज्जहिँ कि-वि गुलगुलहिँ कि-वि उच्छाह पढंति ।
ढक्क ढुक्क त्रंबक तहिँ कि-वि झल्लरि वायंति ॥४

तयणुगारिण सव्व भो भव्व ।

अप्पुव्व-वत्थाभरण- भूसियंग मण-रंग-चंगय ।
आणंद-बाह-प्पवह- न्हविय-गल्लया पुलय-संगय ॥
करह सव्व तित्थेसरह मज्जण-महु बहु-सेउ ।
सिवपुरम्मि तुम्ह वि हवइ जिवँ लहु रज्जभिसेउ ॥५

*

भ्रष्ट पाठः ३. २. उत्संगि; ६. मज्जणु. ९. ढालिंति. ४. ३. पवट्टइ; ६. हसइ विलसइं. ५.७ मज्जणु, °सेय. ८ भवइ.

अंत : इति सर्व्वजिनकलशः समाप्तः.

२४. युगादिदेव-कलश

जस्स पय-पंकयं निम्मडिम-कवयं सुर-असुर-नर-खयर(?)वयंसीकयं ।
तस्स रिसहस्स भत्तीइ मज्जण-विहिं किं-पि पभणेमि तुम्हि कुणह सवणात्तिहिं ॥१
सुर-सिहरि मिलिय चउसट्ठि तह सुरवरा पवर-नेवत्थ-धर हरिस[-भर]-निब्भरा ।
सयल-निय-निय-परीवार-परिवारिया फुल्ल-नयणंबुया विप्फुरिय-तारिया ॥२
रुप्प-मणि-कणय-मईहिं निम्मत्तिए, इक्खुरस-खीर-घय-नीर-पूरंतिए ।
तेहि कलसे कुणहि पढम-जिण-मज्जणं भत्ति-भर-परवसा कम्म-मड-तज्जणं ॥३
के-वि गज्जंति गुलुगुलहि किं-वि चामरा के-वि वायंति ढालंति किं-वि चामरा ।
का-वि नच्चंति गायंति किं-वि देविया हरिस-भर-पूरिया भूसणालंकिया ॥४
विमलगिरि-मंडणं नाभि-निव-नंदणं जण-मणाणंदणं कम्म-निक्कंदणं ।
नयणसोहिग भो न्हवहु भविय-जणा सिव-वहू होइ निम्व तुम्ह उच्छुय-मणा ॥५

३५. वीरजिन-कलश

नमिर सुरवर-पवर-सिर-मउड.

मणि-किरण-निम्मल-बहुल- काय- कंति-सोहिय-ससुंदरु ।
संसार-वण-घण-दहण दुट्ठ-कम्म-निट्ठवण-पच्चलु ॥
पंचिंदिय-करिवर-दलणु जम्मण-मरण-विणासु ।
आइ-जिणिंदह पय-कमलु भावं पणमिय तासु ॥१

देवि सरसइ सरस-तामरस-

वर-कोमल-दल-नयण काय-कंति-सोहिय-सुसुंदर ।
कढिण उन्नय सिहण कसिण केस सिरि पउर दीहर
तिहुयण-जण-आणंदयर भावं पुणु पणमेवि ।
जम्म-कालि जं जिणु न्हवहु संपय तं पयडेमि ॥२

इत्थु भारहि नयरु सुपसिद्धु

वर-तुंग-तोरण-सहिउ विविह-रयण-धवलहर-सोहिउ ।
अट्टाल-देउल-बहुल हट्ट-टिंट-चउहट्ट-रेहिउ ॥
नंदण-वण-वावी-सरहिँ जहि कुवलय-गंधेण ।
आसासिज्जइ तरुणियणु आगच्छइ पवणेण ॥३

कुंडपुर-वर-नयरु नामेण

वर-राउ सिद्धत्थु तहिँ करइ रज्जु सय-नीय-कारणु ।
करि-तुरय-रहवर-भरिउ सत्तु-वग्ग-भय-भीय-दारुणु ॥
सयलंतेउर तसु पवर बहु-गुण-रयण-निहाणु ।
अत्थि घरिणि रइ-रूय-सम तिसलाएवि पहाणु ॥४॥

तम्मि अवसरि सुद्ध-छट्ठीहिँ

आसाढ पुप्फुत्तरह चविवि चईय सुर-रिद्धि-मणहर
उप्पन्नउ दियवर-कुलह चवण महिम तसु करहि सुरवर
कसिण-पक्खि तहिं तेरसिहिँ आसोयह सुर-नाहु ।
उत्तम-कुलि जाणिवि ठवहु तिसल-गब्भि जिण-णाहु ॥५

भ्रष्ट पाठ : १. १. सिरि. २. १. देव. ३. ७. कुवलइ. ४. ७. रय.

नवहि मासहि सत्त-वासरह
विहि पहरह तेरसिहिँ सुक्क-पक्खि तहिँ चित्त-मासह ।
कल्हार-कोमल-वयणु जाउ वीर सिद्धत्थ-रायह ॥
पुण वद्धाविउ वर विलय जानिय (?) भूसण लेवि ।
कंपिउ आसणु सुरवइहि तक्खणि अवहि मुणेवि ॥६

ताम तक्खणि सक्क-वयणेण
अप्फालिउ घंट वर मिलिय तियस टंकार-सद्दिण ।
हरिसइ सवि जिणवरह जम्मि भवणि गच्छइ खणद्धिण ॥
सलहिवि तिसलह देइ वरु अवसोयण तो तंमि ।
लेवि करंजलि वीर-जिणु आयउ गिरि-सिहरंमि ॥७

कणिर-कंकण-कलयलाराव
कर-कलिय-कंकण-रयण चलण-चलिय-नेउर-सद्दिण ।
वर-विविह-मणिमय जडिय मउड सिरि दिन्न चंदिण (?) ॥
कप्पूरागरु-घण-घुसिण- परिमल-वहुल-विलित्त ।
चीणंसुय पडिनित्त वर पहिरवि सुर संपत्त ॥८

पत्त सुरवर मेरु-सिहरंमि
जय-जय-रव परिमल वहल सीह-नाउ दुंदुहि समुज्जलं (?)
वर तिवल दुलुदुलु करड करयरंति उच्छलिय नद्दिण ॥
भेरी-भरहर-पड्ड-पडह- काहल-संख-सएहिँ ।
पूरिउ नहयलु सयलु तहि तक्खणि वज्जंतेहिँ ॥९

के-वि सुरवर वारि-कज्जंमि
धावंति सायर-समुह लेवि कलस कलयल-ससद्दिण ।
उट्ठंति कि-वि कि-वि करहि सुरहि-कुसुम-मंदार-मंजरि ॥
जय-जय-सद्दिण कि-वि अमर नहयल-तलु पूरंति ।
रोमंचकिइ-चुइय(?)तणु कि-वि सुंदरु नच्चंति ॥१०

ताम चिंतइ इउ निय-मणिण
पिक्खेविणु वीर-जिणु तणु-सरीरि किव भरु सहेसइ ।
वर वारि-निम्मल-भरिउ कणय-कलस-चउसट्ठि वहेसइ ॥

---

७. १. सक्क. ७. °सोयह. ९. ८. नहि. १०. ५. मंदारु. ६. सद्दिणि. ६. नाहयलु.

जा परिसु(?) निय-मणि धरइ वासवु गिरि-सिहरग्गि ।
ताम जिणेसरु लहुय-तणु चालइ मेरु कमग्गि ॥११

ताम उब्भड वियड दढ कढिण

अमराहिव भर-थडह निविड-सरल-तरु घण-समूहह ।
मणि-रयण-कुट्टिम-तलह सुर-विमाण-आरूढ देवह ॥
निय-ठाणंतरि संठियउ जं सुर-गिरि चालेइ ।
वीर-जिणेसह लहुय तणु सुर-गिरि-सिरु चंपेइ ॥ १२

सयल-सुरगिरि-पउर-पायार

सर सरवर विवर घर पउर गाम पट्टण विसालइ ।
थरहरिय नंदणवणइ निविड दुग्ग दुग्गम करालइ ॥
करयल-रव उत्तट्ठ घण इम सुरयणु जंपेइ ।
'वीर जिणेसर लहुय-तणु अहवा किंपि जिणेइ' ॥ १३

ताम जिण-बलु मुणवि सुर-नाहु

जोडेवि कर सिरि धरइ 'खमह नाह अतुलिय-परक्कम ।
नव जाण (?) तुज्झ बलु वीर दमिय-कंदप्प-दुद्दम' ॥
पुण विज्जाहर-सुर-गणह जंपइ एहु सुरिंदु ।
'लेवि कलस मा चिरु करहु न्हावहु वीर-जिणिंदु' ॥ १४

*

अंत : इति श्रीमहावीरकलसः समाप्तः.

३६. महावीर-जन्माभिषेक

[कर्ता : जिनेश्वरसूरि   रचनासमय : ११वीं शताब्दी]

सिद्धत्थ-महा-नरराय-वंस-   सर-रायहंस मुणि-रायहंस ।
तेलुक्क-नाह युग-दीह-बाह   जय चरम जिणेसर वीर-नाह ॥१
तुह मज्जणु जे जिण कुणहिँ भव्व   ते पावहि संपइ नाह सव्व ।
उच्छिन्न-रुद्द-दारिद्द-कंद   पणयामर-विंद जिणिंद-चंद ॥२
सा धन्न पुन्न सु-कयत्थ वीर   सिरि-तिसलदेवि जसु उयरि धीर ।
उप्पन्नु सयल-तेलुक्क-नाहु   तहु गुण-गण-रयण-सलिलनाहु ॥३
सुर-सिहरि मिलिय चउसट्ठि इंद   जम्म-क्खणि तक्खणि तुह जिणिंद ।
केऊर-मउड-कडिसुत्त-हार-   चल-कुंडल-मंडिय भत्ति-सार ॥४
निय-निय-विसेस-परिवार-जुत्त   उल्लसिय-चारु-रोमंच-गत्त ।
खीरोहि-खीर-भर-पूरिएहिँ   सयवत्त-पिहाण-विभूसिएहिँ ॥५
मणि-कंचण-रयण-गण-निम्मिएहिँ   कलसेहिँ विसाल-सुनिम्मलेहिँ ।
तुह मज्जणु सज्जण-विहिय-तोसु   पक्खालिय-कलि-मल-पडल-दोसु ॥६
कल्लाण-वल्लि-कय-परम-पोसु   आगम-विहाणि करि वयण-कोसु ।
विरयंति सुरेसर सयल तत्थ   संपुन्न पुन्न भावण कयत्थ ॥७
वर रंभ तिलुत्तम अच्छराउ   नच्चंति भत्ति-भर-निब्भराउ ।
गायंति तार-हारुज्जलाइँ   तुह चरियइँ जिनवर निम्मलाइँ ॥८
वज्जंति ढक्क टवक्क बुक्क   कंसाल ताल तिलिमा हुडुक्क ।
उप्पित इंत सुरवर-विमाण   नह-मंडलि दीसहिँ पवर जाण ॥९
जय-जय-रवु के-वि करंति देव   जोडिय-कर-संपुड करहि सेव ।
कि-वि अट्ठ अट्ठ वर-मंगलाइँ   तुह पुरउ करहि कय-मंगलाइ ॥१०
मन्नंति अप्पु सु-कयत्थु पुन्न   तहिँ सयल सुराहिव सुकय-पुन्न ।
जं न्हविउ अज्ज सिरि-तिजग-नाहु   निच्चविय-भविय-भव-दहण-दाहु ॥११
कल्लाण-वल्लि-उल्लास-कंदु   तेलुक्क-परम-आणंदु चंदु ।
हल्लप्फल-सुर-कय-नट्टरंगु   जम्म-क्खणु तुह जिण जयउ चंगु ॥१२
जम्माहिसेउ कय-तिजग-सेउ   भवियण-निन्नासिय-पाव-लेउ ।
तुह करहि देव-देविंद-विंद   असुरिंद फणिंद स-जोइसिंद ॥१३
जेम मेरुम्मि अमरेसरा मज्जणं   करहि तुह वीर गिरि-धीर दुह-तज्जणं ।
सव्व सुवियड्ढ तह कुणहि जे संपयं   सुत्त-विहि णाउ ते लहहि परमं पयं ॥१४

※

अंत : इति श्रीमहावीरजन्माभिषेकः कृतः श्रीजिनेश्वरसूरिभिः.

३७. कृपण-गृहिणी-संवाद

[कर्त्ता : आसिग रचना-समय : १२०० के पश्चात्]

किवणु पभणइ 'निसुणि घरघरणि
महु वुत्तउँ जइ करह थवहि अत्थु धरणिहि खणेविणु ।
खञ्जंतउ तुट्टिसइ करि उवासु भुक्खी अछेविणु ॥
तंदुल संचह तुस व्रयह हिंडह लिल्लिर-वेसि ।
वंभण पहियय पाहुणा ढुक्की कह वि म देसि' ॥१

किवणु पभणइ 'किम्व करउँ धम्मु
अज्जिय धणु थोडिलउ इक्क कोडि निट्ठाह पुञ्जइ ।
नितु व्रइयइ नितु वेचियइ विसु याहु न व हाउ खञ्जइ(?) ॥
विल्लं विल्ला न वि मिलइ जाम्व न गणियउ गम्मु ।
वरिसह लेखउ जोइयउँ खद्धा रोक वि द्रम्म' ॥ २

ताव वाली भणइ विहसेवि
'सिक्खवंती जम्मु गयउ दंत घट्ट वलि वलि भणेविणु ।
जिव जम्मणु तिव मरणु करिसि काइ धणु कणु संचेविणु ॥
धरणिहिँ थवियउ वीसरइ वंचावइ करतारु ।
जं जं दियह त ऊयरइ मम्मलु थियउ संसारु' ॥ ३

ताव किवणह लग्गु मणि रोसु
कोपानलि घणि चडिउ धगधगंतु रोसिहि पलित्तउ ।
नीसासु नितुलिय वार वार पभणइ तुरंतउ ॥
'खरउ निविन्नउ धरणि तुहु जं धनु विलसहि खाहि ।
हत्थु खंचि करि मेलि धनु कय पुण पीहरि जाहि' ॥४

ताव वाली रुयइ नयणेहिँ
जिव जलहरि जलु पडइ वहइ जेव निज्झरणि गिरि वरि ।
विहवि नडिउँ तं जि घरु किवणि दिन्नु फलु सुक्क तरुवरु ।।
सीलु म खंडिसु धनु व्रयसु कुलह उजालिसु नाउँ ।
जइ मारह तो मारि प्रिय किवइ न पीहरि जाउँ ॥५

---

१. २. वित्तउं. ५. अच्छेविणु. ६. संचयह. २. २. अजिय. ३. २. ४. ६. निव्वि; ७. खाहिं. ५. ३. निझ°; ७. उज्जा°.

किवणि तालउ दिन्हु घर-वारि
लंघाविय तिणि घरणि तिगि य जाइ मा सेलि लग्गउ(?) ।
नव लक्ख द्रम्मह थविय गंठि इक्कु रूयउ न वद्धउ ॥
नयणिहि न पडइ निंद्रडीय दह दिह कीयउ कम्मु ।
नवलख-द्रम्मह वाँसियउ किविणि विढत्तउ द्रम्मु ॥६

ताव किवणह लग्गु अवरतउ
अणु दुम्मणु मणि हूयउ मिलिउ लोउ रोअणह लग्गउ ।
मंदिर-गेहिणि रूसविय हुयउ स लिल्लर-वेसि ।
किविण सु मुच्छा-विहलु गउ नवलख-द्रम्मा-रेसि ॥७

ताव वालिय किवणु बूझविउ
तालउ नव-खंड किउ वावि वावि मंदिरु जुआविउ ।
नव-खंड ग्रह-पुञ्ज किय नवइ लक्ख खण ताह आविय ॥
तह बाली-केरइ सतिण उड्डिवि गउ पाविंदु ।
कर उब्भिवि आसिगु भणइ किविणह मणि आणंदु ॥८

'निसुणि सुंदरि' किवणु पभणेइ
'सति सीलि तुहु उत्तमिय तुहु ज देवि अपछर पसिद्धिय ।
धन्नु एहु करतारु (ति)पर जेण मज्झ तुहु घरणि दीन्ही ॥
खाह पियह धनु विद्रवह वाहि अवारिय-सत्तु ।
जं जं भावहि तं करहि किवणु भणइ विहसंतु ॥९

*

६. ८. °लक्ख°. ७. ९. °लक्ख°. ९. १. पभणेवि; ३. अपच्छर.

३८. प्रकीर्ण-दोहा

जेहउ सद्दु सुहावणउ जइ तेही तणु हुंति ।
ता कोविलडी पत्थिवह कसु कसु घरि न वसंति ॥१

*

कन्निण वन्निण थणहरिण पामर-जण रच्चंति ।
मामि छ्यल्ल मयच्छियहँ छेयत्तणु जोवंति ॥२
निच्चु नवल्ली महिलडी अप्पुणु छंदउ चारु ।
ए बिन्नि-वि जसु संपडहिँ तसु सारउ संसारु ॥३
कंत फुरंतइ सासि करि काइउँ रलियावणउँ ।
जमह पहुत्तइ पासि कहिँ हउँ कहिँ तुहुँ कहिँ रली ॥४
कर जोडिवि काइउँ भणउँ भाऊ मुत्ती-हार ।
थणहर लुट्टि त तु पडि(?) पुणु कह एही वार ॥५
थणहरि चडि लुट्टंति घणु गुण-वत्त वि तुट्टंति ।
इह कसवट्टउ हार तुहुँ हियडइ धरंास न भंति ॥६
तिम किम पिच्छइ तिम हसइ तिम बाला मल्हेइ ।
जिम तरुणहँ वासर-निसिहि वम्महु देहु देहइ ॥७
तरुणी-थणहरि तरुणयहँ तिम किम नयण निलुक्क ।
लज्ज कुडुंबउ सयण धणु सोहगु सहि जिम मुक्क ॥८
अंग-थल-त्थलि तरुणियहँ तरुणहँ चलिय ज दिट्ठि ।
सा परिसंती लग्गडी पुणु उत्तरी न हिट्ठि ॥९
जं मिहुणहँ पिम्मंधलहं घडिउ न इक्कु जि अंगु ।
तं पसुयत्तणु विहि-तणउँ कवणु न मग्गइ चंगु ॥१०
जं माइयउ न अंगि तरुणिहि सोहगु विहि-विहिउ ।
सेसउँ उरि उच्छंगि घण-थण-दंभिण रेडियउ ॥११
जाणउँ कत्थ-वि हत्थडइँ अज्ज-वि अमिउ वसेइ ।
जं वल्लह-कर-कुलिस-हय धण पुणरवि जीवेइ ॥१२

मूल के भ्रष्ट पाठ : ३.३ जिसु. ४.२ कायउं. ७.२ वाल्हा. ८.१ तरुणियहं; ३. सवण. ४. मुक्कु. १०.४. मंगइ.

जइ आवइ ता दस भला अह नावइ तो वीस ।
जो चित्तहँ उत्तारियउ तहि सउँ केही रीस ॥१३

नयणिहि वयणिहि जा रमइ सा विरल च्चिय नारि ।
कडि-कर-थण-हल्लावणी दीसइ घर-घर-बारि ॥१४

गयउ सु किं कुंभारु सहुँ तीणइ जु मयच्छियहँ ।
मण-मोहणु आकारु जं नहु दीसइ बालियहँ ॥१५

पवसंतिण पावासुइण गोरी तिम किम दिट्ठ ।
जिम अप्पहँ अनु गोरियहँ गलि जम-पास निविट्ठ ॥१६

विरहिणि-नीसासहि अनल घर-चुल्लिहि जे दित्त ।
पाडोसिय-घर झुंपडा तेहि असेस पलित्त ॥१७

केमइँ तिम लग्गंति अवरुप्परु मिहुणाइँ दिट्ठु ।
जिम सह निरु डज्झंति विरह-हुयास-पलीवणइ ॥१८

रस-कव्वइँ अनु मित्तडा अनु कल-गीय-निनाय ।
तिन्नि-वि विरह-करालियहँ मण-वीसंभा-ठायं ॥१९

जाणउँ मोर लवंति गरुइहिँ सद्दडिहिँ ।
मरती-वत्त कहंति देसंतरि कंतहँ ठियहँ ॥२०

तं काइउँ घण पिम्म घरु माणसु विहडिवि जाइ ।
जिणि सल्लंतिण हियडइहिँ मरणु वि मंगलु थाइ ॥२१

बलिकिज्जउँ हउँ ताहँ पडिवन्नय-सुहडहँ जणहँ ।
वल्लहयर-चत्ताहँ जाहँ न रवइउ (?) मणु रमइ ॥२२

भाऊ रूउ असारु दाणु असारु असारु गुणु ।
जिहिँ सहुँ जसु तिलतारु सो तसु आजम्मु वि हवइ ॥२३

*

धणि लेवइ जसु जाउ (?) तासु न कोइ अप्पणउँ ।
चडइ न वेसहँ भाउ तिणि धण-हीणइ वम्महि वि ॥२४

नेहि न अत्थु पवित्थरइ अत्थि न वड्ढइ नेहु ।
सामि वियड्ढ-विलासिणिहिँ विसमा संकडु एहु ॥२५

धण-दाणिण जे नेह धणि थक्कइ ते उवसमहिँ ।
पाउसि हुंति जि मेह ते वच्चहिँ सउँ पाउसिण ॥२६

१४.२. विरल. १५.१. कुंभार. १६.३. यिम. ४. जिम. विविट्ठ. १८.१ तिन. १९.४. छाम. २१.२. णुसुमा सु. २२.६. वल्लाहयार. २६.२. धम्मिणि.

वेसहँ तहिँ परि नेहु धण-संभावण जहिँ नहीँ (?) ।
होइ जु (?) धण गेहु धणि लेवइ तहिँ मणु रमइ ॥२७
पत्तिउ जाणिउ मिल्ली वेस न कासु-वि अप्पणी ।
वुल्लंति विस-विल्लि माहप्पहँ विहवहँ गुणहँ ॥२८

*

वलि तहँ वलि तहँ जाउँ हलि हउँ काणण मृगडाहँ ।
दिंत जु दिट्ठा अप्पणउँ जीविउ गायणडाहँ ॥२९
केहा ताहँ विसाय जे मारिय गीइण हरिण ।
कासु कहिज्जइ भाय अमिउ वि जइ जीविउ हरइ ॥३०
गीयइँ कव्वइँ वल्लहइँ जाहँ न अमयहँ कुंड ।
माणुस वेसिण ते वसह अह गद्दह अह मुंड ॥३१
ते चंगा सारंग गीयह कारणि जे मुया ।
मारणहार न चंग जे मारहिँ वीसासि करि ॥३२
रन्न-निवास-जडाहँ हरइ पसूण वि जं हियउ ।
तं पिउ गीउ न जाहँ सच्चइँ तहँ रुच्चइ कसउँ ॥३३
भाऊ रुंख-वि जेण मिल्हहि कुंपल फुल्लियहिँ ।
जइ पर गीइण [तेण] खर पत्थर नहु रंजियहिँ ॥३४
तसु कव्वहँ तसु गाइयहँ मत्थइ निवडउ वज्जु ।
जं निसुणंता कन्नडा अप्पहँ मुणहिँ न रज्जु ॥३५
भाऊ गीउ त गीउ जं कन्नहँ रलियावणउँ ।
काइँ त भणियइ घीउ जं मुहु मोडइ खाजतउ ॥३६

*

दसणहँ पिसुणहँ जीवियहँ विहवहँ अनु महिलाहँ ।
करिउ न सक्कइ सो-वि विहि वारणु विचलंताहँ ॥३७
कामिय दूमिय कामिणिहिँ मल्लिउ मरट्टु खणेण ।
काइँ विढत्तउ हय-विहिण थणहर पाडंतेण ॥३८
अणुकूली विहि माणुसहँ जहँ नीजइ तहँ जाइ ।
महिल व पिम्म-गहिल्लडी जिम किज्जइ तिम थाइ ॥३९

२९.१. जाउ. ३. दिंति. ३०.२. गीयण. ३. भाव. ३१.२. वियवहं. ३९.२. जाइं.

जइ विञ्चिज्जइ सीसु जइ पणमिज्जइ वइरियहँ ।
वलइ न तह-वि हु दीसु जइ रुट्ठी विहि माणुसहँ ॥४०
चंदाइच्चहँ केम भाऊ आवइ आथवणु ।
ता दाणव ता देव जा विहि जोइ सामुहउँ ॥४१

*

जिम जिम सुयण सहंति परिहउ लघुयत्तण मणइ ।
तिम ति[म] पिल्लिज्जंति पत्तावसरिहिँ दुज्जणहिँ ॥४२
ईवँइ रीती वलवलइ कोइल महुर-सरेण ।
जह मुणि झाणहँ टलवलइ अखलिउ पंचसरेण ॥४३
चंद म ऊगवि लोइ ऊगउ साजण-तणउँ जसु ।
आपणु खाँपणु जोइ लाइय तुहुँ लाजहिँ महीँ (?) ॥४४
साजण समउ न कोइ जं रुट्ठु वि अमयहँ निलउ ।
जइ कट्टिजइ तोइ सुरहिउँ चंदण-रुक्खडउ ॥४५

*

तुह विहि केही आलि एहु ज दूजणु निम्मियउँ ।
मज्झन पसरि वियालि जासु पराइ तातडी ॥४६
दूजणु मरमु लहेइ लान्हउ घायउ पर-तणउँ ।
पाछइ तं जि करेइ जं खंताह (?) न वीसरइ ॥४७
हूयइ जिणि सउँ संगि निच्छइ आवइ दोसडउ ।
सो दूजण-जण-संग ओ अच्छउ काजु नहीं ॥४८
आगइ अमिउँ झरेइ पाछइ सुणहउँ जिउँ भसइ ।
दूजणु किं न मरेइ ओ फीडइ नीजइ नहीँ ॥४९

*

जिम कन्नुप्पलि ताडियउँ मइँ पिउ पिम्म धरेइ ।
रण-भरि पहरण-पाडियउ तिम रोमंचु वहेइ ॥५०
आयइढिय-करवाल रण-वल्लह पिय सुणि वयणु ।
जइ मिल्लहिँ वरमाल सुर-वहु तो मइँ संभरे ॥५१

४१.१. केमि. ४२.२. भणइ. ४३. २. नहु. ४४.३. अपणु. ४५.२. यमयहं. ४. सुरहुंउ.

त्रोडिवि छड्डिवि खग्गडउ नासिवि कहँ पइसेसि ।
वलि करि सुणहु वि भग्गडउ पागि चमक्कउ देसि ॥५२

बापहि द्रोहीजइ (?) वलउँ नाठइँ तइँ रे नाठि मरेसु ।
(?)करेविणु रणि खलउ जीविउ काइँ करेसु ॥५३

मिल्हिवि सामिहिँ चाड प्रसाहँ (?) भइ नासिवि गयउ ।
भली विगोई राउ सहियह-माही पातगी ॥५४

भंडाली मन फोडि मूं-सामहु पइ बीहिसइ ।
एह ज अम्हह खोडि जं घर-सूरत्तणु वहइ ॥५५

*

घणउ घणेरउ ढोइ मउलउँ मउलउँ खाउवउँ ।
करि-केरउ मणु तोइ सल्लइ सल्लइ वाहिरउ ॥५६

मयगल-तणइ कपोलि आंग वि कन्न-पहरडा ।
महुयरु मुहुँ डवोलि ओ थाकउ ऊठइ नहीं ॥५७

समुद्रहिँ मुक्की धाह महणारंभि जि रयण गय ।
वूढा अंसु-प्रवाह तिणि भणि खारउ बापुडउ ॥५८

*

५२.२. पयसेसि. ४. देइ. ५६.४. सल्लई. ५७.१. मयगलि. ५८.३ वूहा.

३९. दंगडु

जिहिँ जिण-धम्मु न जाणियए नवि देवहँ गुरु-भत्ति ।
तहिँ तउँ जीवा दंगडए वससि म एक-इ रत्ति ॥१

जहिँ सम्मत्तु न आलवण संजम नवि चारित्तु ।
तहिँ तउ जीव म रइ करिसि झिज्जइ जेण परत्तु ॥२

दाणु सपत्ति न दिन्नं चंगं तव निअमेण न सोसिअ अंगं ।
जिण न नमिअ भव गहण सत्थउ(?) हा हा जम्म गयउ अकयत्थो ॥३

जिम पंथि पहियउ निसंबलु दिसि पक्खा जोइ वहु भुक्खियउ ।
धम्म-विहूणा जीव तूं (?) जहिँ जाइसि तहिँ दुक्खियउ ॥४

जहिँ विहुँ पहरह मग्गडउ तहिँ जिय संबल लेइ ।
जहिँ चउरासी भव-गहण तहिँ अवहेरि करेइ ॥५

उच्छिन्नुं न-वि लब्भिसइ मग्गंताँ तिणि देसि ।
काँइ थिट्टह चालियइ(?) संबलु अप्पण-रेसि ॥६

करि संवलु भरि भत्थडी इहि अप्पणा घराहु ।
अग्गइ विसमा वाणीया वेसाहडु कुआहु ॥७

अत्थह जीविअ-जुव्वणह जो नवि लाहु लेइ ।
गुणि तुट्टइँ धाणुक्क जिम परि हत्थडा मलेइ ॥८

गयउँ कडेवर चेइहरे मनु मेल्हेविणु हट्टि ।
विहुँ लाहाँ इक्कु नही सूनी भावइ सट्टि ॥९

विसमी गय कम्मह तणी धीरा काँइ करंति ।
तहइ विस-क्करि आहुडिय दढ गंठिण भज्जंति ॥१०

जं चंगं परिणामि सुहु तं जग्मेवि न लेइ ।
चालणि जिम मिच्छत्त जिउ कण छंडवि तुस लेउ ॥११

मिच्छादिट्ठि पमाइ जिउ वार वार किमु वुच्चइ ।
जसु नरयह उप्परि डोहलउ तसु जिण-धम्मु कि रुच्चइ ॥१२

गय-खंधि चडेविणु गहिलडी पुण खरि केम चडिज्जइ ।
जिण नामेविणु कुट्टडी अन्नह किम नामिज्जइ ॥१३

१.३. जीवां. ४.४. दक्खीयउ. २. भक्खियउ. ५.१. मग्गडइ. २. लेउ. ३. गहणि. ६.४. संवलु. ८.३. धाणिक्क. ९.१. चेइयहरे. २. हट्टे. ११.१, सहु. १२.४. तुस, १३ ४. गहल्डी. ४. केम.

संजमि भरि वोहित्थडउ मइँ जाएवउँ पारि ।
मण-वचणिहि ँ ही जे लीउ पुण पडियउ भव-संसारि ॥१४

पर-परिभवु सज्जण-विरहु अनु दालिद्दह दाहु ।
ए एहा ऊमाहडा फेडइ जिणवर-नाहु ॥१५

म-न रूसउ म-न रोसु करु रोसहि ँ नासइ धम्मु ।
धम्म-विहूणा नरय-गइ दुल्लह माणुस-जम्मु ॥१६

कोह पचावु देह-घरि तिन्नि विकार करेइ ।
अप्पउँ तावइ पर तवइ परतह हाणि करेइ ॥१७

जं दिज्जइ पंचंगुलिहि ँ तं परि अग्गइ थाइ ।
जम्मह केरइ हल्लोहलइ मोट कि बंधण जाइ ॥१८

सासि चलंतइ सउँ चलइ सम्मइ धारण भेउ ।
न-हु तेहइ हल्लोहलइ किम समरिज्जइ देहु ॥१९

जो न-वि पहिउ न पाहुणउ न-वि साहम्मी लोइ ।
सो जीवंतु रोइ धणि मूड़ स मंगुल होइ ॥२०

धणु राउलि जीविय जमइ रट्ठउँ पक्खेलाँह(?) ।
हूंतुं जेहि न माणीउँ छारड मुंढी ताहँ ॥२१

कल्लरि हऊउँ चलहरण(?) पंडरि हऊउँ ढज्ज(?) ।
कंत कुडीरउँ भज्जिसइ कइ कल्ले कइ अज्जु ॥२२

सूधा बाँधइ दीहडइ चिंतिज्जइ अप्पाणु ।
जीव पियाणा घंधलिहि ँ कहि संजम कहि दाणु ॥२३

भारी-कम्मा जीव तूं जइ बुज्झसि तु बुज्झि ।
सयल कुटंबूं खाइसि [इ] मत्थइँ पडसिइ तुज्झ ॥२४

जिम सउणा रवि-उग्गमणि उड्डवि तरु छंडंति ।
तिम कुटंबह माणसह मरिय दिसो-दिसि जंति ॥२५

थक्का गुड्डा दो-वि कर झामल हुई सु-दिट्ठि ।
जीवहि ँ धम्म न संचीउं किय कुटंबह विट्ठि ॥२६

अप्पणु रंजि म रंजि परु करि सच्चइ ववहारु ।
देउलि दिन्ने भाटके को भाऊ को आहु(?) ॥२७

१४.१. संजम. वोहत्थडउ. २. जाणविउं. २०. १. पहीउ. २१. ४. ढारड. २४.२ जायविउं. २५.४ मरीय. २७.३. पुहचइ.

जीव कडेवर इम भणइ मइ हुंतइ करि धम्म ।
हुं मट्टी तूं रयणमइ हारि म माणुस-जम्मु ॥२८

हियडा संकुडि मिरिय जिम मन पसरंत निवारि ।
जेता पहुचइ पाँगरण तेता पाइ पसारि ॥२९

भासा-समिति सिक्खिआ जा जिण वयणह सारु ।
हियडउँ दुग्गइ संमहिय पट्ठविअं सुविचार ॥३०

*

३०.४. सविचार अंत : दंगड्ड समाप्तं ॥

४०. नवकार-फल-स्तवन

किं कप्पत्तरु रे अयाण चिंतहि मन-भित्तरि
किं चिंतामणि कामधेनु आराहहि बहु-परि ।
चित्रावेलिहि काजु किसिउँ देसंतरु लंघउ
रयण-रासि-कारणिहि किसिउँ सायरु उल्लंघउ ॥
चउदह-पूरव-सारु जगे लद्धु एह नवकारु ।
सयल काज महियलि सरहुँ दुत्तरु तरइ संसारु ॥१
केवलि-भासिय-रीति जिके नवकारु अराहहिँ
भोगवि सुक्ख अणंत अंति परमप्पय साहहिँ ।
इणि झाणिहि सुर-रिद्धि पुत्त-सुह विलसइ बहु-परि
इणि झाणिहिँ सुर-लोकि इंद्र-पदु पामहिँ सुंदरि ॥
एहु मंतु सासुतउ जगि अचिँत चिँतामणि एहु ।
समरणि पाप सवे टलहि रिद्धि-सिद्धि नव-गेह ॥२
निय-सिरि उप्परि झाण-मज्झि चिंतवहु कमल नर
कंचणमइ अट्ठ-दल-सहित तिसु माहिँ कनक वर ।
तिह बइठा अरिहंत पउम-आसणि फटिकह मणि
सेय-वत्थ पहिरेवि पढम पय चिंतहु निय-मणि ॥
निव्वारिय-चउगइ-गमण पामिय-सासय-सुक्ख ।
अरिहँते-झाणिहि जे मिलहिँ तिह अजरामर मुक्ख ॥३
पन्नर-भेय तह सिद्ध बीय पय जे आराहहिँ
राता-विद्रुम-तणइ वन्नि सिरि सोहग साहहिँ ।
राती धोवति पहिरि जपहिँ सिद्धह पुव्वहँ दिसि
सयल लोय तह नरह होइ ततक्खिण सव्व वसि ॥
मूल-मंतु वसिकरण इहु अवरु सहू जगि धंधु ।
मणि मूली अउखध करइं बुद्धि-हीण जाचंधु ॥ ४

१.१. चत चिंतउ भितरि. १.२. आराहइ, आराहउं. १.३. लंघइ. १.४. उल्लंघइ. १.६. सरइ, तरि. २.१. अराहइ. २.२. परमप्पह, साहइ. २.२. पामइ. २.६. टलइ, नियगेहि. ३.२. चिंतवइ. ३.३. तह, तिहां, अरिहंतदेव पउमासणि फिटकमणि. ३.४. चिंतवइ, चिंतउ, जंपइ, मनमहि. ३.५. निव्वारणं. ३.६. झाणिहि जिम, झाणिहि तुम्हि लहउ, तुम्हि अजरामर. ४.१. जे सिद्ध, ति सिद्धि, आराहइ. ४.१. साहइ. ४.३. जपइ सिद्धि. ४.५. वसिकरण हुय. ४.६. ऊषध.

दक्षिण-दिसि पंखुडिय नमो जपि आयरियाणं
सोवन-वन्नह सीस-सहित सिरि-ऊपरि माणं ।
रिद्धि-सिद्धि-कारणिहिँ लाभ-ऊपरि जे ध्यावहिँ
पहिरवि पीयल वत्थ तेह मण-वंछिय पावहिँ ॥
इणि झाणिहिँ नव निधि हुवइ रोग कदिहिँ न-वि होइ ।
गज-रथ-हयवर-पालकी चमर छत्र सिरि जोइ ॥५
नील-वन्न उवझाय सीस पाढंताँ पच्छिम
आराहिज्जइ अंग पुव्व धारंति मणोरम ।
पच्छिम-दिसि पंखुडिय कमल उप्परि जे झाणं
पहिरवि नीला वत्थ तेह गुरु-वयण-प्रमाणं ॥
गुरु लख लखहि जि ते विदुर तिह नर बहु फल हुंति ।
मन सुद्धि-विहूणा जे जपइ तिहिँ नर सिद्ध न हुंति ॥६
सव्व-साधु उत्तर विभाग सामलउ बइट्ठउ
जिण-धम्म लोय-पयासयंतु चारित-गुण-जिट्ठउ ।
मन-वयणिहिँ काएहिँ जपहिँ जे इक्कहिँ झाणहिँ
पंच-वन्न विहि झाण जाणि गुरुएव-प्रमाणिहिँ ॥
अनंत चउवीसी जे हुइय हुइसइ अवर अनंत ।
आदि कोइ जाणइ नही इणि नवकारह मंत ॥७
'एसो पंच नमुक्कारो, पद दस दिसि-अगनेइहिँ
'सव्व पाव पणासणो' पय जपइ नीरेइहि (?) ।
वाइव-दिसि झाएहि जपइ मँगलाणं च 'सव्वेसिं'
'पढमं हवइ ति मंगलं' ईसाण-विदेसिहिँ ॥
चिहुँ-दिसि चिहुँ विदिसिहिँ मिलिय अठदल कमल-विसेस ।
जो गुरु लख जाणी जपइ सो घण पाव हणेस ॥८

५.२. जपइ नमो. ५.३.४. क्रम ऊलट-पुलट. ५ ४. पीला, ति नर. ५ ५. हुइय, रोर निकंद कदे, कदइ, नहि. ५ ६. पालपी. ६.१. पाढंतय, पाढंता. ६.२. पउमासणि, पच्छिमसणि, कमल निय, सुह झाणं. ६.४. जोवहि(उ) परमाणंदु तासु गय, देव (देवांह) विमाणं. ६.५. जे लक्खहि, तजेवि, जपइ तिहां, होइ. ६.६. तिहां, होइ. ७.१. विभागि सामला वइट्टा. ७.२. जिट्टा. ७.३. जपइ ठाणहिं ७.४. तिहां नाझाण, ७.५. जगि हुईय, हुईण ए, होसी ७.६. एह नवकार महंत. ८.१. दस गेवहि अगंइ. ८.२. वाइवदिसि झाएहि पडम, जाप; निराहहि, नीरेहिय, नीरेइ. ८.३. झाएहिं पडम, जपइ. ८.४. पदेसि, पदेसइ. ८.५. चउ; कमल ठवेइ. ८.६. गुरु लघु; खवेइ, हवेइ, घणेइ, घणेस.

इणि प्रभावि धरणेंद्र हुवउ पायालह सामी
समली-कुमरि उप्पन्न भिल्ल सुरलोयह गामी ।
संवल कंवल वे वलद पहुता पंचम कपि
सूली दीधउ चोर देव थिउ नवकारह जपि ॥
सिवकुमार मन वंछि करे जोगी लिद्ध मसाणि ।
सोना पोरिस सोधलउ इणि नवकार-प्रमाणि ॥९

छींकइ बठइउ चोर सिद्धि तत्तक्षण पामी
अहि फीटिवि हुइ फुल्ल-माल नवकारह नामी ।
वच्छरुवा चारंति बाल जल-नदी-प्रवाहिहिँ
वीधिउ कंठिहि उयर मंत जपियउ मन-माहिँ ॥
चिंत्या काज सवे फलहि इहरति परति विमासी ।
पालित-सूरिहिँ तणिय परि सीझइ विज्ज अगासि ॥१०

चोर धाडि संकटु टलइ राजा वसि होवइ
तित्थंकर सो होइ लक्ख विधि गुण संजोवइ ।
साइणि डाइणि भूय पेय वेयाल न पहवइ
आधि व्याधि ग्रह-गणह पीड तह किमइ न होवइ ॥
कुट्ठ जलोदर रोग सवे नासइ ईणिइँ मंत्रि मयेण ।
सुन्दरि तणिय परि.... नव-पय-झाण कयेण ॥११
एक जीह इह मंत्र-तणा गुण किता वखाणउँ
नाण-हीण छउमत्थ एह गुण-पार न जाणउँ ।
जिम सेत्तुंजय तित्थ-राव महिमा उदयंतउ
सयल-मंत-धुरि राय-मंतु राजा जयवंतउ ॥
तित्थंकर-गणहर-पणिय चउदह-पूरव-सारु ।
इणि गुणि अंत न को लहइ गुणि गरुवउ नवकारु ॥१२

९.१. हुयउ, हूअउ. ९.२. सवली कुवर. ९.३. देवह गति. ९.४. थयउ; नवकारहिं. ९.५. लियउ, लीध. ९.६. पुरिसउ. १०.१. एक अगासइ गामी. १०.२. नामिय, गामी. १०.३. वाच्छरूआ; नवनेह प्रमाणिहिं; प्रवाहइ. १०.४. दीधउ, कांटि, उवरि मंत्र जपिउ. १०.५. चिंता; सवे सरेहि. १०.६. श्रीपालित सूरि; परइ; विद्या सिद्धि आगासि. ११.२. होइ, गुण विधि. ११.५. एणइं, ईणइं, ईणि, मन्त्रेण, ११.६. नव परंति. १२.३. सेत्तुज्जइ कप्पतित्थ; उदवंतउ. १२.४. राउ मन्त्र. १२.५ पमुह, पणीय, १२.६. इहुनी आदि न को लइह.

अड संपय नव-पूय-सहित्त इगसठि लहु अक्खर
गुरु अक्खर सत्तेव जाणि जाणहु परमक्खर ।
गुरु जिणवल्लह-सूरि भणइ सिव-सुक्खह कारण
नरय-तिरय-गइ-रोग-सोग-बहु-दुक्ख-निवारण ॥
जलि थलि महियलि वण-गहणि समरणि होवइ चित्त ।
पंच-परमेट्ठि-मंत्रइ तणी सेवा कीजइ नित्त ॥१३

*

१३.२. जाणु जाणहि. १३.३. श्रीवल्लह; बहु सुक्खह. १३.५. करिज्यो नित्तु; हुइ इकचित्त, नित्त. १३.६. देज्यो नित्त; चित्त.

अंत : इति श्रीनवकारफलस्तवनमिदं ॥ ॥ इति श्रीपंचपरमेष्ठिस्तवनं समाप्तं ॥ इति श्री नवकारस्तोत्रं । शुभ भवतु । बाई अमोली वाचनार्थं: छः ॥ इति श्रीनवकारफलं संपूर्ण । सं १६६७ वर्षे फा शुदि २ बुधवासरे लिषितमिदं ॥

महत्त्व के शब्दों का कोश

[संक्षेपः. गु.=गुजराती, पं.=पंजाबी, प्रा.=प्राकृत, प्रा.=प्राचीन, फा.=फारसी, बं=बंगला, म.=मराठी, रा.=राजस्थानी सं.=संस्कृत, सिं.=सिंधी, स्त्री.=स्त्रीलिंग, हिं.=हिंदी, तुल.=तुलनीय]

अउखध ४०. ४. औषध, गु. ओखद

अउगी (स्त्री.) २३. ३६ मूका, म. उगी

अंचिय १०. ५ अर्चित, पूजित

अंबाइय ५. ४७ अम्बामातृ, गु. अंबाई

अंबाविउ ५.४३ प्रचारितः (तुल० गु. अंबाववुं)

अगरु उखेवू- १९. २३ सं. अगरुं उत्क्षेपय्-, गु. अगर उखेववुं

अग्गि (स्त्री.) १. ६४ अग्नि, गु. आग (स्त्री.)

अचब्भुय १२. २, १३. १२, अचंभू १२. १३ अत्यद्भुत [तुल० गु. अचंबो]

अच्छर १४. ८, अच्छरी ७. ४१ अप्सरस्

अच्छइ १. ९२, अछइ २३. २४, छइ १.९३ अस्ति, गु. छे

अछू- २३.१६ स्था

अज्ज-काल्हि २७.३.५ गु. आजकाल, हिं. आजकल

अज्जिउ १६.४७, अज्जिय ३७.२, अजिउ २३.२४, अजीय २७.३.२, अजीउ २८.१४ अद्यखलु, अद्यापि, हि. अजहु, गु. हजु, हजो

अड ४०.१३ अष्ट

अड्डिय ९.११ तिरश्चीना, गु. आडी

अणखाइय ५.९ अप्रसन्न, रुष्ट (तुल०गु.अणख)

अणु १.५ अन्यत्, अन्यच्च, गु. अने

अदभुद ३२.२, अदबुद १९.९,३१.१,३ अद्भुत, गु. अदबद

अनइ ११.८ [सं. अन्यदपि] गु. अने

अनेरउ २३.३ अन्यतर, गु. अनेरो

अनेसउ २०.४ अन्यादृश

अपर पाख २८.७ अपरपक्ष, श्राद्धपक्ष

अप्पणउं ३८.२४ आत्मीयम्

अप्पाणु १०.४४ आत्मानम्

अब्बुय १९.२४ अर्बुद, गु. आबू

अमिय वूठ १०.४० अमृत-वृष्टि

अम्मा-पिइ २.१.८, अम्मा-पिउ २.२.१७ अम्बा-पितृ

अरडक-मल्ल ७.१३ अजेय मल्ल

अरणइ ११ ९ अरति, असुख

अरासणउँ ७.३४ गु. आरासणुं

अरु ५.२५, १९.२६, २१. ५ अपरं च, प्रा. हिं. अरु

अल्ल् ८.८ दा-, गु. आलवुं

अवझा ४.६ अयोध्या

अवरतउ ६.१९, ३७.७ अभिलाषः, गु. ओरतो

अवसोयण ३५.७ अवस्वापिनी

अवारिय-सत्त ३७.९ अवारित-सत्र

असगाह २४.२ असद्ग्राह, दुराग्रह

असलेष २४.३ आश्लेषा

असी ५.२७ अशीति, हिं. असी

अहिनाण २.३.१३, २५.२ अभिज्ञान, गु. एंधाण

अहिवि २७.८ अविधवा

आउज ३२.४ आतोद्य

आऊखउ ५.२७ आयुष्कम्, गु. आवखु

ऑबुलउ २१.७ आम्र, गु. आंबलो

आगलिय (स्त्री.) २४. ८ अधिका (तुल० गु. आगळ)

आगिवाण ४,२७ अग्रानीक (तुल० गु. आगेवान)
आछइ ७.१८, ५१, २०.१० सं. अस्ति, गु. छे
आडात्रेडा २९.१८ गु. आडात्रेडा
आपणपउ १.४८,१०.२६ आत्मा, स्वः
आपणि १०.४४ गु. आपणे
आपुलउ २७.५, आपुल, २०.१३ आत्मीयः (तुल० म. आपुला, गु. आपणुं, हिं अपना)
आमोडउ २१.११, २९.१७ आम्रमुकुटः (तुल० गु. अंबोडो)
आयड्ढिय ३८.५१ आकृष्ट
आल ५. १० मिथ्याभियोग, गु. आळ
आल २३. ३६ मिथ्यावचन (तुल० गु. आळ)
आलि १६.७६ मिथ्या
आलि ३८.४६ दुर्विलसित
आली २०.१ सखी
आवट्टिय १२.३८ नष्ट
आवागमण ९.९ गमनागमन, गु. आवागमण
आस १.७६ अश्व
आसउज २४.४ आश्वयुज, हिं आसोज
आसोय ५.५३ आश्वयुज, गु. आसो
इंदियाल ५.११, १०.२१ इन्द्रजाल
इक-संथ १६.९ एकसंस्था
इगसठि ४०.१३ एकषष्टि, गु. हिं. एकसठ
इत्तलउ १२.१३ गु. एटलुं, हिं. इतना
इहरति ४०.१० इहलोके
ईहू १.१२३, १९. २७,२०.२ ईहू-, ईच्छ्-,
उच्छाह ३३.४ उत्साह, गीतप्रकारविशेष
ऊजिल १९.२ ऊर्जयंत
उज्जाणउँ १२.३९ धावत् (तुल० गु. उजावुं)
उड्डमर १२.६ उग्र भय
उढण २६.५ परिधान
उढरियलि ५.४४ उद्धृता
उपरवट्ट २९.२२ अधिक (तुल० गु. उपरवट)
ऊभ्- २.२.२८ ऊर्ध्वीकृ-,गु. ऊभुं करवुं
उमागि १.७५ उन्मार्गे
उम्माहियउ १०.५३, १९.८ उत्कण्ठितः
उल्हारो २४.३ (?)
उवज्झाय ४०.६ उपाध्याय
उवर ५.९ उदर
उवलक्ख् २.४.२९ उपलक्ष्-, गु. ओळखवुं
उवास ३७. १ उपवास
उसिणीस १३.१३ उष्णीष
उसीसउँ ५.३४,४७ उच्छीर्षकम् ,गु. ओशीकुं
उसूर १९.१४ [सं.उत्सूर] गु. असूर
ऊआस ६.९ उपवास
ऊगट २२.१० उद्वर्तन, गु. ऊकटो, सर० हिं. उबटन
ऊजिल ५.३९ ऊर्जयन्त
ऊटवणिय ४.२९ उत्थापनिका (?)
ऊमाहुल २३.३८ उत्कण्ठित
ऊभउ १२.३१ ऊर्ध्वः, गु. उभो
ऊमाहउ २३.१६ उत्कण्ठा
ऊमाही २३.३९ उत्कण्ठिता
ऊरिण ५.४३ उदृण, ऋणमुक्त
ऊलट १०.५३ हर्षोत्साह, गु. ऊलट
ऊसिय १४.२७ उत्सुक
एकलडउ १.३८ एकाकी, गु. एकलडो
एवड° २.३.१३ एतावत् , गु. एवडुं
ओडव् ७.१२ अर्पय्-
ओलगाणउ २९.१० सेवकः, गु. राज. ओळगाणो
कउडी १६.४० कपर्दिका, गु. कोडी, हिं. कौडी
कउली २७.२.६ कवली, राज. गु. कँवली, जैन सं. कपरिका
कउसीसउ १०.१९ कपिशीर्षकं, गु. कोशीसुं
कंचू २९.१७ कञ्चुक
कंसाल ३२.३, ३६.९ वाद्यविशेष
कट्ट- ३८.४५ कृन्त्, हिं. काटना
कडेवर ३९.२८ कलेवर

कणइर-कंब २.३.२५ कर्णिकार-यष्टिका, गु. कणेरनी कांब
कत्तिग २३.११, कत्तिय २४.५ कार्त्तिक
कदिहिं ४०.५ कदापि, गु. कदी
कन्ह १८.१७ कृष्ण, गु. कहान, हिं. कान्ह
कमग्ग ३५.११ [सं. क्रमाग्र] चरणाग्र
कमठाय ७.३०,३१,३४ कर्मस्थान (तुल० गु. कमठाण, कमठायो)
कमढ १२.१९ कमठ
कय ३७.४ अथवा, गु. के, हिं. कि
कयलि १३. ४२ कदली, गु. केळ
कयवन्नउ २५.१ कृतपुण्य
कयाणउँ ५.१८ क्रयाणकम् (तुल० गु. करियाणुं)
करडि ३२.३ वाद्यविशेष
करतार ५.१६, ३७.३९ फा. (गु.) किरतार
कल २०.३ कर्दम, गु. कळ
कवडि-जक्ख १९.१९ कपर्दियक्ष
कवित्त २०.६३ [सं. कवित्व] काव्य, हिं. कवित
कसमसतीय २७. २.६ गु. कसमसती
कसवट्टउ ३८.६, कसवट्ट ५.२० कषपट्टः, गु. कसोटी, हिं. कसौटी
कसार २४.७ गु. कंसार
काणि ७.२३ चिन्ता
कान्हइ ७.१८ समीपे, गु. कने
गंधि (स्त्री.) ५.१५ गंध, गु. गंध (स्त्री.)
कारिमय ५.१६ कृत्रिम, रचित, निष्पादित
कासग २७.४ कायोत्सर्ग
किछउं २७.४.१ कीदृश
किराण १४.१६ क्रयानक, म. किराणा (तुल० गु. करियाणुं, हिं. करियाना)
किवाड ५.२३ कपाट, हिं. किवाड (तुल० गु. कमाड)
कुंपल ३८.३४ कुड्मल, गु. कूंपळ
कुडि ५.१५ [सं. कुटि] शरीर
कुडीरउं ३९.२२ कुटीरकम्
कुमास ६.२९,३० कुल्माष
कूच ४.२८ [सं. कूर्च] श्मश्रु
कूवडिय २२.१५ कूपिका
केकाण ५.१३ अश्व-जाति-विशेष
केडउ करइ १२.४० अनुधावति, गु. केडो करे
केवडियालउ २६.२ केतकीयुक्तः, गु. केवडियाळो
केही ३८.१३ कीदृशी
कोविलडी ३८.१ कोकिला, गु. कुवेलडी
क्षित्तिग २३.११ कृत्तिका (?)
खंचू- १२.३० गु. खेंचवुं, हिं. खिंचना
खंचि करि ३७.४ हिं. खिंच कर
खंपण ५.५०, खांपण ३८.४४ क्षति, लाञ्छन, गु. खांपण
खंभायत ७.३७ स्तंभतीर्थ, गु. खंभात
खडहड्- ३०.३ गु. खडखडवुं
खर-छूच ४.२८ (?)
खर-सिल ७.३२ खरशिला, आधारशिला
खलहल २२.६ गु. खळखळ
खाल २.३.३४,१२.४१ गु. खाळ
खिज्ज्- ९.१२ खिद्- (तुल० गु. खीजवुं)
खिल्ल्- ९.१८, खिल्- २३.२७ क्रीड्, गु. खेलवुं, हिं. खेलना
खिव्- २४.२ विद्युत्स्फुरणे, सिं. खिंवणु, पं. खेउणा
खीजविय २७.२ कदर्थिता, गु. खीजवी
खीना २३.९ खिन्ना
खुंप २२.१०, खूँप २६.२ गु. खूंप
खुत्तउ ९.१७, खूतउ २०.३ निमग्नः, गु. खूत्यो
खेतल १२ ५८ क्षेत्रपाल
खेलउ १४.४२,१५.१० क्रीडकः (तुल० गु. खेल)
खेलाखेली १२.५७, १५.१९ पुनःपुनः क्रीडनम्

चिय ५.१५ चिता, गु. चेह
चीत २४.१० चैत्र, हिं. चैत
चुलसी १३.२५ चतुरशीति
चेलका १६.१२ शिशु सर० गु० चेलका
च्यारि २५.१३ चत्वारि, गु. च्यार
छडउ पयाणउ ५.१४ एकाकि प्रयाणम् (तुल० गु. छडे परियाणे)
छन्नवइ १२.२१ षण्णवति, गु. छन्नु, हिं. छानवे
छह ३.३६ षट्, हिं. छह
छात्र २६.५ छत्र
छारड ३९.२१ भस्म, गु. हि. छार
छिरिका २९.१९ (?)
छींडी १२.४१ वृतिविवर, गु. छींडी
छुडुपुडु ६.२०, छडपडु २७.३.६ शीघ्र
छुहिय २३.२४ क्षुधित
छेय १९.२२, छेह १०.४४ [सं. छेद] अंत (तुल० गु. छेडो)
छोह २९.१४ क्षोभ
छोहलउ (? सोहलउ) ५.११ उत्सवः, हिं. सोहला
जन्नत्त ८.१२ जन्या-यात्रा, हिं. जनेत (तुल० गु. जांन)
जन्य १०.६ यज्ञ
जरासिंधु ५.३९, ८.४ जरासंध
जलजलियउं २२.८ आर्द्रभूतम् (तुल० गु. झळझळियाँ)
जवल २१.६ [सं० यमल] सदृश
जाईसर १४.३२ जातिस्मर, पूर्व-भव-स्मरण
जाख ७.५१, २५.६ यक्ष
जाचंध ४०.४ जात्यन्ध
जाण १०.१५ ज्ञाता, गु. जाण
जात ७.४५ यात्रा
जादर ११.७,२०.७,२४.७ बहुमूल्य वस्त्र-प्रकार
जान ११.११ गु० जान (तुल० हिं. जनेत)
जानउत्र २६.४ जन्यायात्रा, (तुल० हिं. जनेत)
जामइ २३.२१ याम्यते, दम्यते
जामलि २७.३.३ पार्श्वे, म. जवळ
जालउर १२.४८ जाबालिपुर, राज. जालोर
जालउरउ ५.२, ५.४९ जाबालिपुरीय (तुल० गु. झारोळो)
जिके ४०.२ ये, राज. जिके
जिणहर ६.३५, १०.३६ जिनगृह
जीपइ ११. १४ जीयते
जीमणवार २८.९ भोज, गु. जमणवार (तुल० हिं. ज्योनार)
जीह ४०.१२ जिह्वा
जुन्ह १३.४४ ज्योत्स्ना
जुं २१.१ हिं. जूं (तुल० गु. जी)
जूतउ २०.३ युक्तः, गु. जूत्यो
जेठउ १६.२१ ज्येष्ठः (तुल० गु. जेठो)
जेता ३९.२९ यावत्, हिं. जितना, गु. जेटलुं
जेसल ५.४४ जयसिंह
जुहार्- २५.१० नमस्करणे, गु. जुहारवुं, हि. जुहारना
जोहार १९.२१ नमस्कार, गु. हिं. जुहार
झकोल्- २४.९ जलमज्जने (तुल० गु. झकोळवुं)
झख्- २३.३६ प्रलापे
झखोलिय २७.३ जलभृत
झगमग्- २२.११ प्रकाशप्रस्पन्दे, गु. झगमगवुं
झगमग ११.१५ गु. हिं. झगमग
झड ३.२२ निरंतर-वृष्टि, गु. झडी
झबक्क्- २२.६, २३.२ प्रकाशप्रस्पन्दे, गु. झबकवुं
झबझब २२.६ गु. झबझब
झल २४.१३ ज्वाला
झलक्- ३६.५ प्रकाशप्रस्पन्दे, गु. झळकवुं
झलझल्- १२.१९ उद्वेल्लने
झलहल्- २२.११ प्रकाशप्रस्पन्दे, गु. झळहळवुं
झंझ २३.११ कृश (?) (तुल० गु. झांझामूंझुं)
झाण २२.२५ ध्यान
झामल ३९.२६ निष्प्रभ
झाय्- १.१२६, १७.१० ध्याने

झाल १.६४ ज्वाला, गु. झाळ
झालियउ ४.१५ गृहीतः, गु. झाल्यो
झिज्ज्- २३.२ क्षये
झिरिमिरि २२.६ गु. झरमर
झुंपडउं ३८.१७ कुटी, गु.झूंपडुं
झुट्ठी ५.१० असत्या, हिं. झूठी, गु. जूठी
झूझ २९.११ युद्ध
टंबक्क ३६.९ तंबक्क, वाद्यविशेष
टल्- २.२.२४ नाशे, गु. टळवुं
टलटल्- १२.१९ कम्पने, गु. टळटळवुं
टहकउ १०.५६ कूजितम्, गु. टहुको
टिंट ३५.३ द्यूतस्थान
टिंटउ २९.१२ निःसत्त्वः, गु. टेंटो
टीली ११.१५ लघु तिलक
टोहण २३.१५ क्षेत्रे पक्षि-वित्रासन-नादः (तुल० गु. टोवुं, टोयो)
ठव्- २४. १० स्थापने
ठवल ९.१८ द्यूते पणः
ठाउ १०. ५५, ठाव ४.१४ स्थान, गु. ठाम
डंगुरउ ६.११ वादनदण्डः (तुल० गु. डंगोरो)
डबोल्- ३८.५७ निमज्जने, गु. डबोळवुं
डिंव १२.६ विप्लव
डुंगर १९.८ गिरि, गु. डुंगर
डुंव ५.३५ डोम्ब
डोकरि ६.२८, २५.१३ वृद्धा, गु. डोकरी
डोह्- २९.७ मलिनीकरणे (तुल० गु. डहोळवुं)
ढणहण १४.३७ रुदनरवे
ढुक्की ३७.१ समीपागमन
ढूकउ २९. १८ समीपागतः, गु. ढूक्यो
ढोय्- १३.४२ अर्पणे, हिं. ढोना
णत्थदंड १८.१० अनर्थदण्ड
तच्छाविय ३.२५ तक्षित
तडि २.३.३४ तटे, समीपे
तडिच्छड १३.३७ विद्युच्छटा
तणु (स्त्री.) ३८.१ देह
ततलउ २३.२५ तावन्मात्रः (तुल ०। गु. तेटलो)
तलवट ७.४० उपत्यका, गु. तळेटी
तलारउ ५.३७ नगररक्षकत्वम्, नगररक्षणकार्यम्
तलाउलिय ६.१७ तडागिका (तुल० गु. तळावडी)
तलिण १३.३८ श्लक्ष्ण
तल्लिच्छय ३.१८ [सं. तल्लिप्स] इच्छुक
तांतण २७.४.३ तंतु, गु. तांतणो
तक्खणि १.११२,११.१८,६.१६,३,२३३, तखणि ६.१२, ताखणि ६.११,३०, ताखिणि ६.११ [सं. तत्क्षणे] तदा, बं. तखन
ताछ्- २० १० तक्षणे
ताड्- २२.१३ विस्तारणे
ताडिय २९.१७ विस्तारित, संमुद्रणे
तातडी ३८.४६ चिन्ता
ताल्- ५.२३ तालकेन मुद्रणे
ताल (स्त्री.) ३२.३,३६.९ वाद्यविशेष
तिउली ३२. ३ वाद्यविशेष
तिथ २७.२.२ तत्र
तिलतार ३८.२३ स्नेह
तिलिमा ३६.९ वाद्यविशेष
तिहुयण १४.७ त्रिभुवन
तीथ ७.१७ तीर्थ
तुडि ३०. ३,७ स्पर्धा
तुडि-वसिण १२. २९ अकस्मात्
तेड्- २.३.१३ आकारणे, गु. तेडवुं
तेसट्ठि ३३.२ त्रिषष्टि
तेता ३९.२९ तावन्मात्र, हिं. तितना, गु. तेटलुं
तोतर २८.२५ तोतला
तोतलु २७.४. २ गु. तोतळो
त्रंवक्क ३३.४ वाद्यविशेष, गु. त्रंबाळु
त्रीखउ २९.२८ तीक्ष्णः, गु. तीखो
थक्क्- ३८.२६ स्थगने
थट्ट ५.२०, थाट २६.६ (अश्व)श्रेणि (तुल० गु. ठठ)

थणहर ३८.५ स्तन
थरहर २२. ६ गु. थरथर
थवक्क २२.१२ स्तनक
थाहर ७.१९ स्थान, गु ठार
थुण्- ५.४८ स्तवने
थोडउ १९.२१ स्तोकः, गु. थोडो
थोडिलउ ३७.२ स्तोकम्
दंदडियउ ६.१५ पलायितः
दग-रय ९.१३ [सं.उदक-रजस्] जल-कण
दंगडउ, दंगडु ३९.१ द्रङ्गः, ग्रामः
दडउ ४.१५ कन्दुक, गु. दडो
दडवडु २६ ३ विद्रवण
दह २४.2 दस
दापु १६.४ देयम्, गु. दापुं
दालि ५.२२ दाळ, हिं. दाल
दालिद्द ५.५० दारिद्र्य (तुल० गु. दळदर)
दिखाल्- १६.५, १० प्रदर्शने (तुल० हिं. दिखलाना)
दिणियर ४.२२ दिनकर, सूर्य
दिवालिय ५.४६ दीपावलिका, गु. दिवाळी, हिं. दिवाली
दिह २४.२ दिशा
दीन्हु ६.२१ दत्तम्; राज.दीनो
दीसु वलइ ३८.४० गु. दी वळे
दीह ३६.१ गु. दीर्घ
दीह ९.७ दिवस, गु. दी
दीहडउ २७.३.६, ३९.२३ दिवस (तुल० दहाडो)
दुइ १९.१, १८ द्वौ, हिं. दो
दुत्थ २८.२३ दुःख
दुहेलउ १.२३, २४.११ दुष्करः, गु. दोह्यलो
देवलवाडउ ७.२६ [सं. देवकुलपाटकः, गु. देलवाडा
दोहलउ ५.३३ दोहद, स्पृहा (तुल० गु. डोळो)
द्रेठि २१.४३ दृष्टि
धंधउ ५.५, १०, धंधु ४०.४ दैनंदिनीया व्यवहारार्था प्रवृत्तिः (तुल० गु. धंधो, हिं. धंधा)
धण १४.२४,३८. १२, धणि ९.९,१६.३९ प्रिया (तुल० गु. धण)
धवलहर १४.२० धवलगृह
ध्रसक् १४.३९ प्रस्पन्दने (तुल० गु. ध्रासको)
धाड् ८.४ विनाशने
धीय ६.२२ दुहिता
ध्रुय २४.१५ ध्रुव
धुरि ४.३४, १०.६१ आदौ, प्रारंभे (तुल० गु. धरथी)
धूअ २.१.३, धूय ८.११,२७.१, धूव ८.१२, धू.१७.१२ दुहिता, कन्या
धोवति ४०.४ गु. हिं. धोती
ध्रायउ १२.३४, ध्राय २९. १४ ध्रात, तृप्त, गु. धरायो
नइहर ११.९, [सं. ज्ञातिगृह, प्रा. णाइहर] हिं. नइहर
नड्- ८.७ आकुलीकरणे
नड-पिक्खणउं ९.१५ नट प्रेक्षणकम्
नाण ४.४७, ५.२,२३.४० ज्ञान
नायल २९.१२ (?)
नारिय-कुंजरु २१.९,४४, नारीकुंजर २९.१६ नारीमय कुंजर, कामदेव-बिरुद-विशेष
नालिय ५.५,६,२१ मूढ
निंदुव २८.२८ निन्दू
निचु १७.१७ नित्यम्
नित्तुल्- ३७.४ तोलने
निरोप ७.२४ आदेश
निलुक्क ३८.८ गुप्त, तिरोहित
निवल ६.२५,३१ निगड
निवालिय २४.११ नवलमालिका
निव्वइ २९.२२ निर्वृति
नेउर ११.३,२१.१० नूपुर
नेवत्थ ३४.२ नेपथ्य
न्याइ २७.४.५ गु. न्याये
पयठ्ठ ७.४४, पइठ. ७.४३ प्रतिष्ठा

पइसारो २४.६ प्रवेशः, गु. पेसारो
पंखुडिय ४०.५ दल, गु. पांखडी
पंगुर्- २३.२६ प्राङ्कुरय्-, गु. पांगरवुं
पंचालिय १२.३ पञ्चालिका, पुत्तलिका
पखइ २७.४.४, पाखइ ४.३३ विना
पखि १.७ पक्षे
पग १२.५६,१४.१५, पाग २१.१०,
३८.५२ चरण, गु. पग
पगि पगि ६.३ पदे पदे (तुल० गु. पगले पगले)
पच्चल ३५.१ समर्थ
पच्छिमहरए ६.२५ गृह-पश्चाद्-भागे
पछताविय २८.२० पश्चात्तापिता, हिं. पछताई,
गु. पस्ताई
पज्जुन्न ५.४७; १९.१८ प्रद्युम्न
पटउली २७.२.६, पटोलउँ ५.२२ पट्टकुल,
पट्टकूल, गु. पटोळुं, पटोळी
पटराणी २०.६ पट्टराज्ञी, गु. पटराणी
पडन्च १२,३० प्रत्यञ्चा, हिं. पनच, गु.
पणछ
पडिख्- २३.३४ प्रतीक्षायाम्
पडिछंदा २.३.१२ प्रतिच्छन्दम्
पडिवन्नउं २३.२८,३४ प्रतिपन्नम्
पण° १८.३ पञ्च
पणवीस १२.१५ पञ्चविंशति
पतीज- २३.२१,२२ प्रत्यये
पतीजउ २०.१६ प्रतीत (तुल० गु. पतीज)
पतीठिय ७.३८ प्रतिष्ठा कृता
पनर ४०.४ पञ्चदश, हिं. पनरह, गु. पंदर
परण- ११.९ परिणी- ,गु. परणवुं
परल ५.१२,१४,४०.१० परत्र, परलोक
परना १०.६२ (?)
परमप्पय ४०.२ परमात्मा
परिक्रम १९.२५ परिक्रमा
परिच्चय्- २२.२२ परित्यागे
पलित्त ३८.१७ प्रदीप्त
पलीवणउं ३८.१८ प्रदीपनकम्, गु. पलेवणुं

पहुतउ २.१.१८ प्राप्त, गत, गु. पहोंच्यो
पाउंछणय १४.१२, १४.२१ [सं. पाद-
प्रोञ्छनकम्] गु. पायछणुं (तुल०
हिं. पोंछना)
पांगरण ३९.२० प्रावरण, गु. पागरण
पांडर ४.२४ (?)
पाखलि २७.३,४ परितः
पाखियउ २१.८ पक्षी
पाखे ६.५ परितः
पाच्- २०.२ सं. पच्य्-
पाछइ ३८.४७ पश्चात्, गु. पछी
पाछोपउ ५.५१ (?)
पातगी ३८.५४ पातकी
पातलि २८.१९ गु. पातळ
पात्र ११.११, २६.५ नर्तकी
पान-बीडउ ५.२२ ताम्बूल-पुट, गु. पान-बीडुं
पामियउ ३०.७ प्राप्तः, गु. पाम्यो
पालउ ५.३१ पादचारी (तुल० गु. पगपाळो)
पालखी ४०.५ पर्यंकिका, शिबिका, गु.
पालखी
पालित-सूरि ४०.१० पादलिप्त-सूरि
पावसकाल २२.२० प्रावृट्काल
पिअ-हर २.४.९ पितृगृह, गु. पीहर, पीयर
पिउ १६.१५ पिता
°पिक्क २.१.२२ निष्ठीवन, हिं. गु. पीक
पियर २.४.१०, १४.६ पिता
पियाण ४.२० प्रयाण
पिरायु २७.३ परकीयः, गु. परायो
पिरथिम ५.४३ पृथ्वी
पिल्ल्- ९.१८ प्रेरणे
पिहाण ३६.५ पिधान
पीठ ६.१९ आपण, गु. पीठ
पीयल ४०.५ पीत, गु. पीळुं
पीहर ३७.४ पितृगृह, गु. पीहर
पुडइनि ५.११, २४.८. पुटकिनी, कमलिनी
पुप्फलउ २१.५० पुष्प

पुला- २७.२.७ पलायने
पूणइ (? पूगइ) ६.१४ प्रभवति, गु. पूगे
पूय ३१.३ पूजा
पेट १२.३८ उदर, गु. पेट
पोथउ १६.६ पुस्तक, गु. पोथुं
पोलि ६.५ प्रतोली, गु. पोळ
प्रमार ७.२०,४६ परमार (तुल० हिं. पँवार)
प्रह १०.६२ प्रगे, प्रभाते (तुल० गु. पहो)
प्रहवइ ४.३७ प्रभवति
प्राण-तियाग १६.१७ प्राणत्याग
प्राणि ६.३२ [सं. प्राणेन] हटात्, गु. पराणे
फर १२.३० फलक
फरफराव्- १२.३० गु. फरफराववुं
फरूक्- २४.९ गु. फरूकवुं
फाँडउ ११.२० पाश, गु. फंदो
फागु २२.२७, फाग २१.५०[सं. फल्गु, प्रा. फग्गु] हिं. गु. फाग
फारक्क १२.३० फलकधारी
फाली २०.७ उत्तरीय वस्त्र (तुल० गु. फाळियुं)
फिर्- २०.५,२३.३८ भ्रमणे, हिं. फिरना, गु. फरवुं
फिरिका २९.१९ (?)
फेसंडिय १२.१९ फेनपिण्ड
फोरण १३.५० (?)
बप्प ५.३,९.१ पिता, गु. हिं. बाप
बप्पुडउ ५.३३, बापुडउ ३८.५८ वराकः, गु. बापडो
बलद ४०.९ बलीवर्द, हिं. बलद, गु. बळद
बलत्कड ६.३२ बलात्कार
बलिकिज्ज- २५.१५, ३८.२२, बलिकीज- २७.४.२ बलिदाने
बहकउ १०.५६ प्रसरणम् (तुल० गु. बहेक)
बहिणि ५.२८ भगिनी
बाईउ २७.५ हे नार्यः, गु. बाईओ
बाउल २१.४९, ५०, बाउलि २१.१ रमणी
बारवई ५.३९ द्वारावती
बारह मास २४.१ हि. बारहमासा, गु. बारमासा
बाह ३३.५ बाष्प
बिल्लं बिल्ला ३७.२ (?)
बुंबारव ३०.२ पूत्कार, आक्रोश (तुल० गु. बूम)
बुक्क १२.२५, ३६.९, बूक ६.१३ वाद्यविशेष
बुहार्- ५३.७ सम्मार्जने, हिं. बुहारना
बूझ्- १.५१ बोधे, गु. बूझवुं
बेडी १.१०१, बेडुलडी १.१०० नौका, गु. बेडी, बेडली
भंगाणउं १०. ३९ भङ्ग, गु. भंगाण
भंडसाल ५.१८ भाण्डशाला (तुल० गु. भणसाळी)
भंडाली ३८.५५ भाण्डावलि
भग्गडउ ३८.५२ भग्नः, पलायमान
भमड्- १.८२ भ्रमणे
भमरडउ २०.१४ भ्रमरः (तुल० गु. भमरडो)
भमही ११.१४ भ्रू (तुल० गु. भवुं)
भयणि २.३.१० भगिनी
भरथ ४.३४ भरत
भरथेसर ४.२९, ५.३८ भरतेश्वर
भरहेसर ४.२९ भरतेश्वर
भरुयछ २.३. १८ भृगुकच्छ, गु. भरूच
भलि (स्त्री.) २२.३८ हठ, दुराग्रह
भलेरंउ ११.२४ भद्रतर, सुन्दरतर, गु. भलेरुं
भाऊ ३८.५,३८.२३,२४ भ्राता, म. भाऊ
भादरवउ २४.३ भाद्रपदः, गु. भादरवो
भादवउ २४. ३. भाद्रपदः, हिं. भादों
भामटउ ४.१७ भ्रमणशीलः, गु. भामटो
भिंभलउ ४.१६ विह्वल
भिज्ज- -२३.७ आर्द्रीभावे, गु. भीजवुं
भुंड-निलाडि २३.३१ अशुभ-ललाटा (तुल० गु. भूंडुं)

रडविडियउ १२.४० भ्रान्तः, गु. रडवड्यो
रणरण्- २२.११ रणत्कारे (तुल० गु. रणकवुं)
रन्न ३०.८ अरण्य, गु. रान
रमाउल ७.५०, रमालउ ११.१३ सश्रीक, सुन्दर, रमणीय
रयणीयर १०.५७ रजनीकर
रलीयाली २०.७ सुन्दरा
राख ६.३ रक्षा
राखे २५.९ कच्चित्, गु. रखे
राजल ११.१३ राजिमती
राठी ७.५ ब्राह्मण-जाति-विशेष
रामति २७.३ क्रीडा, गु. रमत
राव २.४.६, २५.४ गु. राव
रासुलउ १५.१, रासुलडउ १५.२१ रास, (तुल० गु. रासडो)
राहव ५.३६ राघव
रिण २३.१३ रण
रिणतूर २३.४२ रणतूर
रिमिझिमि २२.१५ हिं. रिमझिम (तुल० गु. रूमझूम)
रिसह ४.४२ ऋषभ
रीस (स्त्री.) ३८.१३ रोष, गु. रीस
रुंख ३८.३४, रुक्खडउ ३८.४५ वृक्ष, गु. रूखडो
रुल्- ५.३२ लुठने
रुलियामणउ २५.८, रलियावणउ १२.२४, १५.१९, आनन्दोत्साहजनकम्, सुन्दरम्, गु. रळियामणुं
रुली २६.४, रली ३८.४ आनंदोत्साह
रूय १२.१४ रूप
रूयउ ३७.६ रूपक
रूवडउँ ७.३५, ६.२० गु. रूडुं
रेवय १९.२४ रैवतक
रेह १२.३ [सं. रेखा] कीर्ति
रोक ३७.२ गु. रोकडु
रोल ४.१ कोलाहल, गु. रोळ
लंख्- २.३.३७ क्षेपणे, गु. नाखवुं
लंखण २.३.३९ प्रक्षेप
लंघाविय ३७.६ लङ्घनं कारिता, गु. लंघावी
लच्छि १२.४, लाछि १६.१६ लक्ष्मी
लड्डाविय १६.३० प्रशंसित (तुल० गु. लडाववुं)
लहलह्- २२.११ गु. लसलसवुं
लांक २७.२.६ कटि-निम्न-देश, गु. लांक
लागठउ ४.३२ (?)
लाडणु २६.३ वरः
लान्हउ ३८.४७ लघुः, म. लहान (तुल० गु. नहानो)
लापसिय २४.७ मधुरान्नविशेष, गु. लापसी
लामी २०.१२ अभद्रा, प्रतिकूला, विषमा
लिक्क्- ३०.६ गोपने
लिट्टु १७.४ लेष्टुक
लिलिर ३७.१, लिल्लर ३७.७ चीवर, गु. लीरो
लीह १७.१८ [सं. लेखा] रेखा, मर्यादा
लुंविय (स्त्री.) २८.२२ स्तवक, गु. लूम
लूणु उत्तार्- १९.१६ गु. लूण उतारवुं
लूय २४.१३ उष्णवात, गु. हिं. लू
लूसड ६.१५ लुण्टाक
लेसाल २७.४५,६ लेखशाला, गु. निशाळ
लेसालीउ २७.४.२–५ छात्र, गु. निशाळियो
वइसदेउ २७.८ वैश्वदेव
वंकुड १.२२ वक्र, गु. वांकडुं
वंदणय-मालिया १५.९ वंदनमालिका, हिं. वंदनवार
वक्खाण्- ११.२१ व्याख्याने
वक्खाण्- ६.२ वर्णने
वखाण्- २०.८,२६.१,४०.१२ प्रशंसायाम्, गु. वखाणवुं
वक्खाण १०.१२ व्याख्यान (तुल० गु. वखाण)
वघेला ७.२६ गु. वाघेला
वच्च्- ३८.२६ गमने
वच्छरूव ४०.१० वत्सरूप, गु. वाछरू
वछ २७.४.४, वाछ १४.२३, २७.४.१, वाछडउ १४.२३ वत्स, गु. वाछडो

संभल्- ५.१९ श्रवणे, गु. सांभळवुं
संभाल्- १२.२८,१४.१६ श्रावणे, गु. संभळाववुं
संभालइ १२.२ गु. संभाळे
संवच्छर ५.४३ संवत्सर
सखर २४.४ (?)
सखाइय १४.१४ सहाय
सचउर ५.४८ सत्यपुर, गु. साचोर
सद्ध ३६.१४ श्राद्ध
सधार ५.४० साहाय्य, गु. सधियारो
सधारण ९.१६.१९ संधारण, साहाय्य
सप्फुर १३.४६ स्फुर्ति-सहित
समग्गलय ५.१८ २४.४ समग्र, सहित
समल ६.५ (?)
समसरिस २४.१५ समसदृश
समहर १२.२९, समहरि ३०.१,४ संग्राम
सम्माण्- ५.३३ उपभोगे
सयर ११.१३ शरीर
सयाणि ११.४, सियाणिय ६.७ [सं॰ सज्ञान, प्रा. सजाण] गु. शाणी, हिं. सियानी
सरवण २३.२ श्रवण
सराविय ८.७,८ श्राविका
सरीखउ १.९५ सदृक्षः, गु. सरीखो, सरखो
सलवल्- १२.१९ गु. सळवळवुं
सलह्- ७.१६,३५ श्लाघने हिं. [तुल० सराहना]
सलूणी २२.१६ सलावण्या, गु. सलूणी, हिं. सलोनी
सवडि २४.८ गु. सोड
सवलह्- २४.६ विलेपने
ससिहर १०.५८ शशधर, गु. शशियर
ससुरउ ५.२९ श्वशुरः, गु. ससरो
सहजिगपुर ५.५२ गु. सेजकपर
सहार २४.१० सहकार
साइणि २८.२६ शाकिनी
सालि (स्त्री.) ५.१० साक्ष्य, गु. साख (स्त्री.)
साग ४.१९ स्वर्ग
साज्- २२.७ सज्जीकरणे
साद ५.८ प्रत्युत्तर-शब्द, गु. साद
साध २८.७ श्राद्ध
सानिधि ७.४१ [सं.सान्निध्य] साहाय्य
सारा ५.३० साहाय्य, गु. सार
सासुतउ ४०.२ शाश्वतः
सासुरय २.१.१९ श्वशुरगृह, गु. सासरुं
सासुव ५.२९,२८.९,२० श्वश्रू, गु. सासु
साह्- २२.९ ग्रहणे
साहार १४.३ सहायक
सिंहार २९.१८ संहार
सिणगार ५.२२,२३.२७,३१.३, सणगार ५.४२ शृङ्गार, गु. शणगार
सिय ५.५३ सित, शुक्ल
सिरिमा ७.६ (?)
सिविय १३.३५ शिबिका
सिहण ३५.२ स्तन
सीझ्- १०.६२ सिद्धौ
सीय ५-३६ सीता
सुंआल १४.२३ सुकुमार, गु. सुंवाळो
सुक्खासण २.३.३३, सुखासण ५.३१ सुखासन, शिबिका
सुणहउं ३८. ४९, ५२ श्वान
सुतहार ७.३१ सूत्रधार, शिल्पी (तुल० गु. सुथार)
सुद्धि २.३.१८,२३.१८ शुद्धि, वृत्त, वर्ता, गु. सूध
सुपच्चल १३.१३ सुसमर्थ
सुरहिय २१.६ सुरभित
सुरिताण ७.१२ [फा.सुलतान] गु. सुलतान
सुहाली २३.२४ सुकुमारिका, गु. सुंवाळी
सूझ्- २०.१५ शुद्धौ (तुल० गु. सूझतुं)
सूरिम १२.३ शौर्य
सूहवि २७.८ सुधवा
सेत २७.२.६ श्वेत
सेत्तुंजय ४०.१२, सेत्तञ्जउ ५.३८,

'दंगडु' (रचना क्रमांक २९) के पाठान्तर

मुद्रित हो जाने के पश्चात् इस रचना की अन्य एक प्रति की सूचना मिली। ला. द. भारतीय संस्कृति विद्याभवन के पुण्यविजयजी संग्रह की प्रति क्रमांक ८६०१ के पत्र १८४–१८६ पर यह रचना दी गई है। उसमें कुल पद्य-संख्या ७२ है। अधिक पाठ एवं पाठान्तर नीचे दीए गए हैं। १.१. जाणियइ. १.३. दंगडइ. १.४. वसिसि. २.१. आलवणु. २.२ संजमु. २.४. छिज्जइ. २. के बाद नीचे का दोहा अधिक है:—

जे जिणसासणि लीणमणु , अणुदिणु दट्ठु(? ढु) संमत्तु ।
तिणि सिउं किज्जइ मित्तडी सिज्झइ जेण परत्तु ॥२

३.१. सुपत्ति, दीधउं. ३.२. नियमेण ३.३. नमिउ, तहणम्मत्थो. ३.४. जम्मु. ४.१. निसंबलउ, ६.१. उच्छींनउं, लब्भिसिइ ६.२. तहिं. ६.३ काई उछिट्ठह चालीयइ. ७.१. इह अप्पणां. ७.२. आगलि, ठाणिया. ७.४. वेसज्जु. ८. २. लेउ. ८.३. तुट्टइ. ८ ४. घसेउ. ९. यह दोहा क्रमांक २८ के बाद दिया गया है. ९.१. गिउं कडेवरु चेईहरि. ९.२. मणु मिल्हेविणु. ९.४. रे जीय सूनी सट्टि. १०.१ गइ १०.२. काइं. १०.३. तहिं आहुडिउ, १०.४. दढगंठिहिं. ११.४. तुस लेणु. १२.१. दिट्ठी माइ. १२.२. किम न. १३.१ गहिल्लडीय. १३.२. जिणवर नामी कुट्टडीय. १६.१. मा रूसउ मा. १६.४. दुलहु. १८.३. हल्लोहल्लइ जीवडइ. १९.२. घेउ. १९.३ तं तेहइ. १९.४ सुम°. २०.३. जीवंतउ. २०.४. मूयइ सु मंगलु होइ. २० के बाद नीचे का दोहा अधिक है:—

धम्मि न वेच्चइ रूयडइ मीठउ ग्रासु न खाइ ।
राउलि चोरि पलेवणइ धण पेषंतां जाइ ॥

२१.१ जमह. २१.२. राधउं पक्खेलाहं. २१.३ हुंतउं जेहिं. २१.४. छारछचकउं. २२.१ कुल्लरि हुउं वलहरणु. २२.२ हूउं. २२.३. भज्जिसिइ. २३.१ बंधइ. २३.४. संजमु. २४.१. तउं. २४.२. तां. २४.३ कुडुंबउं खाइसिइ. २४.४ माथइ पडिसिइ. २५.४ मरिउ २६. २ झामलि. २६.३ जीविहिं धम्मु न संचीयउं. २६.४. कीय. २७.१. अप्पउं. २७.२. विवहारु. २७.३. देउलि ट्ठिप्पहं दिन्हिसइं. २७.४. गाऊ साहारु. २८.१ कड़ेवरु इह. २८.२. मइं हुंतइं करि धम्मु. २८.३. तउं रयणनिहि. २८ के

बाद क्रमांक ९ वाला दोहा है । इसके बाद नीचे के पद्य अधिक हैं :—

दिउ दियावउ दया करउ दिंतु म वारउ कोइ ।
एउ परत्तह संबलउं विरलउ जाणइ कोइ ।
संपय संपय ताहं परि जि करइं ताहरी सेव ।
आवई आवइ तांह परि जे पइ नमइं न देव ॥३२
अद्धोखंडां तप किया हीयडा अन्नह जम्मि ।
सुक्कइ सरि सेवाल जिम मुया मणोरह तिम्म ॥३३
एक्कह भवि अवत्थ-सइं पावइ बहु भमाडइ ।
जिम नच्चावइ एं मचिहिं इह जीउ तिम नच्चेउ ॥३४
जहिं धरि अंगणि चेईहरि ऊभा मुनिवर बारि ।
तीह दिणि दिणि चंदणउं अंधारउं न कयाइं ॥३५
अंधारउं धम्मेण विणु पसूयहं बप्पडलांह !
जांह न दीवउ गुरुवयणु उम्मीलणु नयणांह ॥३६
दिवसि चउत्थइ पंचमइ जहिं धरि साहु न इंति ।
तं धरु रंन्नह समसरिसु पिंडु मृगा इ भरंति ॥३७
उद्धरि जिणवर-वर-भवणु मुणिवर जे दिज्जइ दाणु ।
परतह लिज्जइ संबलउं तारिज्जइ अप्पाणु ॥३८
जिणवर-वयण-सिलाईयइ जांह न विद्धा कन्न ।
मांणुस-वेसिइंहिं गोरूयहं तं तह वुद्धि न सन्न ॥३९
पर करि हियडा मनु करिहि जिण-वंदणउं न देइ ।
कलिज्जमि मोहण-विल्लडीय तह लग्गाइ घराइं ॥४०
—आयइ रोसडइ जे अवहेरि करंति ।
ते ऊपज्जइ मणूय-भवे जणह पियारा हुंति ॥४१
लग्गइ कोहि पलेवणइ डज्झइ गुण-रयणाइं ।
उवसमि जलि जि न उल्हवइ ति सहइं दुक्ख-सयाइं ॥४२
जीव वहंतां नरइ गइ अवहंतां पुण सग्गि ।
दुन्नि निहालिय मग्गडा जहिं भावइ तहिं लग्गि ॥४३
धन्न-विहूणा धम्म करि धम्मीण इं धनु होइ ।
धणु चिंततउ जउ मरइ बिहुं एक्को वि न होइ ॥४४

जं अच्छइ के दीहडा तं घणु मीठउं रंधि ।
कल्लि जि दिट्ठा एक्कि मइं जंता चिहुर बंधि ॥४५

घणु घर-मज्झे छंडिउं परिअणु मुक्क मसाणि ।
जीविहिं सरिसा दुन्नि गय नहि पच्छिलइ वसाणि ॥४६

धम्मु न संचिउ तपु न कीउ नमिउ न जिणवर-देउ ।
जीव जु हींडइ दुत्थियउ तहं फुल्लहं फलु एउ ॥४७

दानु सीलु तपु भावना एह तरंडउ जांहं ।
नवकारिहिं वउलावणउं सिद्धि घरंगणि तांहं ॥४८

अइ-सीला वि न रुच्चई य साकर पित्त-वसेण ।
तह जिण-धम्मु न रुच्चई य जीवहं कम्म-वसेण ॥४९

हत्थिहिं किज्जइ कम्मडउं मणि झाइज्जइ देउ ।
अइसउ पहु सेवंतयहं अंगि न लग्गइ खेउ ॥५०

संसारड[इ] भयामणइ आस कि बंधण जाइ ।
सुप्पइ अन्न मणोरडइ पुण अन्नेहि विहाइ ॥५१

जीवा किं विलवेसि तुं जस्स(?) छम्भिहिं सिउं वाणि ।
अप्पउं पोसइ पर दहइ करइ परत्तह हाणि ॥५२

जिम कम्मह तिम धम्मह वि जइ जीउ तत्ति करेउ ।
तउ नहु अंधउ वाउ जिम डालिहिं डालि भमेउ ॥५३

जिम घर-कारणि निसि-दिवसु इह जीउ सुप्पहि लग्गु ।
तिम जइ धम्मह दुइ घडीय तउ पामइ सिउ सग्गु ॥५४

मह घरु मह पुरु मह सयणु ए मह-महउ निवारि ।
जीव करंतउ मह-महइ पुण पडिसि[इ] संसारि ॥५५

गुड्डा-नमणिहिं कमणु गुणु हीउं कुसुद्धउं जांह ।
लुद्धा बहूयइ रन्न-मइं झाडंतरि हरिणाइं(? हं) ॥५६

तिल दहइ(? हि) जव दहइ(? हि) सप्पि दहि तोइ न तप्पइ अग्गि ।
जिणि पंचिंदिय वसि कियं तेहि वसेवउ सग्गि ॥५७

जिण-वंदणु वर-गुरु-विणउ तवु संज[मु] उवयारु ।
जं किज्जइ खण-भंगुरह देहह इत्तिउ सारु ॥५८

संसारडइ भमंतड[इं] लद्धां वे रयणाइं ।

जिणवर-सामीउ साहु गुरु चिंतामणि-तुल्लाइं ॥५९
तिट्ठु करंत न वारीयइ जइ नवि संसउ होइ ।
लोइ सुणिज्जइ वरिस-सउ विरलउ जीवइ कोइ ॥६०
तत्ति पिराई करंतह जेण भरिज्जइ भंडु ।
तउ वरि लिज्जइ जिणवयणु जिम संसार तरंडु ॥६१
बीहिज्जइ पाइक्कडां दूरह आवियडांहं ।
कम्मह कह वि न छुट्टियइ अंगह उट्टि चडांह ॥६२
रे हीयडा कु-मित्त तुं गुणिहिं न लीणउ जाइ ।
संझह भरीउं भरणु जिम पसरिवि दाणउं(?) थाइ ॥६३
नित्तु निवल्ली त्रेवडीय ऊगिइ ऊगिइ सूरि ।
अप्पा मरणु न जाणीयइ किं ढूकडउं कि दूरि ॥६४
ऊपरवाडइं आविसिइ तणउ कियंतह हत्थु ।
कहि अवेलां वाहिसिइ नवि संबलु नवि सत्थु ॥६५
सिरि इक्केकउं पलीयउउं आविउं अग्गेवाणु ।
नीसरि जुव्वण-पाहुणा जे खंडेसिइ माणु ॥६६
गिउं जुव्वणु बंबलि करवि छडा पीयाणा देवि ।
जर थक्किय मत्थइ चडवि धवला गुड्डर देवि ॥६७
मोहु न मेल्हइ घर-तणउ जइ सिरि पलीया केस ।
वलि वलि जिण-धम्मह तणा को देसिइ उवएस ॥६८

२९.१ हीयडा, मिरीय. २९.२ मणु पसरंतु. २९.३ त्रित्तिय पुज्जइ पंगुरणं.
२९.४ तित्तियं पाय. इसके बाद नीचे के पद्य अधिक हैं:—

हीयडा जिणवरु वंदियइ समइ विरू[य]उ कालु ।
जिम मच्छह तिम माणसहं पडइ अचिंतउं जालु ॥७०
वीर विशाले लोयणे महु एतलुं करिज्ज ।
बारह नव पंचह ऊयरि कम्मर(?)हेउ म निज्ज ॥७१
एहु जाणेविणु भवियजणु जं कोइ माणु करिज्ज ।
संसारडउ लीलइं तरीय सिद्धि-पुरी पा(?पा)मिज्ज ॥७२

३० नहीं है । पुष्पिकाः इति दुंगडउं समाप्तः ।

शुद्धिपत्र

पृष्ठ	पंक्ति	
१२	४	संथव
१४	७	निय-तणू-वलिण
१९	१०	घरि वइठा ही फलु
२२	१७	दुक्खियइँ
२२	२४	परिपालियइ
२५	२८	खीण-सर
२९	२६	परिघलु
३३	शीर्षक	आवूरास
३५	५	मुणिवर
४४	१२	चडिउ
४५	२४	ज्ञो ऊलटि
४६	११	रयणीयरु
५४	१७	तह
५५	२१	तिम जेम इक्क
५५	२२	बंधु—जण
६४	५	तणु
६७	३	नहु बुल्लेई भद्दा
८२	९	त्रेवीसमु
८५	२०	काछइ
८९	शीर्षक	२२
९५	शीर्षक	२३. नेमिनाथ-
९९	२६	वाइ
१०२	४	अपूरव वात
१०३	५	सामलउ, वर
१०३	६	वर इन्द्रं
१०४	५	च्यारि जे थंभ,
१०४	६	रूपि
१०४	८	तोइ
१०४	२२	जाणीउ ॥६
१०५	९	तिछ, आद-नरराउ
१०९	८	आणहि
११०	३	स्फूर्जदू[र्जं]श्च
११०	९	पमोऊ
११०	११	तिहुयण
११०	२४	अवरे अच्छइ
११२	२	गूडि उछालहि
११२	२०	हुई हारि
११७	२१	ढक्क बुक्क
१२०	२५	रोमंच[हिं] कंचुइय-तणु
१२३	५	खुट्टिसइ
१२४	७	(इसके बाद एक पंक्ति लुप्त हो गई है।)
१२५	५	दहेइ
१२६	२३	चाउ
१२९	५	प्राणहँ
१२९	१४	वूठा
१३१	१४	सुमंगल
१३१	१७	छज्जु

LALBHAI DALPATBHAI BHARATIYA SANSKRITI VIDYA MANDIR

L.D. SERIES

S. NO.	*Name of Publications*	*Price Rs.*
*1.	Śivāditya's Saptapadārthī, with a Commentary by Jinavardhana Sūri. Editor : Dr. J.S. Jetly. (Publication year 1963)	4/-
2.	Catalogue of Sanskrit and Prakrit Manuscripts : Munirāja Shri Puṇyavijayaji's Collection. Pt. I. Compiler : Munirāja Shri Puṇyavijayaji. Editor : Pt. Ambalal P. Shah. (1963)	50/-
3.	Vinayacandra's Kāvyaśikṣā. Editor : Dr. H.G. Shastri (1964)	10/-
4.	Haribhadrasūri's Yogaśataka, with auto-commentary, along with his Brahmasiddhāntasamuccaya. Editor : Munirāja Shri Puṇyavijayaji. (1965)	5/-
5.	Catalogue of Sanskrit and Prakrit Manuscripts, Munirāja Shri Puṇyavijayaji's Collection, pt. II. Compiler : Munirāja Shri Puṇyavijayaji. Editor : Pt. A.P. Shah. (1965)	40/-
6.	Ratnaprabhasūri's Ratnākarāvatārikā, part I. Editor : Pt. Dalsukh Malvania. (1965)	8/-
*7.	Jayadeva's Gītagovinda, with king Mānāṅka's Commentary Editor : Dr. V. M. Kulkarni. (1965)	8/-
8.	Kavi Lāvaṇyasamaya's Nemiraṅgaratnākarachanda. Editor : Dr. S. Jesalpura. (1965)	6/-
9.	The Nāṭyadarpaṇa of Rāmacandra and Guṇacandra : A Critical study : By Dr. K.H. Trivedi. (1966)	30/-
*10.	Ācārya Jinabhadra's Viśeṣāvaśyakabhāṣya, with Auto-commentary, pt. I. Editor : Pt. Dalsukh Malvania. (1966)	15/-
11.	Akalaṅka's Criticism of Dharmakīrti's Philosophy : A study by Dr. Nagin J. Shah. (1966)	30/-
12.	Jinamāṇikyagaṇi's Ratnākarāvatārikādyaślokaśatārthī, Editor : Pt. Bechardas J. Doshi. (1967)	8/-
13.	Ācārya Malayagiri's Śabdānuśāsana. Editor : Pt. Bechardas J. Doshi (1967)	30/-
14.	Ācārya Jinabhadra's Viśeṣāvaśyakabhāṣya, with Auto-commentary. Pt. II. Editor Pt. Dalsukh Malvania. (1968)	20/-
15.	Catalogue of Sanskrit and Prakrit Manuscripts : Munirāja Shri Puṇyavijayaji's Collection. Pt. III. Compiler : Munirāja Shri Puṇyavijayaji. Editor : Pt. A.P. Shah. (1968)	30/-

* out of print

16.	Ratnaprabhasūri's Ratnākarāvatārikā, pt. II. Editor : Pt. Dalsukh Malvania. (1968)	10/-
17.	Kalpalatāviveka (by an anonymous writer). Editor : Dr. Murari Lal Nagar and Pt. Harishankar Shastry. (1968)	32/-
18.	Āc. Hemacandra's Nighaṇṭuśeṣa, with a commentary of Srivallabhagaṇi. Editor : Munirāja Shri Punyavijayji. (1968)	30/-
19.	The Yogabindu of Ācārya Haribhadrasūri with an English Translation, Notes and Introduction by Dr. K.K. Dixit. (1968)	10/-
20.	Catalogue of Sanskrit and Prakrit Manuscripts : Shri Āc. Devasūri's Collection and Āc. Kṣāntisūri's Collection : Part IV. Compiler : Munirāja Shri Punyavijayji, Editor : Pt. A.P. Shah. (1968)	40/-
21.	Ācārya Jinabhadra's Viśeṣāvaśyakabhāṣya, with Commentary, pt. III. Editor : Pt. Dalsukh Malvania and Pt. Bechardas Doshi (1968)	21/-
22.	The Śāstravārtāsamuccaya of Ācārya Haribhadrasūri with Hindi Translation, Notes and Introduction by Dr. K.K. Dixit. (1969)	20/-
23.	Pallipāla Dhanapāla's Tilakmañjarīsāra, Editor : Prof. N. M. Kansara. (1969)	12/-
24.	Ratnaprabhasūri's Ratnākarāvatārikā pt. III, Editor : Pt. Dalsukh Malvania. (1969)	8/-
25.	Āc. Haribhadra's Nemināhacariu Pt. 1 : Editors : M. C. Modi and Dr. H. C. Bhayani. (1970)	40/-
26.	A Critical Study of Mahāpurāṇa of Puṣpadanta, (A Critical Study of the Deśya and Rare words from Puṣpadanta's Mahāpurāṇa and His other Apabhraṁśa works). By Dr. Smt. Ratna Shriyan. (1970)	30/-
27.	Haribhadra's Yogadṛṣṭisamuccaya with English translation, Notes, Introduction by Dr. K. K. Dixit. (1970)	8/-
28.	Dictionary of Prakrit Proper Names, Part I by Dr. M. L. Mehta and Dr. K. R. Chandra, (1970)	32/-
29.	Pramāṇavārtikabhāṣya Kārikārdhapādasūci. Compiled by Pt. Rupendrakumar. (1970)	8/-
30.	Prakrit Jaina Kathā Sāhitya by Dr. J.C. Jaina, (1971)	10/-
31.	Jaina Ontology, By Dr. K. K. Dixit (1971)	30/-
32.	The Philosophy of Sri Svāminārāyaṇa by Dr. J. A. Yajnik.	30/-
33.	Āc. Haribhadra's Nemināhacariu Pt. II : Editors : Shri M. C. Modi and Dr. H. C. Bhayani.	40/-
34.	Up. Harṣavardhana's Adhyātmabindu : Editors : Muni Shri Mitranandavijayaji and Dr. Nagin J. Shah.	6/-
35.	Cakradhara's Nyāyamañjarīgranthibhaṅga : Editor Dr. Nagin J. Shah.	36/-

36. Catalogue of Mss. Jesalmer collection : Compiler : Munirāja Shri Punyavijayaji. 40/-
37. Dictionary of Prakrit Proper Names Pt. II. by Dr. M. L. Mehta and Dr. K. R. Chandra. 35/-
38. Karma and Rebirth by Dr. T. G. Kalghatagi. 6/-
39. Jinabhadrasūri's Madanarekhā Ākhyāyikā : Editor Pt. Bechardasji Doshi. 25/-
40. Prācina Gurjara Kāvya Sañcaya : Editor : Dr. H. C. Bhayani and Shri Agarchand Nahata.
41. Jaina Philosophical Tracts : Editor Dr. Nagin J. Shah. 16/-
42. Saṇatukumāracariya Editors Prof. H. C. Bhayani and Prof. M. C. Modi 8/-
43. The Jaina Concept of Omniscience by Dr. Ram Jee Singh 30/-
44. Pt. Sukhalalji's Commentary on the Tattvārthasūtra Translated into English by Dr. K. K. Dixit. 32/-
45. Isibhāsiyāiṁ, Editor : Dr. Schubring 16/-
46. Jinadevasūri's Haimanāmamālāsiloñcha, with a Commentary by Śrivallabha. Editor : Mahopadhyaya Vinayasagara. 16/-